वर्ष 10 अंक 01 माह अप्रैल-मई (संयुक्तांक) ₹30

(राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका)

युवक

स्थापित : सन् 1950

भारत की
आन बान शान
राणा और प्रताप
09

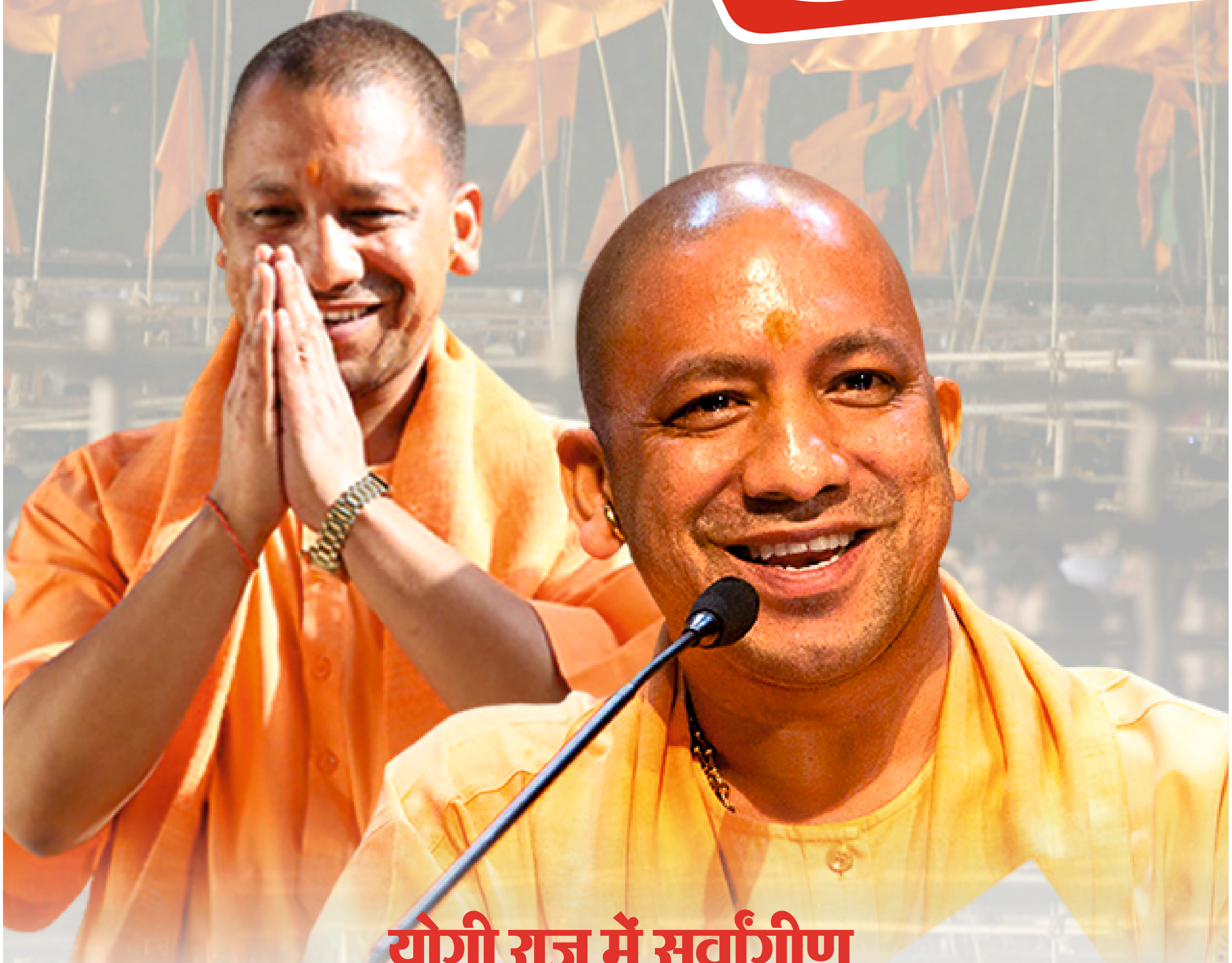

योगी राज में सर्वांगीण

विकास के पथ पर

तेजी से अग्रसित होता प्रदेश

आर.एन.आई. संख्या - 2166/2016 | डाक पंजीयन संख्या आगरा-139/2025-27

Make your life more
Comfortable
BEBER
BATH FITTINGS
Make way for iconic luxury....
Mathura
Mobile +91-9412280225

युवक

वर्ष - 10, अंक - 1, अप्रैल-मई 2025

संस्थापक सम्पादक
स्व. श्री प्रेमदत्त पालीवाल

संरक्षक
स्वामी महेशानंद सरस्वती
आनंद कुटीर, मोतीझील, श्रीधाम वृंदावन

सम्पादक
डॉ. वंदना पालीवाल*

प्रबंध संपादक
देवेंद्र दत्त पालीवाल

कॉन्सेप्ट एडिटर
अजय शर्मा

कार्यकारी सम्पादक
इंजी. ज्ञानेंद्र गौतम

साहित्य संस्कृति संपादक
आदर्श नंदन गुप्त

सलाहकार संपादक
डॉ. महेश चंद्र धाकड़

वाइस प्रेसीडेंट
(सर्कुलेशन/एडवर्टाइजिंग)
बृजेश शर्मा

सीनियर ग्राफिक डिजायनर
रानू शर्मा

लीगल एडवाइजर
एड. विकास गौतम

विजुअलाइजर
मनोज कुमार/सौरभ सिंह

युवक

ब्यूरो ऑफिस
दिल्ली **विनय शर्मा, फोन: 09555220374**

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक **श्रीमती सुधारानी पालीवाल** द्वारा युवक प्रेस जॉस बंगला नं. 4, जीवनी मंडी, **आगरा 282004 (उ.प्र.)** से मुद्रित व प्रकाशित
सम्पादक- **डॉ. वंदना पालीवाल** * पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी,
R.N.I. No.- 2166/2016
सब्सक्रिप्शन भारत में न्यूनतम एक वर्ष के लिए (12 अंक) शुल्क 340+60 (पोस्टल चार्ज)= **रुपये** 400
कृपया डीडी (आगरा में)
YUVAK MASIK PATRIKA के नाम देय हो।
GSTIN NO. 09AGNPP9720D1Z2
DAVP CODE-132863

उपरोक्त अंक में प्रकाशित रचनाओं के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। पत्रिका में छपे किसी भी लेख के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न रचनाओं के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री/विज्ञापन आदि से संपादक/प्रकाशक/मुद्रक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। उपरोक्त से संबंधित किसी भी प्रकार की कार्यवाही एवं पूछताछ की अवधि से तीन माह के अंदर की जा सकती है। इसके बाद किसी भी प्रकार की कार्यवाही, पूछताछ के लिए हम बाध्य नहीं हैं। प्रेषित स्पष्टीकरण प्रकाशित किया जाएगा। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र सिर्फ आगरा होगा।

संपादकीय कार्यालय

युवक (हिन्दी मासिक)

बंगला नं. 4, जीवनी मंडी, आगरा-282004, उत्तर प्रदेश

पत्रिका से जुड़ी किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए
सम्पर्क सूत्र **+91 9415407766**

लेख अथवा रचनाएं हमें ईमेल करें
yuvakmagazine@gmail.com
Website - www.progressiveyuvak.com

जरूर पढ़ें
स्वास्थ्य सुविधाएं

16 | **भारत के सशक्त स्वास्थ्य मोर्चे का...**

मोदी सरकार अनेक क्षेत्रों में अनूठा एवं विलक्षण करते हुए देश से न केवल गरीबी का कलंक मिटाया है बल्कि अनेक समस्याओं से मुक्ति भी दिलायी है। स्वास्थ्य मोर्चे पर भारत की उपलब्धियों आश्चर्यकारी रही है, कोरोना-काल में भारत ने दुनिया को स्वास्थ्य-सहायता पहुंचायी है।

विशेष
यूपी की राजनीति

20 | **गौशाला और इत्र पार्क पर छिड़ी सियासी जंग**

समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव ने हाल ही में गौशालाओं को लेकर एक विवादास्पद बयान दिया, जिसमें उन्होंने भारतीय जनता पार्टी पर निशाना साधते हुए कहा कि बीजेपी को दुर्गंध पसंद है, इसलिए वे गौशालाएं बना रहे हैं...

जरूर पढ़ें
राजनीति

32 | **बिहार की राजनीति में छोटी-छोटी पार्टियां...**

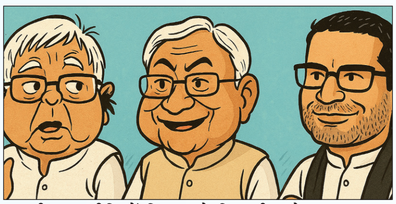

भारतीय राजनीति में बिहार को सियासी प्रयोगशाला समझा जाता है। यहां पर कई ऐसे दिग्गज राजनेता हुए, जिसे चुनावी मौसम विज्ञानी तक करार दिया गया। इनमें पूर्व केंद्रीय मंत्री स्व. रामविलास पासवान और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का नाम अग्रगण्य है। चूंकि बिहार विधानसभा 2025 के लिए अक्टूबर-नवम्बर में चुनावी होने हैं, इसलिए यह महत्वपूर्ण चुनावी साल भी है, जिसके दृष्टिगत सभी राजनीतिक दल अपने अपने समीकरण बनाने में जुट गए हैं।

विशेष
राजनीति

24 | **योगी राज में सर्वांगीण विकास के पथ पर...**

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 25 मार्च 2025 को अपने दूसरे कार्यकाल के तीन वर्ष पूरे कर लिए हैं। वहीं योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में लगातार आठ वर्ष तक कार्य करने का एक नया कीर्तिमान बना दिया हैं। सख्त, ईमानदार व एक विजनरी प्रशासक वाली कार्यशैली के दम पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ प्रदेश व देश के साथ-साथ पार्टी में...

जरूर पढ़ें
इंटरव्यू

14 | **क्वालिटी कंस्ट्रक्शंस से ही है अर्थकॉन...**

रियल एस्टेट सेक्टर में बदलाव की निरंतरता बनी हुई है। ऐसे समय में इस एस्टेट के विकास को लेकर अनेक सवाल और उम्मीदें हैं, युवक पत्रिका ने अर्थकॉन कंस्ट्रक्शंस प्राइवेट लिमिटेड के चेयरमैन शादाब खान से एक खास साक्षात्कार किया। इस दौरान उन्होंने न...

40	कहानी
50	कविता

सम्पादकीय

शक्ति पूजा का पर्व है नवरात्रि

नवरात्रि देवी दुर्गा के नौ अवतारों या स्वरूपों की पूजा का प्रसिद्ध त्योहार है। जिसे शक्ति या देवी के रूप में भी जाना जाता है। यह त्योहार एक बार वसंत ऋतु के दौरान चैत्र नवरात्रि और शरद ऋतु के दौरान शरद नवरात्रि के रूप में मनाया जाता है। शरद नवरात्रि अश्विन के महीने के दौरान मनाई जाती है जो आमतौर पर सितंबर या अक्टूबर में आती है। वहीं, चैत्र नवरात्रि हिन्दू कैलेंडर के चैत्र महीने के दौरान मनाई जाती है। चैत्र नवरात्रि आमतौर पर मार्च या अप्रैल महीने में मनाई जाती है। नवरात्रि एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ होता है नौ रातें। इन नौ रातों और दस दिनों के दौरान शक्ति-देवी के नौ रूपों की पूजा की जाती है। दसवां दिन दशहरा के नाम से प्रसिद्ध है। नवरात्रि वर्ष में चार बार आता है। चैत्र, आषाढ़, अश्विन, पौष प्रतिपदा से नवमी तक मनाया जाता है। नवरात्रि के नौ रातों में तीन देवियों महालक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा होती है जिन्हें नवदुर्गा कहते हैं। दुर्गा का मतलब जीवन के दुख को हटाने वाली होता है। नवरात्रि एक प्रमुख त्योहार है जिसे पूरे भारत में पूरे उत्साह के साथ मनाया जाता है। नवरात्रि का त्यौहार असत्य पर सत्य की जीत को दर्शाता है। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार नवरात्रि साल में दो बार मनाया जाता है। हिंदी महीनों के मुताबिक पहला नवरात्रि चैत्र महीने में मनाया जाता है और दूसरी बार अश्विन महीने में मनाया जाता है। नवरात्रि नौ दिनों तक निरंतर चलता है जिसमे देवी माँ के अलग अलग स्वरूपों की लोग भक्ति और निष्ठा के साथ पूजा करते हैं। भारत में नवरात्रि अलग-अलग राज्यों में विभिन्न तरीकों और विधियों के संग मनाई जाती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इन्हीं नौ दिनों में मां दुर्गा धरती पर आती है। उनके आने की खुशी में इन दिनों को दुर्गा उत्सव के तौर पर देशभर में धूमधाम से मनाया जाता है। नवरात्रि पर्व के नौ दिनों के दौरान आदिशक्ति जगदम्बा के नौ विभिन्न रूपों की आराधना की जाती है। ये नौ दिन वर्ष के सर्वाधिक पवित्र दिवस माने गए हैं। इन नौ दिनों का भारतीय धर्म एवं दर्शन में ऐतिहासिक महत्व है और इन्हीं दिनों में बहुत सी दिव्य घटनाओं के घटने की जानकारी हिन्दू पौराणिक ग्रन्थों में मिलती है। माता के इन नौ रूपों को नवदुर्गा के नाम से भी जाना जाता है जो इस प्रकार हैं -शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघन्टा, कूष्माण्डा, स्कन्द माता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी और सिध्दिदात्री। नवरात्रि से हमें अधर्म पर धर्म और बुराई पर अच्छाई के जीत की सीख मिलती है। यह हमें बताती है कि इंसान अपने अंदर की मूलभूत अच्छाइयों से नकारात्मकता पर विजय प्राप्ती और स्वयं के अलौकिक स्वरूप से साक्षात्कार कैसे कर सकता है। भारतीय जन-जीवन में धर्म की महत्ता अपरम्पार है। यह भारत की गंगा-जमुना तहजीब का ही नतीजा है कि सब धर्मों को मानने वाले लोग अपने-अपने धर्म को मानते हुए इस देश में भाईचारे की भावना के साथ सदियों से एक साथ रहते चले आ रहे हैं। यही कारण है कि पूरे विश्व में भारत की धर्म व संस्कृति सर्वोतम मानी गयी है। विभिन्न धर्मों के साथ जुड़े कई पर्व भी है जिसे भारत के कोने कोने में श्रध्दा, भक्ति और धूमधाम से मनाया जाता है। उन्हीं में से एक है नवरात्रि। नवरात्रि के पहले दिन बालिकाओं की पूजा की जाती है। दूसरे दिन युवती की पूजा की जाती है। तीसरे दिन जो महिला परिपक्वता के चरण में पहुंच गयी है, उसकि पूजा की जाती है। नवरात्रि के चौथे, पांचवें और छठे दिन लक्ष्मी-समृद्धि और शांति की देवी की पूजा करने के लिए समर्पित है। आठवें दिन एक यज्ञ किया जाता है। नौवा दिन नवरात्रि समारोह का अंतिम दिन है। यह महानवमी के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन नौ लड़कियों की पूजा होती है। इन नौ लड़कियों को देवी दुर्गा के नौ रूपों का प्रतीक माना जाता है। लड़कियों का सम्मान तथा स्वागत करने के लिए उनके पैर धोए जाते हैं। पूजा के अंत में लड़कियों को उपहार के रूप में नए कपड़े, वस्तुयें, फल प्रदान किए जाते हैं। शक्ति की उपासना का पर्व शारदीय नवरात्र प्रतिपदा से नवमी तक निश्चित नौ तिथि, नौ नक्षत्र, नौ शक्तियों की नवधा भक्ति के साथ सनातन काल से मनाया जा रहा है। आदिशक्ति के हर रूप की नवरात्र के नौ दिनों में क्रमशः अलग-अलग पूजा की जाती है। मां दुर्गा की नौवीं शक्ति का नाम सिद्धिदात्री है। ये सभी प्रकार की सिद्धियां देने वाली हैं। इनका वाहन सिंह है और कमल पुष्प पर ही आसीन होती हैं। नवरात्रि के नौवें दिन इनकी उपासना की जाती है। इस पर्व से जुड़ी एक कथा के अनुसार देवी दुर्गा ने एक भैंस रूपी असुर अर्थात महिषासुर का वध किया था। पौराणिक कथाओं के अनुसार महिषासुर के एकाग्र ध्यान से बाध्य होकर देवताओं ने उसे अजय होने का वरदान दे दिया। उसको वरदान देने के बाद देवताओं को चिंता हुई कि वह अब अपनी शक्ति का गलत प्रयोग करेगा। महिषासुर ने अपने साम्राज्य का विस्तार स्वर्ग के द्वार तक कर दिया और उसके इस कृत्य को देख देवता विस्मय की स्थिति में आ गए। महिषासुर ने सूर्य, इन्द्र, अग्नि, वायु, चन्द्रमा, यम, वरुण और अन्य देवताओं के सभी अधिकार छीन लिए और स्वयं स्वर्गलोक का मालिक बन बैठा। देवताओं को महिषासुर के प्रकोप से पृथ्वी पर विचरण करना पड़ रहा था तब महिषासुर के इस दुस्साहस से क्रोधित होकर देवताओं ने देवी दुर्गा की रचना की। ऐसा माना जाता है कि देवी दुर्गा के निर्माण में सारे देवताओं का एक समान बल लगाया गया था। महिषासुर का नाश करने के लिए सभी देवताओं ने अपने अपने अस्त्र देवी दुर्गा को दिए थे और कहा जाता है कि इन देवताओं के सम्मिलित प्रयास से देवी दुर्गा और बलवान हो गईं थी। इन नौ दिन देवी-महिषासुर संग्राम हुआ और अन्ततः महिषासुर-वध कर महिषासुर मर्दिनी कहलायीं। नवदुर्गा और दस महाविद्याओं में काली ही प्रथम प्रमुख हैं। भगवान शिव की शक्तियों में उग्र और सौम्य, दो रूपों में अनेक रूप धारण करने वाली दशमहाविद्या अनंत सिद्धियां प्रदान करने में समर्थ हैं। दसवें स्थान पर कमला वैष्णवी शक्ति हैं, जो प्राकृतिक संपत्तियों की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी हैं। देवता, मानव, दानव सभी इनकी कृपा के बिना पंगु हैं, इसलिए आगम-निगम दोनों में इनकी उपासना समान रूप से वर्णित है। ■

> **नवरात्रि के दौरान उपवास करने से शरीर से विषाक्त पदार्थ निकल जाते हैं, जिससे शरीर स्वस्थ और निरोगी रहता है। नवरात्रि के दौरान ध्यान, योग और भक्ति करने से मन को शांति मिलती है, जिससे तनाव और चिंता कम होती है। नवरात्रि व्रत का मूल उद्देश्य है इंद्रियों का संयम और आध्यात्मिक शक्ति का संचय। वस्तुतः नवरात्र अंतःशुद्धि का महापर्व है। आज वातावरण में चारों तरफ विचारों का प्रदूषण है। ऐसी स्थिति में नवरात्र का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है।**

डॉ. वंदना पालीवाल

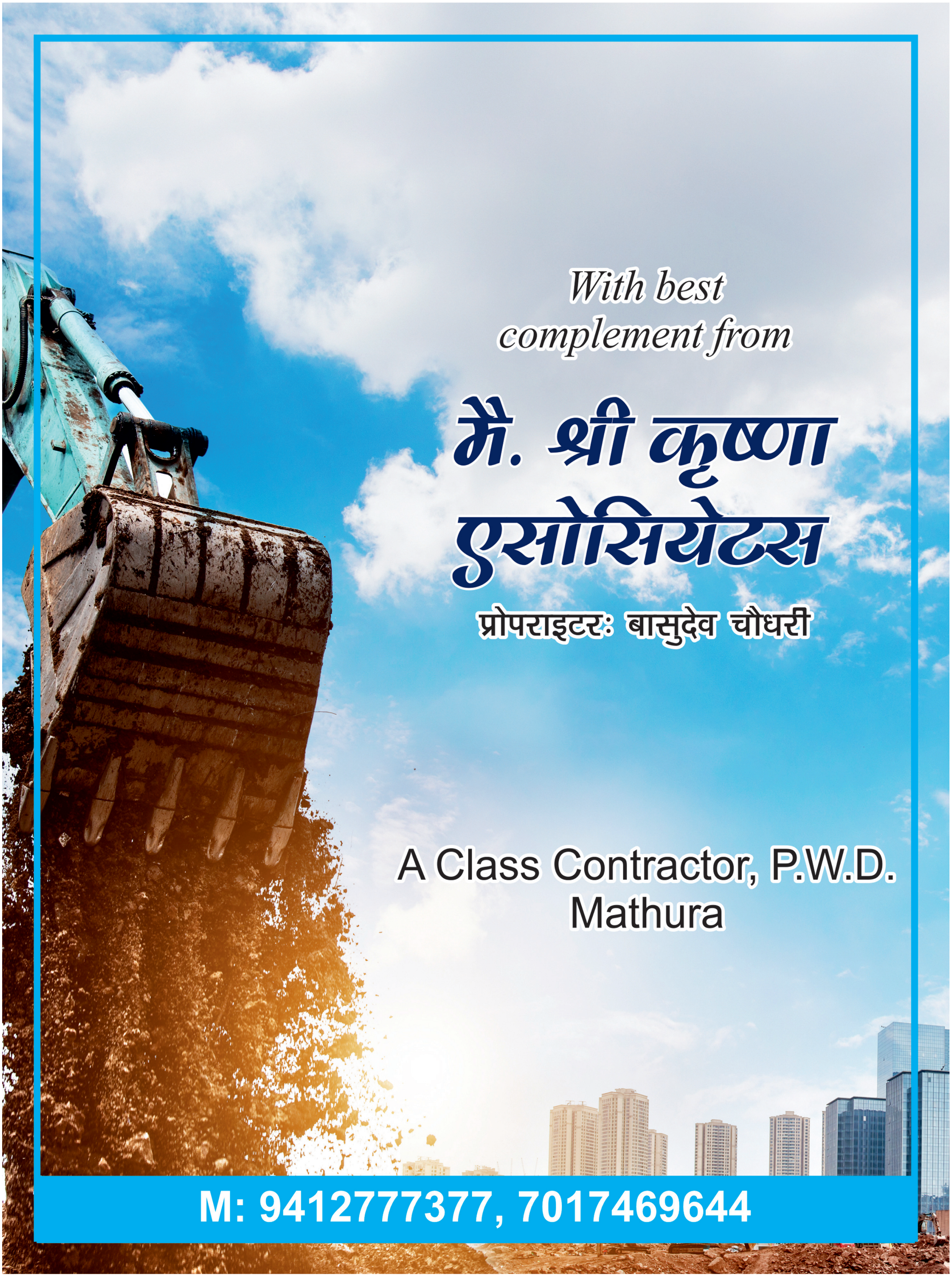
With best
complement from
मै. श्री कृष्णा
एसोसियेटस
प्रोपराइटरः बासुदेव चौधरी
A Class Contractor, P.W.D.
Mathura
M: 9412777377, 7017469644

श्री यमुना छठ पर विशेष

बहुत दियौ यमुना मईया नैं, अब यमुना मांगें सेवा...

डॉ.राजेश शर्मा

नमो-नमो जमुना महारानी।
निकट तेरे विहरैं पिय-प्यारी, वृन्दावन रजधानी।।
जे जन पान करत पय तेरौ, तिन त्रय ताप सिरानी।
टहल महल की मिलत निरंतर, कृपा करत ब्रजरानी।।......

आज यमुना प्रदूषण के संदर्भ में चिंतन और प्रयास की दृष्टि सराहनीय है। हमें इस दिशा में निष्ठा के साथ आगे बढना होगा। ब्रजवासियों की जीवनदायिनी यमुना की महिमा को अगर युगल सरकार श्यामा-श्याम की लीला भूमि पर समझना है तो उन साधकों के जीवन जगत को आत्मसात करना होगा। जिन्होंने मोक्षदायिनी यमुना को संस्कारों में जीया। संस्कृत में सुलभ यमुना महात्म्य विषयक साहित्य के साथ ही ब्रजभाषा में उपलब्ध लालित्यपूर्ण पदावलियों की समृद्ध श्रृंखला यमुना जी का सुजस गान करती हैं। यहाँ वल्लभकुल, निम्बार्क, गौड़ीय, राधाबल्लभ, हरिदासी, ललित एवं चरणदासी आदि परम्पराओं में यमुना जी पर केन्द्रित साहित्य प्रचुरता से सुलभ है। 17वीं सदी में वृन्दावन की पवित्र भूमि पर राधावल्लभ संप्रदाय के साधक दामोदर स्वामी जी ऐसी ही महा-विभूति थे। जिन्होंने स्व रहनि-सहनि में यमुना भक्ति को साकार किया। स्वामी जी के द्वारा ब्रजभाषा में रचित पदावलियाँ संस्थान में सुलभ विभिन्न पाण्डुलिपियों में विद्यमान हैं। इनके द्वारा सृजित यमुना पर केन्द्रित साहित्य जहाँ इन्हे उच्चकोटि के साधक के रूप में स्थापित करता है, वहीं इनके जीवनकाल में साक्षात् यमुना जी के द्वारा इन पर की गई कृपा इनकी यमुना भक्ति की गाथा कहती है। वृन्दावन में राधावल्लभ सम्प्रदाय के साधक दामोदर स्वामी जी का कीर्तिगान कालान्तर में यमुना भक्त के रूप में अधिक हुआ। जिसके मूल में इनके जीवनकाल में घटित यमुना भक्ति से अभिप्रेत एक महत्वपूर्ण प्रसंग रहा है।

स्वामी जी से सम्बन्धित इस प्रसंग की व्याप्ति इस साधक के लगभग 200 वर्ष बाद तक रचे गये हस्तलिखित ग्रंथों में श्रृंखलाबद्ध रूप से दिखती है। गौड़ीय संत भगवतमुदित जी की रचना रसिक अनन्यमाल में दामोदर स्वामी जी के प्रसंग के अन्तर्गत

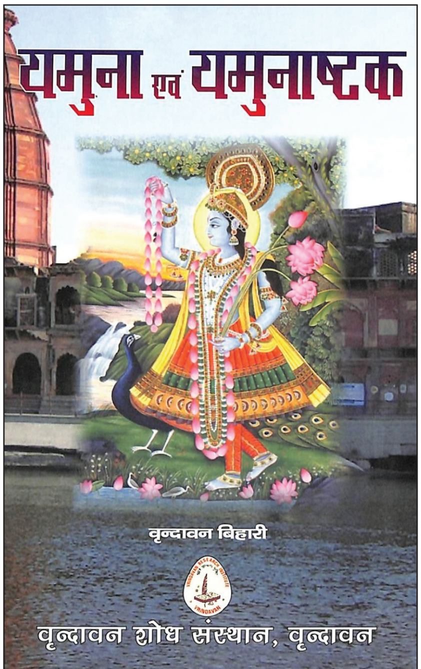

इसी क्रम में यमुना भक्त दामोदरस्वामी जी के जीवनवृत से जुड़े अनुद्घाटित संदर्भों को एक पटल पर लाकर प्रकाशित करने का कार्य वृन्दावन शोध संस्थान द्वारा इस उद्देश्य के साथ किया गया है कि ब्रजभाषा साहित्य और संस्कृतिप्रेमी इससे लाभान्वित हो सकें।

उल्लिखित है कि ये राधाबल्लभलाल जी की प्रसादी फूल माला प्रतिदिन यमुना को अर्पित करते थे तथा उनके पवित्र तट पर बैठकर युगल सरकार की लीलाओं का चिंतन करते-

श्री राधावल्लभ को सु प्रसाद।
तुलसी गंध-मलय मालादि।।
नित प्रति कालांदी कौ दैहिं।
बैठि भावना कर सुख लैहिं।।

एक बार ज्वर आने पर स्वामी जी दो दिनों तक यमुना दर्शन को न जा सके। इसी दौरान लोगों ने देखा कि अचानक यमुना का प्रवाह वृंदावन में अंदर की ओर बढ़ता ही जा रहा था। लोगों ने मकानों से सामान हटाना शुरू कर दिया। उसी समय भागमती नामक एक भक्त महिला जो वृंदावन वास करते हुए यहां भजन साधना में रत रहती थीं, को स्वप्न आया कि मैं भक्त दामोदर से मिलना चाहती हूं। उस महिला ने यह स्वप्न लोगों को बताया। तब दामोदर स्वामी ने स्वयं बाहर आकर नित्य की भांति यमुना स्तुति की। और कुछ ही देर में यमुना जी अपनी नित्य धार में प्रवाहित होने लगी। स्वामी जी के जीवन में घटित इस विस्मरणीय प्रसंग को कालांतर में अनेक भक्त एवं साहित्य साधकों ने अपनी-अपनी तरह से रेखांकित किया है। चाचा हित वृंदावनदास कृत रसिक अनन्य परचावली, गो. जतनलाल कृत रसिक अनन्य सार सहित कई पोथियों में इनकी यमुना भक्ति से जुड़े संदर्भ देखे जा सकते हैं। वृन्दावन के इतिहास पर प्रथमत: ग्रंथ रचना करने वाले गोपाल राय कृत धामानुरागावली में उल्लिखित है-

खोजा सुंदरदास पुरानौ, मंदिर नयौ बनायौ।
स्वामी दामोदर दासहिं ने जमुना दर्शन पायौ।।

संस्थान में संरक्षित यमुना से जुड़े संदर्भ

संस्थान संग्रह में श्री यमुना से जुड़े संदर्भ प्रचुरता से सुलभ हैं। वर्ष1990 में यहाँ से यमुना और यमुनाष्टक शीर्षक ग्रंथ प्रकाशित हुआ। जिसका द्वितीय संस्करण वर्ष2015 में निकला है। आचार्य श्री वृन्दावनबिहारी जी द्वारा सम्पादित इस ग्रंथ में श्री यमुना कवच, पटल, सहस्रनाम एंव अष्टकों आदि का सुन्दर वर्णन उपस्थित करने के साथ ही, यमुना महात्म्य से जुड़ीं अनेक विविधताओं को ग्रंथ में समाहित किया गया है। इसी क्रम में यमुना भक्त दामोदरस्वामी जी के जीवनवृत्त से जुड़े अनुद्घाटित संदर्भों को एक पटल पर लाकर प्रकाशित करने का कार्य वृन्दावन शोध संस्थान द्वारा इस उद्देश्य के साथ किया गया है कि ब्रजभाषा साहित्य और संस्कृतिप्रेमी इससे लाभान्वित हो सकें।

जय जय श्रीराधे, यमुना मईया की जै... ■

भारत की आन बान शान राणा और प्रताप!

डॉ. पंकज नगायच

अभी हाल ही में राज्यसभा में सांसद रामजी लाल सुमन ने एक ऐसा विवादित बयान दिया जिसने हिंदुस्तान की राजनीति में तूफान तो लाया ही सौहार्द, प्रेम, भाईचारे को भी दियासलाई लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। ये समझ से परे है कि तुष्टिकरण की राजनीति के वशीभूत कोई इतना कैसे डूब सकता है कि राष्ट्रीय नायकों को इतने अपशब्द बोल दे। संसद में पहुंचने वाले प्रत्येक सदस्य से मर्यादा, शालीनता, सज्जनता, वाणी एवं विचारों की उच्चतम स्तर की उम्मीद की जाती है और राज्यसभा में पहुंचने वाले भद्रजन से तो और भी उम्मीद होती है। फिर अचानक ऐसा क्या घटा कि सांसद सुमन को इतना अनर्गल अलाप करने की आवश्यकता पड़ी? क्या राजनीतिक, राष्ट्रीय एवं अंतर -राष्ट्रीय मुद्दे विपक्ष के पास रह नहीं गए हैं जो धार्मिक भावनाओं को उछालकर तुष्टिकरण की छत्रछाया में अपने राजनैतिक उद्देश्य हांकना चाह रहे हैं। दलितों की राजनीति के अगुवाई बनने का ठेका लेने का जो प्रयास सुमन ने करना चाहा अगले ही दिन मायावती ने इसका पुरजोर विरोध करके राणा सांगा के प्रति जो श्रद्धा भाव अर्पित किया वो दर्शाता है कि किसी भी स्तर पर तुष्टिकरण की राजनीति अब भारतीय समाज को स्वीकार्य नहीं होगी। लेकिन इस बार ये मुद्दा इसलिए उछाला गया कि हिंदू मुस्लिम एकता को, भाईचारे को, प्रेम को स्वाहा कर सवर्ण एवं दलित के बीच एक खाई पैदा कर दी जाए। इसी का प्रतिकार हुआ की कई क्षत्रिय संगठन, करणी सेवा एवं हिंदूवादी संगठनों ने सुमन के बयान का पुरजोर विरोध करते हुए आंदोलन पैदा कर दिया। आत्मघाती बयान साबित हुआ सुमन का, सामाजिक समरसता को मिटाने का। इस सभी के वजह से प्रेम की नगरी आगरा में 12 तारीख को करणी सेना का एक रक्त स्वाभिमान आंदोलन आयोजित हो गया,जोकि हिंदूवादी संगठन क्षत्रिय सभाओं, करणी सेना एवं शासन - प्रशासन के लिए एक बड़ी चुनौती बन गया है। अनजाने में या शुद्ध राजनीतिक लाभ के वशीभूत कोई बात जो सदन में निकली वह कितनी दूर तलक जा सकती है ये प्रकरण उसका जीवंत उदाहरण है। हो सकता है कि सुमन यह सोच रहे हो कि इस तरह वह अपने और अपने पार्टी की विलुप्त होते धरातल को पुन: स्थापित करने में मदद करेगा तो यह उनकी भूल है क्योंकि अब भारतीय जनमानस तुष्टिकरण, विघटन, सामाजिक विभाजन की किसी भी राजनीति को स्वीकार नहीं करता है। भारतीय समाज अब विकासोन्मुख है एवं सौहार्द, शांति, भाईचारे की भावनाओं को ही अपनी रगों में समाहित करता है। भारत भूमि सदैव वीरों की भूमि रही है। शेरों के दांत गिनने वालों के नाम पर यहां की भूमि सुशोभित होती रही है। विदेशी आक्रांताओं के लगातार हमलों के बाद भी, सैकड़ों वर्षों तक गुलाम रहने के बाद भी भारतीय सनातन सभ्यता का ध्वज उत्तुंग शिखर पर लहराता रहा है। कितने ही कुठाराघात हुए हों लेकिन हमारी शूरवीरता एवं संस्कृति पुष्पित, पल्लवित, विकसित एवं सुहासित होती रही है जिसका की पुन: चहुमुखी विकास इस काल में परिभाषित हो रहा है और भारत विश्व गुरु बनने की डगर पर अग्रसित हैं। वीर राणा सांगा एवं वीर महाराणा प्रताप की संघर्ष की गाथाएं कोई काल्पनिक नहीं हैं। तमाम इतिहास के पन्ने पलट के देख लिए जाएं तो विश्व में ऐसे योद्धा बहुत कम मिलते हैं जो अपना सर्वस्व जीवन त्याग करके भी अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्रत्येक रुधिर कण को न्योछावर कर गए। राणा सांगा उस वीर भारतीय परंपरा के प्रतीक है जिसके लिए ये कहा जाता है...

तरु के पत्ते पत्ते पर अंकित राणा की अमर कहानी है, मिटी नहीं पर्वत पथ से चेतक की चरण निशानी है। सांगा के अस्सी घाव लगे, मरहम पट्टी थी आंखों पर। फिर भी उसकी असी बिजली सी गिर गई छपा छप लाखों पर, अब भी करुणा की अमर कथा हम सब को याद जवानी है, राणा तू इसकी रक्षा कर यह सिंहासन अभिमानी है।

यह काल्पनिक नहीं हो सकता, यह किंवदंती भी नहीं हो सकती। यह वह सत्य है जिसे किसी प्रमाणिकता की आवश्यकता ही नहीं। जिस प्रकार सूर्य रोज निकालकर संपूर्ण सृष्टि को जीवन देता है इस प्रकार यह भी तथ्य है की वीर राणा सांगा और वीर महाराणा प्रताप भारतीय आन बान शान है। शांति स्थापित करना ही परम उद्देश्य है। राष्ट्र की उन्नति एवं सौहार्द के लिए प्रत्येक क्षण राष्ट्रीय सरकारों का काम हो यही राजधर्म है और भारतीय समाज इस वक्त सौभाग्यशाली है कि हमारी सरकार राष्ट्रीय हो अथवा प्रादेशिक इस दिशा निर्देश पर ही कार्य कर रही है। ये सत्य है की हिंसा या हिंसात्मक आंदोलन किसी भी सभ्य समाज में स्वीकार्य नहीं है। यह भी परम सत्य है की शांति की अपील समाज के प्रत्येक वर्ग से होनी चाहिए और हो भी रही है और आज अपनी कलम के माध्यम से मैं समाज के सभी लोगों से, प्रबुद्ध वर्ग से आग्रह करूंगा कि शांति की स्थापना हर कीमत पर होनी चाहिए और इस ओर प्रयास होने चाहिए। लेकिन यह भी परम सत्य है कि शांति तभी स्थापित हो सकती है जब धर्म की स्थापना हो और धर्म की स्थापना तभी हो सकती है जब राष्ट्र के प्रति एवं राष्ट्र के वीर सपूतों के प्रति प्रत्येक नागरिक समर्पित हो। हम सभी खूब जानते हैं कि भगवान राम ने भी तीन दिन तक समुद्र को बहुत मनाया था क्योंकि वह धर्म की स्थापना के लिए एक युद्ध करने के लिए ,शांति स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध थे। लेकिन जब अंत तक कार्य नहीं बना तो जैसा मेरे गोस्वामी ने लिखा है...

विनय न मानत जलधि जड़, गए तीन दिन बीत ।
बोले राम सकोप तब ,भय बिन हुए न प्रीत।।

यही एक रास्ता रह गया था? कुछ ऐसा ही संदेश आगरा में होने वाला आंदोलन दे रहा है क्या? कितनी बार विनती नहीं की गई कि अपने बयान पर माफी मांगते हुए शांति को स्थापित करने की पुरजोर प्रयास किया जाए। लेकिन ऐसा हो ना सका। सब कुछ राजनीति से प्रेरित है हालांकि आगरा का शासन प्रशासन सदैव अत्यधिक मुस्तैद रहा है और हर स्थिति से निबटने में सामर्थ्यशाली है। कुरुक्षेत्र के युद्ध से पहले जब श्री कृष्ण पांडवों को समझाने पहुंचे की युद्ध को टाल दिया जाए तो पांचाली ने उनसे पूछा हृकेशव मेरी प्रतिज्ञा का क्या होगा? जिसमें मैं दुशासन के रक्त से अपने केश साफ करूंगी। इस पर केशव ने कहा कि कोई भी प्रतिज्ञा शांति से बड़ी नहीं हो सकती और पांचाली तुम्हारी और भीम जैसी अनेकों अनेक प्रतिज्ञाओं को शांति पर न्योछावर किया जा सकता है और हर वह प्रयास होना चाहिए जो इस युद्ध को टालने के लिए किया जाए। यही सनातन परंपरा है, यही भारतीय सभ्यता संस्कृति का मूल सूत्र है कि हर कीमत पर शांति स्थापित हो। आंदोलनकारी संगठनों को यह देखना होगा की कैसे शांतिपूर्ण तरीके से वे अपने प्रदर्शन को, अपने आंदोलन को उस स्तर तक ले जाए जिससे कि उनकी उचित मांगों को शासन प्रशासन सरकार स्वीकार करें। सर्व शांति की कामना के साथ प्रभु से प्रार्थना है मेरी। ■

सामाजिक न्याय के पुरोधा डॉ.भीमराव अंबेडकर

डॉ. भीमराव अंबेडकर पहले ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने सामाजिक न्याय और सामाजिक समरसता के लिए आवाज उठाई। भारतीय समाज के छुआछूत के रोग की जड़ को पहचानकर उसकी दवाई देने वाले एक डॉक्टर के रूप में जीवन भर काम किया। जिस रोग ने पूरे देश को मानसिक रोगी बना रखा था। डॉ. आम्बेडकर पहले देश के पहले नायक थे, जिन्हें अपने लोगों के बीच स्थापित होने में किसी प्रकार की प्रचार की आवश्यकता नहीं पड़ी। उनको लोगों ने खुद चुना, वे दार्शनिक की तरह अपने विचार रखते गए और उनके अनुयायी अनुसरण करते हुए उनके पीछे चल दिए। उनके विचारों से लोगों के जीवन में बदलाव आया और उन्होंने समाज को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इसी प्रकार डॉ. आम्बेडकर ने हिन्दू कोड बिल विवाद होने के बाद अपना इस्तीफा दे दिया था। हिन्दू कोड बिल में महिलाओं को अधिकार प्रदान किए गए, जिससे हिन्दू समाज के कुछ मठाधीश नाराज हो गए। हिन्दू कोड बिल सही अर्थों में महिलाओं को आजादी देने वाला कानून था। उन्होंने लक्ष्य रखा था कि हिन्दू समाज में फैली अस्पृश्यता जैसी कुरीतियों को समाप्त कर नए मानवीय समाज की स्थापना की जाए। इसके माध्यम से एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के दर्द को अच्छी तरीके से समझ पाएगा। जाति व्यवस्था केवल पृथक-पृथक असमान समूहों का ही संगठन नहीं है, अपितु इसका सबसे दूषित तथा कलंकित रूप अस्पृश्यता के रूप में स्पष्ट दिखाई देता है। इसका विश्व में कहीं कोई सादृश्य नहीं मिलता। इन समुदायों की इस अपवित्रता का कोई उपचार नहीं है और यह स्थाई है। डॉ. आम्बेडकर का मानना था कि अछूतों के स्पर्श से अपवित्र होने पर सवर्ण हिन्दू पवित्रकारी रस्मों या नुस्खों से पवित्र हो सकते हैं, लेकिन ऐसे किसी से भी प्रकार के नुस्खे से अछूतों को पवित्र नहीं किया जा सकता? इस मान्यता के अनुसार, अस्पृश्य अपवित्र ही जन्म लेता है, आजीवन अपवित्र रहते हैं, अपवित्र ही मृत्यु को प्राप्त होते हैं। यह स्थाई और वंशानुगत कलंक का मुद्दा है, जिसे कोई चीज मिटा नहीं सकती। अछूतों को अपने अधिकारों के प्रति सचेत कर आत्मविश्वास का जागरण करना था। यह संघ बड़ा ही सक्रिय था। इसी समाज के तत्वावधान में 500 महारों को जनेऊ धारण करवाया गया, ताकि सामाजिक समता स्थापित की जा सके। यह सभा मुंबई में मार्च, 1928 में संपन्न हुई, जिसमें डॉ. आम्बेडकर भी मौजूद थे। डॉ. आम्बेडकर के अनुसार, जब तक हिन्दू समाज में जातियां विद्यमान हैं, हिन्दूकरण का कोई अर्थ नहीं होगा। हिन्दू संगठित नहीं हो सकते और जब तक हिन्दुओं में संगठन का अभाव रहेगा, वे कमजोर और निरीह बने रहेंगे।

सामाजिक क्रांति के महानायक
डॉ. भीमराव अंबेडकर

सामाजिक क्रांति के महानायक डॉ. अंबेडकर का जीवन संघर्षों का महाकाव्य है जिसने इन्सानियत को सही अर्थों में समझा और मानवीय गरिमा के इतिहास को गौरान्वित किया। मध्य भारत महू में 14 अप्रैल, 1891 को अछूत महार जाति में जन्मे डॉ. भीमराव अंबेडकर भारतीय समाज के तलस्पर्शी अध्येता थे जिन्होंने गैर बराबरी, जातीय भेदभाव, छुआछूत, अन्याय, शोषण, दमन, घृणा, तिरस्कार, घोर अभावों और वेदना की पराकाष्ठा की भट्टी में तपकर सतह से शिखर की ऊंचाई को स्पर्श किया। उनका नाम प्रत्येक वंचित के मन में स्पन्दन पैदा करता है।

डॉ. अशोक कुमार भार्गव

> **डॉ. अंबेडकर के विचार से जाति व्यवस्था ने हिन्दू समाज को कमजोर किया है। जाति की वजह से हिन्दू समाज में सामुदायिक जीवन पद्धति का लोप हो गया। पृथक-पृथक जातियों की जीवन पद्धति में भिन्नता ने हिन्दू समाज में भाईचारे, सहयोग और संगठन की भावना को कमजोर किया है। इससे हिन्दुओं में असुरक्षा, भीरूता, कायरता, अलगाव और एकाकीपन की भावना का विकास हुआ।**

महाचेता डॉ. अंबेडकर ने निष्प्राण सामाजिक जीवन को जड़मूल से उखाड़कर लोकतांत्रिक आधार पर पुर्नगठित करने का संकल्प लेते हुए कहा कि मैं अछूत हूँ,यह पाप है। लोग अछूतों को पशुओं से भी गया बीता समझते हैं। वे कुत्ते बिल्ली तो छू सकते हैं परंतु अछूत को नहीं। किसने बनाई है छुआछूत की व्यवस्था? किसने बनाया है किसी को नीच किसी को ऊंच? भगवान ने? हरगिज़ नहीं! वह ऐसा नहीं करता,वह सब को समान रूप से जन्म देता है। यह बुराई तो मनुष्य ने पैदा की है। मैं इसे समाप्त करके ही रहूंगा।

डॉ. अंबेडकर ने बचपन से ही मर्मांतक पीड़ा को अनुभूत किया। एक दलित बालक जिसे बचपन में गाड़ियों से बाहर फेंका गया, विद्यालयों मे बहिष्कृत किया गया, अछूत होने के कारण संस्कृत के अध्ययन से वंचित रखा गया, जिसे मटके से लेकर पानी पीने की मनाही हो, नाई जिसके बाल नहीं काटता हो, जिसे एक प्रोफेसर के रूप में सरेआम बेइज्जत किया,सार्वजनिक जलाशयों, होटलों, सेलूनों, मंदिरों से दुत्कारा गया हो, बम्बई जैसे महानगर में कोई रहने के लिए किराए से मकान देने को तैयार न हो, जो वकालत आरम्भ करें तो अछूत वकील को कोई केस देने को तैयार न हो, चपरासी तक दूर से ही उनकी मेज पर फाईलें फेंका करते हों, जिसे ब्रिटिश कठपुतली ओर दैत्य की संज्ञा दी गई वही अछूत बालक भीम संस्कृत के मूल वेदों और शास्त्रों का अध्ययन कर, पश्चिम में ज्ञान के विविध क्षेत्रों में अपनी विद्वता का लोहा मनवाकर भारतीय संविधान का मुख्य निर्माता बना। दरअसल सुविधाओं का रोना उन्होंने कभी नहीं रोया वरन् अर्थाभाव की अत्यन्त विषम स्थिति में भी अपने इरादों की दृढ़ता ओर संकल्पों को जीतने की भीष्म तूलिका से समाज में व्याप्त अनावश्यक ऊंचाईयों को उन्मूलित कर स्वतंत्रता,समानता और बन्धुता की बुनियाद पर नए मानवीय समाज की रचना की। बड़ौदा महाराज की सहायता से डॉ. अंबेडकर ने कोलम्बिया विश्वविद्यालय बॉन विश्वविद्यालय,जर्मनी ग्रेज-इन तथा लन्दन स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स से उच्च अध्ययन किया। एम.ए. पी.एच.डी.डीएससी, एम.एस.सी, बार एट लॉ तथा डी.लिट् की उपाधि प्राप्त की। वे अपने समय के सबसे ज्यादा पढ़े लिखे व्यक्ति थे फिर भी उनकी सामाजिक स्थिति में कोई बदलाव नहीं हुआ। इस दौरान उन्होंने पश्चिम के श्रेष्ठतम शैक्षिक मूल्यों को आत्मसात कर यह निश्चय किया कि वे भारत लौटने पर सोए हुए दलित समाज में मानवाधिकारों के प्रति व्यापक चेतना जागृत करेंगे। इस हेतु मूक नायक, बहिष्कृत भारत, प्रबुद्ध भारत तथा जनता समाचार पत्रों का संपादन किया। वे चाहते थे कि स्वाधीनता की रोशनी में दलितों के लिए अवसरों के द्वार समान रूप से खुले रहें। अपनी शक्ति को राजनीतिक आजादी के बजाय सामाजिक आजादी पर केन्द्रित किया। उनके मन में ज्ञान की तीव्र लालसा व अन्याय के प्रतिकार की प्रबल आंधी थी। हिन्दू समाज से निरन्तर उपेक्षा और अपमान की सौगातें मिलने पर भी उनका देशप्रेम किसी भी बड़े देशभक्त नेता से कम नहीं था। प्रथम गोलमेज सम्मेलन में डॉ. अंबेडकर ने दृढ़ता के साथ दलितोत्थान के प्रति अंग्रेज राज की उदासीनता को रेखांकित करते हुए दलितों के आत्मसम्मान व उनके मानवाधिकारों का पक्ष समर्थन किया। तब गांधी ने उन्हें उत्कृष्ट देशभक्त कहा। डॉ. अंबेडकर ने पलटकर गांधीजी से कहा आप कहते हैं कि मेरा स्वदेश है किन्तु मैं फिर भी दोहराता हूं कि मैं स्वदेश से वंचित हूं। मैं इस देश को कैसे अपना देश और इस धर्म को कैसे अपना धर्म कह सकता हूं जिसमें हमारे साथ कुत्ते, बिल्लियों से भी बदतर बर्ताव किया जाता है। हमें पीने का पानी तक नहीं मिल पाता। कोई भी स्वाभिमानी अछूत इस देश पर गर्व नहीं कर सकता।

वे नहीं चाहते थे कि नेतृत्व आवाम को पशुओं की तरह हांके। डॉ. अंबेडकर ने शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो का अदभुत मंत्र दिया। उन्होंने दलितों में हीन ग्रंथि दूर करने का एहसास जगाया कि वे किसी से भी कमतर नहीं है। पीपुल्स एजूकेशन सोसायटी, मिलिन्द कॉलेज और सिद्धार्थ कॉलेज की स्थापना कर दलित समाज में शिक्षा के प्रति चेतना जागृति की क्योंकि आत्मसम्मान मानवाधिकार तथा सामाजिक न्याय केवल मांगने से नहीं मिलते। इन्हें प्राप्त करने के लिए स्वयं को काबिल बनाना पड़ता है। जिसकी बुद्धि गुलाम है वह कभी आजाद नहीं हो सकता। शिक्षा आदमी को इन्सान बनाती है। अपने आप पर भरोसा करना सिखाती है न कि देवी-देवताओं पर। किन्तु दुर्भाग्य से उनके प्रेरक संदेश को विस्मृत कर उन्हें विलक्षण प्रतिभा से पत्थर की प्रतिमा में तब्दील किया जा रहा है। बीसवीं सदी के मानवाधिकारों के श्रेष्ठतम प्रवक्ता डॉ.अंबेडकर सदैव सवर्णों और निम्न जातियों के मध्य समानता समरसता लाने के लिए आंदोलित रहे। अछूतोद्धार के लिए महाद चवदार तालाब, मनुस्मृति दहन तथा कालाराम मंदिर प्रवेश सत्याग्रह प्रारंभ किए थे, किन्तु सवर्णों के चवदार तालाब को शुद्ध करने के कर्मकाण्ड से वे अत्यन्त उद्विग्न हुए। अत: मंदिर प्रवेश की लड़ाई के प्रति अनास्था व्यक्त करते हुए कहा कि अस्पृश्यता हिन्दू धर्म पर नहीं हम पर कलंक है। उसे धोने का पवित्र कार्य हम करेंगे। डॉ. अंबेडकर मूलत: महान अर्थशास्त्री थे और सामाजिक अनर्थ को मानवीय अर्थ देने की उनमें अद्भुत क्षमता थी। उन्होंने राष्ट्रीमय लाभांश, रुपये की समस्या,प्राचीन भारतीय व्यापार, भारतीय मुद्रा व बैंकिंग इतिहास, प्रान्तीय वित्त का विकास और विकेन्द्रीयकरण तथा भारत में लघुजोतों की समस्या समाधान जैसे विषयों पर प्रामाणिक पुस्तकें लिखी। वे जानते थे कि उन्हें सामाजिक अन्याय के खिलाफ ही नहीं बल्कि आर्थिक शोषण के खिलाफ भी लड़ना है। इस अर्थ में वे समाजवादी अर्थव्यस्था के काफी निकट थे। वे राजनैतिक लोकतंत्र को सामाजिक लोकतंत्र में बदलना चाहते थे। वे आर्थिक शोषण के खिलाफ संरक्षण को संविधान के मूलभूत अधिकारों के भाग में सम्मिलित किए जाने के पक्षधर थे। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी डॉ. अंबेडकर भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पी थे। उन्होंने विश्व के लगभग सभी संविधानों के श्रेष्ठतम मूल्यों, उन्नत प्रावधानों को हमारी संस्कृति के अनुरूप ढाल कर भारतीय संविधान को वैश्विक आदर्शों और अनुभवों से समृद्ध किया। भारतीय संविधान हमारी उदारवादी सांस्कृतिक चेतना का अमृत कलश है और सामाजिक शोषण की व्यवस्था से दमित वर्ग का रक्षा कवच जो सदियों से भेदभाव और अस्पृश्यता के संताप झेल रहे हैं। भारतीय उपमहाद्वीप में भारत के साथ स्वाधीन हुए देश आंतरिक कलह, गृहयुद्ध, विखंडन, अस्थिरता जैसे हालातों से जूझ रहे है वहीं हमारा देश स्थिरता के साथ विश्व शक्ति बनने की ओर अग्रसर है।

निसंदेह यह हमारे संविधान के कठोर लचीले सशक्त एवं चिरप्रासंगिक होने का प्रमाण है।

वस्तुत: डॉ अंबेडकर के योगदान के अनेक पक्ष प्रकाश में नहीं आ पाए हैं। भारत में वित्त आयोग,रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया,स्वतंत्र निर्वाचन आयोग, दामोदर घाटी, हीराकुंड और सोन नदी परियोजना,पानी बिजली और ग्रिड सिस्टम, रोजगार कार्यालयों की स्थापना एवं संपत्ति में महिलाओं के अधिकार सशक्तिकरण व श्रम कल्याण नीतियों में डॉ अंबेडकर का अविस्मरणीय योगदान है। वंचितों की मुक्ति संग्राम के अपराजेय योद्धा डॉ. अंबेडकर की महानता को कम करके आंकना उनके अस्तित्व को नकारना है। आचार्य रजनीश ने ठीक ही कहा है किसी को खारिज करने का सबसे आसान तरीका है उसे महान बना दीजिए, उसे अवतार करार दे दीजिए बस उसकी प्रतिमा का पूजन शुरू हो जाएगा। उस पर विचार होना बंद हो जाएगा। डॉ.अंबेडकर के साथ आज यही हो रहा है क्योंकि हम अपने राष्ट्र नायकों पर विचार नहीं श्रद्धा भर करना जानते हैं। यह विडम्बना है कि उन्हें आज महज दलितों के मसीहा के रूप में स्थापित कर जातीय कोष्ठकों में बंद किया जा रहा है। जबकि उनका अवदान समूचे राष्ट्र के लिए है। मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित डॉ. अंबेडकर की संवेदना का पात्र वह प्रत्येक व्यक्ति जो शोषित, पीडित, पददलित और तिरस्कृत था, वह आज भी समतामूलक समाज की स्थापना के अधूरे कार्य की पूर्णता की प्रतीक्षा में है। यह देश डॉ अंबेडकर के क्रांतिकारी विचारों और युगदृष्टि का सदैव ही ऋणी रहेगा। ■

जीवन की मर्यादा है श्रीराम का जीवन

डॉ. वन्दना सेन

श्रीराम जीवन की मर्यादा हैं। सांस्कृतिक प्रेरणा है। समरसता का पर्याय हैं। भारतीय सांस्कृतिक दर्शन की धारा को प्रवाहित करने वाले भारतीय साहित्य में वसुधैव कुटुम्बकम का भाव सदैव समाहित रहा है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण और संत तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस ने सामाजिक समरसता के भाव का प्रवाहन बहुत ही गहनता से किया है। उदारता के भाव से अनुप्राणित भारतीय साहित्य निश्चित ही विश्व समुदाय को अहिंसा और सामाजिक समरसता का धरातलीय संदेश देता है। जिसकी वर्तमान में पूरे विश्व को अत्यंत आवश्यकता है। वनवासी राम का सम्पूर्ण जीवन सामाजिक समरसता का अनुकरणीय पाथेय है। श्रीराम ने वनगमन के समय प्रत्येक कदम पर समाज के अंतिम व्यक्ति को गले लगाया। केवट के बारे में हम सभी ने सुना ही है, कि कैसे भगवान राम ने उनको गले लगाकर समाज को यह संदेश दिया कि प्रत्येक मनुष्य के अंदर एक ही जीव आत्मा है। बाहर भले ही अलग दिखते हों, लेकिन अंदर से सब एक हैं। यहां जाति का कोई भेद नहीं था। वर्तमान में जिस केवट समाज को वंचित समुदाय की श्रेणी में शामिल किया जाता है, भगवान राम ने उनको गले लगाकर सामाजिक समरसता का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है। सामाजिक समरसता के भाव को नष्ट करने वाली जो बुराई आज दिखाई दे रही है, वह पुरातन समय में नहीं थी। समाज में विभाजन की रेखा खींचने वाले स्वार्थी व्यक्तियों ने भेदभाव को जन्म दिया है। वर्तमान में हम स्पष्ट तौर पर देख रहे हैं कि समाज को कमजोर करने का सुनियोजित प्रयास किया जा रहा है, जिसके कारण जहां एक ओर समाज की शक्ति तो कमजोर हो रही है, वहीं देश भी कमजोर हो रहा है। वर्तमान में राम राज्य की संकल्पना को साकार करने की बात तो कही जाती है, लेकिन उसके लिए सकारात्मक प्रयास नहीं किए जा रहे हैं। सामाजिक एकता स्थापित करने के लिए रामायण हम सभी को उचित मार्ग दिखा सकती है। यह भी सर्वविदित है कि राम वन गमन के दौरान भगवान राम ने निषादराज को भी गले लगाया, इसका यही तात्पर्य है कि भारत में कभी भी जातिगत आधार पर समाज का विभाजन नहीं था। पूरा समाज एक शरीर की ही तरह था। जैसे शरीर के किसी भी हिस्से में दर्द होता है, तब पूरा शरीर अस्वस्थ हो जाता था। इसी प्रकार समाज की भी अवधारणा है, समाज का कोई भी हिस्सा वंचित हो जाए तो सामाजिक एकता की धारणा समाप्त होने लगती है। हमारे देश में जाति आधारित राजनीति के कारण ही समाज में विभाजन के बीजों का अंकुरण किया गया। जो आज एकता की मर्यादाओं को तार-तार कर रहा है। भगवान राम ने अपने वनवास काल में समाज को एकता के सूत्र में पिरोने का काम पूरे कौशल के साथ किया। समाज की संग्रहित शक्ति के कारण ही भगवान राम ने आसुरी प्रवृत्ति पर प्रहार किया। समाज को निर्भयता के साथ जीने का मार्ग प्रशस्त किया। इससे यही शिक्षा मिलती है समाज जब एक धारा के साथ प्रवाहित होता है तो कितनी भी बड़ी बुराई हो, उसे नत मस्तक होना ही पड़ता है। सीधे शब्दों में कहा जाए तो संगठन में ही शक्ति है। इससे यह संदेश मिलता है कि हम समाज के साथ कदम मिलाकर नहीं चलेंगे तो हम किसी न किसी रुप में कमजोर होते चले जाएंगे और हमें कोई न कोई दबाता ही चला जाएगा। सम्पूर्ण समाज हमारा अपना परिवार है। कहीं कोई भेदभाव नहीं है। जब इस प्रकार का भाव बढ़ेगा तो स्वाभाविक रुप से हमें किसी भी व्यक्ति से कोई खतरा भी नहीं होगा। आज समाज में जिस प्रकार के खतरे बढ़ते जा रहे हैं, उसका अधिकांश कारण यही है कि समाज का हिस्सा बनने से बहुत दूर हो रहे हैं। अपने जीवन को केवल भाग दौड़ तक सीमित कर दिया है। यह सच है कि व्यक्ति ही व्यक्ति के काम आता है। यही सांस्कृतिक भारत की अवधारणा है। पूरे विश्व में भारत एक सांस्कृतिक राष्ट्र के रुप में पहचाना जाता है, जब हम भारत को राष्ट्र बोलते हैं, तब हमें इस बात का बोध होना ही चाहिए कि राष्ट्र आखिर होता क्या है? हम इसका अध्ययन करेंगे तो पता चलेगा कि राष्ट्र की एक संस्कृति होती है, एक साहित्यिक अवधारणा होती है, एक आचार-विचार होता है, एक जैसी परंपराएं होती हैं। भगवान राम के जीवन में इन सभी का साक्षात दर्शन होता है, इसलिए कहा जा सकता है कि राम जी केवल वर्ग विशेष के न होकर सम्पूर्ण विश्व के हैं। उनके आदर्श हम सभी के लिए हैं। हमें राम जी के जीवन से प्रेरणा लेकर ही अपने जीवन को उत्सर्ग के मार्ग पर ले जाने का उपक्रम करना चाहिए। ■

धार्मिक

धरती के पार जंग का बाजार

अंतरिक्ष की अकूत संभावनाओं के दोहन के बढ़ते लालच से देशों के बीच युद्ध और कॉर्पोरेट जंग दोनों का खतरा अब साइंस फिक्शन की बात नहीं, असलियत बना

राजीव नयन चतुर्वेदी

अंतरिक्ष में आठ दिन के अभियान पर भेजे गए, लेकिन नौ महीने से वहीं अटके चार यात्री अंततः धरती पर वापस आ गए। उनके बीच एक यात्री भारतीय मूल की सुनीता विलियम्स हैं। इस बचाव अभियान में नासा को दुनिया के सबसे बड़े धनकुबेर और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के प्रायोजक एलन मस्क की निजी कंपनी स्पेस एक्स से मदद लेनी पड़ी। वैसे तो दुनिया के दूसरे सबसे अमीर आदमी जेफ बेजोस सैर करने के लिए अपने यान में पहले ही अंतरिक्ष में जा चुके हैं, लेकिन मस्क-नासा की ताजा पहल ने कुछ सवाल खड़े किए हैं। अगले 20-30 साल में मंगल पर पहुंचने की बात कह के मस्क ने अंतरिक्ष में व्यापार और युद्ध की गल्पकथा हमारे ही सामने साकार होने के संकेत दे डाले हैं। जो अंतरिक्ष कभी खोज और ज्ञान का क्षेत्र माना जाता था, वह अब धीरे-धीरे सत्ता और सैन्य-शक्ति का नया अखाड़ा बनता जा रहा है। इसको लेकर संयुक्त राष्ट्र चिंता भी जाहिर कर चुका है।

संयुक्त राष्ट्र की 20 अक्टूबर 2023 की प्रेस रिलीज में कहा गया था, ''अंतरिक्ष का तेजी से सैन्यीकरण हो रहा है, जो भविष्य में बड़े खतरों को जन्म दे सकता है।'' दो साल पहले आए इस बयान के बाद एलन मस्क की ताजा पहल इस बात का इशारा है कि अंतरिक्ष की जंग अब दूर की बात नहीं, बल्कि असल खतरा बन चुकी है।

अंतरिक्ष का अर्थशास्त्र

यह बदलाव रातोरात नहीं आया है। अंतरिक्ष में सैन्यीकरण की नींव शीत-युद्ध के समय पड़ चुकी थी। उस दौर में अमेरिका और सोवियत संघ ने एक-दूसरे से आगे निकलने के लिए अंतरिक्ष में अपना दबदबा दिखाने की होड़ शुरू कर दी थी। 1957 में सोवियत संघ ने स्पुतनिक 1 उपग्रह लॉन्च किया और फिर 1969 में अमेरिका ने अपोलो 11 को चांद पर भेजकर इतिहास रच दिया। यह दोनों घटनाएं सिर्फ तकनीकी सफलताएं नहीं थीं। आज यह कहानी बहुत आगे जा चुकी है। अंतरिक्ष अब एक एक ऐसा मैदान बन चुका है, जहां हर देश अपनी सुरक्षा, निगरानी और संचार के लिए मजबूत पकड़ बनाना चाहता है। दुनिया के कई देश अब थल, वायु और जल सेना के इतर स्पेस सेना बना रहे हैं। दिसंबर 2019 में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने आधिकारिक तौर पर दुनिया की पहली 'स्पेस फोर्स' का गठन किया। यह एक अजीबोगरीब घटना थी क्योंकि इससे पहले किसी ने नहीं सोचा था कि कोई देश स्पेस के लिए एक समर्पित सेना बनाएगा। इस दौरान ट्रंप ने कहा था, अंतरिक्ष दुनिया का सबसे नया युद्धक क्षेत्र है। हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरों के बीच अंतरिक्ष में अमेरिकी श्रेष्ठता अत्यंत महत्वपूर्ण है। अमेरिका के इस कदम के सिर्फ दो साल बाद यानी 2021 में चीन ने एक श्वेतपत्र जारी किया जिसमें राष्ट्रपति शी जिनपिंग में कहा, चीन को अंतरिक्ष शक्ति बनाना हमारा सपना है और इस दिशा में हम सभी जरूरी कदम उठा रहे हैं। अंतरिक्ष के संसाधनों का प्रयोग हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बेहद जरूरी है। चीन की यह नीति दिखाती है कि वे अंतरिक्ष में अपनी उपस्थिति को केवल खोज तक सीमित नहीं रखना चाहते, बल्कि उसे भविष्य की सुरक्षा और रणनीति का हिस्सा बनाना चाहते हैं। जानकारों का मानना है कि यह चीन का अमेरिका को जवाब था कि वह भी 'स्पेस रेस' में पीछे नहीं है।

उपग्रहों की बदलती भूमिका

उपग्रह कभी केवल विज्ञान के उपकरण थे, हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में वे आज भी काफी अहम हैं। मौसम का अनुमान लगाना, जलवायु परिवर्तन को समझना और जीपीएस आदि का इस्तेमाल हम सैटेलाइट की मदद से ही कर पाते हैं। स्पेस वार की मंडराते आशंकाओं के बीच इनकी भूमिका अब बदल गई है। अब यह आम धारणा है कि अंतरिक्ष में उस देश का सबसे ज्यादा प्रभुत्व है जिसके पास सबसे ज्यादा सैटेलाइट हैं। स्पेस-युद्ध ही नहीं, बल्कि परंपरागत जंग में भी उपग्रहों की अहम भूमिका है। अमेरिकी स्पेस फोर्स के चीफ ऑफ स्पेस ऑपरेशन्स जनरल जॉन रेमंड ने 'काउंसिल ऑन फॉरेन अफेयर्स' के एक सेमिनार में बताया था कि कैसे सैटेलाइट का एक मजबूत नेटवर्क स्पेस में शक्ति बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। उनके मुताबिक, अमेरिका को एक अधिक मजबूत स्पेस संरचना की जरूरत है, खासकर जब चीन जैसे प्रतिद्वंदी सैन्य स्पेस क्षमताओं में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। दरअसल, उपग्रहों का इस्तेमाल अब केवल वैज्ञानिक अनुसंधान और संचार तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि ये आधुनिक युद्ध का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुके हैं। सैन्य अभियानों में उनकी भूमिका से देशों को सामरिक बढ़त मिलती है। 'वर्ल्ड पापुलेशन रिव्यू' की एक रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका के पास 247 सैन्य और जासूसी उपग्रह हैं जो उसे दुश्मनों की गतिविधियों पर नजर रखने और सामरिक निर्णय लेने में सक्षम बनाते हैं। रूस के पास करीब 157 और चीन के पास 110 सैन्य उपग्रह हैं, जो उन्हें धरती पर हर पल की गतिविधि पर नजर रखने में मदद करते हैं। भारत भी इस दिशा में पीछे नहीं है। उसके पास कई सामरिक उपग्रह हैं जैसे कि जिसैट और रिसैट, जो भारतीय सेना की संचार और निगरानी में सहायता करते हैं। अमेरिका के पास दुनिया के सबसे उन्नत जासूसी उपग्रहों में से कुछ मौजूद हैं। एनआरओ (नेशनल रिकोनासेंस ऑफिस) द्वारा संचालित उपग्रह मध्य-पूर्व, एशिया और यूरोप में विभिन्न देशों की गतिविधियों पर लगातार नजर रखते हैं। चीन भी इस क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है। चीन के याओगन और गाओफेन श्रृंखला के उपग्रहों का इस्तेमाल हिंद-प्रशांत और दक्षिणी चीन सागर में समुद्री गतिविधियों की निगरानी के लिए किया जाता है। जब भारत, अमेरिका, जापान, और ऑस्ट्रेलिया ने मालाबार युद्ध अभ्यास किया, तो चीन ने अपने उपग्रहों के माध्यम से इस क्षेत्र पर पैनी नजर रखी थी। अमेरिका ने इस पर आपत्ति जताई थी। 'एसपी एविएशन की एक रिपोर्ट के मुताबिक, उपग्रहों का सैन्य उपयोग युद्ध की स्थिति में कई तरह से फायदेमंद होता है। उपग्रहों की मदद से जासूसी और निगरानी की जा सकती है, जिससे दुश्मनों की गतिविधियों पर नजर रखी जाती है। इसके अलावा, इनका उपयोग संचार में भी किया जाता है जो सेना को दूर-दूर तक बिना किसी बाधा के संदेश पहुंचाने में सक्षम बनाता है। आधुनिक उपग्रहों में कुछ ऐसी विशेषताएं हैं कि वे दुश्मन की मिसाइलों की लोकेशन का तुरंत पता लगा सकते हैं। ऐसे कई मामले सामने आ चुके हैं जिसमें उपग्रह से संबंधित सूचनाओं का इस्तेमाल टकरावों में किया जाता है। नवंबर 2023 में जब ईरान समर्थित हूथी समूह ने इजरायल पर बैलिस्टिक मिसाइल दागे तो इजरायली रक्षा बल ने उपग्रह के जरिये ही उसकी स्थिति का सटीक अंदाजा लगाकर धरती के वायुमंडल से बाहर ही मार गिराया। विशेषज्ञ इसे अंतरिक्ष में होने वाला पहला हमला बता रहे हैं। कई मीडिया रिपोर्ट्स इस बात का जिक्र करते हैं कि 2019 में पुलवामा हमले के बाद घरेलू री-सैट सैटेलाइट ने भारतीय सेना को पाक अधिकृत कश्मीर में आतंकवादी ठिकानों का पता लगाने में मदद की, जिसके बाद हमले को अंजाम दिया गया। सीएनएन के मुताबिक, यूक्रेन-रूस युद्ध में यूक्रेनी सेना अपने ड्रोन हमले को सटीक बनाने के लिए एलन मस्क की सैटेलाइट इंटरनेट सर्विस का इस्तेमाल कर रही है। सर्विस की मदद से यूक्रेनी सैनिक ड्रोन से लाइव फीड साझा कर पाते हैं और उन क्षेत्रों में संपर्क कर पाते हैं जहां लड़ाई के कारण फोन सेवा बाधित हो जाती है। इन घटनाओं से साफ है कि उपग्रह अब केवल संचार के साधन नहीं हैं, बल्कि जासूसी, निगरानी, और सैन्य उद्देश्यों के अहम उपकरण बन चुके हैं। चाहे रूस-यूक्रेन युद्ध हो, इजराइल-लेबनान संघर्ष हो, अमेरिकी जासूसी मिशन हो, या चीन की निगरानी, उपग्रहों ने वैश्विक सुरक्षा और सैन्य रणनीतियों में अपनी महत्वपूर्ण जगह बना ली है।

उपग्रह-रोधी हथियारों का खतरा

जिस तरह से उपग्रहों का इस्तेमाल सामरिक ताकत को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है, वैसे ही एंटी-सैटेलाइट यापी उपग्रहरोधी उपकरणों का इस्तेमाल कर के इन्हें नष्ट भी किया जा सकता है। 'सिक्योर वर्ल्ड फाउंडेशन' के निदेशक ब्रायन वीडेन के मुताबिक, जितने अधिक देश एंटी-सैटेलाइट हथियारों को बनाएंगे, अंतरिक्ष में युद्ध का जोखिम उतना ही अधिक होगा। चीन, रूस, अमेरिका और भारत जैसे देशों के पास इसकी क्षमता है। दअरसल, एंटी-सैटेलाइट तकनीक को विकसित करने का मकसद दुश्मन के उपग्रहों को निष्क्रिय करना है। यह तकनीक मिसाइलों, इलेक्ट्रॉनिक जैमिंग, माइक्रोवेव विकीर्णन और लेजर जैसे हथियारों का इस्तेमाल करके उपग्रहों को नष्ट कर सकती है। स्पेस विशेषज्ञ और खगोलविज्ञानी रमेश कपूर ने बताया, अभी तक ऐसा नहीं हुआ है कि किसी देश ने दूसरे देश के सैटेलाइट को निष्क्रिय करने के लिए एंटी-सैटेलाइट का इस्तेमाल किया हो, हालांकि संभावना को खारिज नहीं किया जा सकता है। सैटेलाइट किसी देश की आंखें और कान होते हैं, जो किसी संघर्ष के समय पहला निशाना बनते हैं। वो बताते हैं कि जरूरी नहीं कि सैटेलाइट पर हमला करके ही उसे नष्ट किया जाए। उसे नीचे से निष्क्रिय भी किया जा सकता है। इसके लिए वायरस और लेजर बीम का इस्तेमाल किया जा सकता है। उनके मुताबिक इस हमले में खून नहीं बहता। रूस 24 फरवरी 2022 को ऐसा कर भी चुका है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, यूक्रेन पर रूस के टैंक हमले से कुछ समय पहले ही रूस ने अमेरिकी कंपनी वायसैट के 'का-सैट' नेटवर्क में वायरस फैलाया और इसके हैक कर लिया। ■

रियल एस्टेट सेक्टर में बदलाव की निरंतरता बनी हुई है। ऐसे समय में इस एस्टेट के विकास को लेकर अनेक सवाल और उम्मीदें हैं, युवक पत्रिका ने अर्थकॉन कंस्ट्रक्शंस प्राइवेट लिमिटेड के चेयरमैन शादाब ख़ान से एक खास साक्षात्कार किया। इस दौरान उन्होंने न सिर्फ अपने प्रोजेक्ट्स के बारे में विस्तार से बताया, बल्कि रियल एस्टेट सेक्टर के भविष्य को लेकर भी अपने विचार साझा किए। प्रस्तुत है, इस खास चर्चा के कुछ महत्वपूर्ण अंश...

क्वालिटी कंस्ट्रक्शंस से ही है अर्थकॉन की पहचान

शादाब खान

शादाब जी, सबसे पहले, कृपया हमें यह बताएं कि अर्थकॉन कंस्ट्रक्शंस की स्थापना के बाद आपकी यात्रा कैसी रही और अब तक का सफर कैसा रहा?

- अर्थकॉन कंस्ट्रक्शंस की शुरुआत 2001 में की गई थी। हमारी प्रमुख सोच यह थी कि टियर-2 और टियर-3 शहरों में किफायती और गुणवत्तापूर्ण आवास उपलब्ध कराया जाए। शुरुआत में हमारा ध्यान केवल आवासीय परियोजनाओं पर था, लेकिन समय के साथ हमने कॉमर्शियल प्रोजेक्ट्स और हॉलिडे होम्स के क्षेत्र में भी कदम रखा। हमारी सफलता का मुख्य कारण समय पर और उच्च गुणवत्ता वाली परियोजनाओं का निर्माण करते हुए पर्यावरण का भी ख्याल रखना रहा है।

अब तक आपने कौन-कौन सी प्रमुख परियोजनाओं को विकसित किया है, और वे कहां स्थित हैं?

हमने कई प्रमुख परियोजनाओं को पूरा किया है, जिनमें से कुछ हैं...

- बीटल स्मार्ट एक्जीक्यूटिव सुइट्स, ग्रेटर नोएडा (दिल्ली-एनसीआर)
- कासा ग्रांडे, ग्रेटर नोएडा (दिल्ली-एनसीआर)
- आईटी रेजीडेंसी, नोएडा (दिल्ली-एनसीआर)
- सर सैय्यद अपार्टमेंट्स, नोएडा (दिल्ली-एनसीआर)
- मेगा काउंटी -देहरादून, उत्तराखंड
- नैनी ग्रीन्स, नैनीताल (उत्तराखंड)
- राजपुर ग्रीन्स, देहरादून (उत्तराखंड)
- नूर-उस-सबाह, भोपाल, मध्य प्रदेश

आपके वर्तमान में निर्माणाधीन आवासीय परियोजनाएँ कौन सी हैं?
वर्तमान में हम निम्नलिखित आवासीय परियोजनाओं पर काम कर रहे हैं...

- कासा ग्रांडे-2, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश (दिल्ली-एनसीआर)
- गुलमोहर ग्रीन्स, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश
- निवास एस्टेट, रामपुर, उत्तर प्रदेश

आपके निर्माणाधीन कॉमर्शियल प्रोजेक्ट्स कौन से हैं?
हमारे निर्माणाधीन कॉमर्शियल प्रोजेक्ट्स में शामिल हैं...

- सिटी मॉल, नैनीताल, उत्तराखंड
- सिटी सेंटर, रामपुर, उत्तर प्रदेश (नया लॉन्च)

कृपया उन परियोजनाओं के बारे में बताएं जो पहले ही पूरी हो चुकी हैं?
कुछ प्रमुख परियोजनाएँ जो पहले ही पूरी हो चुकी हैं, वे हैं...

- बीटल स्मार्ट एक्जीक्यूटिव सुइट्स - ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश (दिल्ली-एनसीआर)
- कासा ग्रांडे - ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश (दिल्ली-एनसीआर)
- युवराज रेजीडेंसी -मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश
- एकता विहार - संभल, उत्तर प्रदेश
- नैनी ग्रीन्स -नैनीताल, उत्तराखंड
- नैनी किंगडम - नैनीताल, उत्तराखंड
- नैनी किंगडम एक्सटेंशन - नैनीताल, उत्तराखंड
- नीलगिरी - नैनीताल, उत्तराखंड
- नीलगिरी-2 - नैनीताल, उत्तराखंड
- नैनी रिजॉर्ट - नैनीताल, उत्तराखंड
- नैनी पैराडाइज - नैनीताल, उत्तराखंड

अर्थकॉन अपने प्रोजेक्ट्स में स्थिरता और पर्यावरण का ध्यान कैसे रखता है?

- स्थिरता हमारे काम का एक अहम हिस्सा है। हम हमेशा अपने निर्माण कार्य में पर्यावरण-अनुकूल सामग्री और तकनीकों का उपयोग करते हैं, ताकि न केवल हम उच्च गुणवत्ता का निर्माण करें, बल्कि पर्यावरण पर भी कम से कम असर पड़े। हम यह सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं कि हमारी परियोजनाएँ लंबे समय तक टिकाऊ हों और पर्यावरण की रक्षा भी करें।

भविष्य में अर्थकॉन की क्या योजनाएँ हैं?

- हम हमेशा नए अवसरों की तलाश में रहते हैं। फिलहाल, हम मुरादाबाद और रामपुर में नई परियोजनाओं पर काम कर रहे हैं, जिनमें हम किफायती और उच्च गुणवत्ता वाले आवास और वाणिज्यिक स्थान प्रदान करने की योजना बना रहे हैं। हमारा ध्यान उन परियोजनाओं पर है जो आज की जरूरतों को पूरा करने के साथ-साथ पर्यावरण के प्रति हमारी जिम्मेदारी को भी निभा सकें।

इच्छुक ग्राहक और साझेदार अर्थकॉन कंस्ट्रक्शंस से कैसे संपर्क कर सकते हैं?

- इच्छुक ग्राहक और साझेदार हमारे प्रधान कार्यालय, बी-01, सेक्टर-04, नोएडा, उत्तर प्रदेश-201301 पर संपर्क कर सकते हैं। इसके अलावा, वे हमें फोन नंबर +91-9818112229 या ईमेल abdulmoid@earthcon.co.in के माध्यम से भी संपर्क कर सकते हैं।

अंत में, अर्थकॉन की यात्रा और आपके दृष्टिकोण के बारे में कुछ अंतिम विचार जो आप हमारे पाठकों से साझा करना चाहेंगे?

- हमारी यात्रा हमेशा गुणवत्ता, स्थिरता और ग्राहक संतुष्टि के प्रति समर्पित रही है। हम विश्वास करते हैं कि हमें ऐसे स्थानों का निर्माण करना चाहिए जो हमारे ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करें और समाज तथा पर्यावरण के लिए भी सकारात्मक योगदान दें। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, हम इन सिद्धांतों को निभाते हुए ऐसी परियोजनाएँ देंगे जो समय की कसौटी पर खरी उतरें। ■

स्वास्थ्य सुविधाएं

भारत के सशक्त स्वास्थ्य मोर्चे का दुनिया ने लोहा माना

मोदी सरकार अनेक क्षेत्रों में अनूठा एवं विलक्षण करते हुए देश से न केवल गरीबी का कलंक मिटाया है बल्कि अनेक समस्याओं से मुक्ति भी दिलायी है। स्वास्थ्य मोर्चे पर भारत की उपलब्धियों आश्चर्यकारी रही है, कोरोना-काल में भारत ने दुनिया को स्वास्थ्य-सहायता पहुंचायी है।

अजय गर्ग

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'स्वस्थ भारत मिशन' के तहत देश भर में चलाई जा रही विभिन्न स्वास्थ्य योजनाओं से देश में व्यापक पैमाने पर बदलाव ही नहीं, बल्कि आमूल-चूल परिवर्तन आया है। यह बात हम नहीं कह रहे, बल्कि पूरी दुनिया इस योजना का लोहा मान रही है। संयुक्त राष्ट्र ने भारत में विभिन्न स्वास्थ्य योजनाओं के तहत शिशु मृत्यु दर में कमी लाने की तारीफ की है। इतना ही नहीं यूएन ने प्रधानमंत्री मोदी की आयुष्मान भारत योजना को भी शानदार, अनूठी एवं प्रेरक बताया है। एक कार्यक्रम के दौरान विश्व निकाय ने 'आयुष्मान भारत' जैसी स्वास्थ्य पहलों का उदाहरण देते हुए शिशु मृत्यु दर में कमी लाने में भारत के प्रयासों और प्रगति की सराहना की तथा इसे 'अनुकरणीय' बताया। मोदी सरकार के ऐसे कामों एवं उपलब्धियों की आलोचना करने वालों को प्रशंसा भी करनी चाहिए, क्योंकि अच्छे काम के लिए प्रशंसा सरकारों को मूल्यवान महसूस कराती हैं और उन्हें अपने काम के प्रति अधिक वफ़ादार एवं जिम्मेदार बनाती हैं। अनेक शोध के अनुसार, जो देश एवं प्रांत अपनी सरकारों की उल्लेखनीय उपलब्धियों को मान्यता देते हैं, उनकी उत्पादकता और प्रदर्शन में अधिक वृद्धि देखी जाती है और दुनिया इसकी प्रशंसा करती है। प्रशंसा और आभार व्यक्त करने से समुदाय की भावना, जिम्मेदारी और राष्ट्र के लिये कुछ अधिक सशक्त करने का एक कारण मिलता है। ऐसे कारणों से नया भारत, विकसित भारत एवं सशक्त भारत का निर्माण होता है।

मोदी सरकार अनेक क्षेत्रों में अनूठा एवं विलक्षण करते हुए देश से न केवल गरीबी का कलंक मिटाया है बल्कि अनेक समस्याओं से मुक्ति भी दिलायी है। स्वास्थ्य मोर्चे पर भारत की उपलब्धियों आश्चर्यकारी रही है, कोरोना-काल में भारत ने दुनिया को स्वास्थ्य-सहायता पहुंचायी है। वर्ष 2000 के बाद भारत में नौनिहालों का जीवन बचाने की सार्थक एवं प्रभावी मुहिम छेड़ी है, जो एक बड़ी छलांग एवं उपलब्धि है। संयुक्त राष्ट्र की एक एजेंसी के इस आकलन से मोदी सरकार अपनी पीठ थपथपा सकती है कि संयुक्त राष्ट्र एजेंसी की रिपोर्ट में उन योजनाओं और कार्यक्रमों का उल्लेख किया गया है, जिनके चलते शिशुओं की मृत्युदर कम करने में सफलता मिली है। इसका अर्थ है कि बीते कुछ समय में स्वास्थ्य सेवाओं और ढांचे को बेहतर करने के लिए वास्तव में कई उल्लेखनीय कदम उठाए गए हैं। इनमें आयुष्मान भारत योजना भी है। इसका उल्लेख भी संयुक्त राष्ट्र एजेंसी ने विशेष रूप से किया है। यह स्वास्थ्य संबंधी विश्व की सबसे बड़ी योजना है। यह निर्धन परिवारों के लिए वरदान सिद्ध हुई है। आश्चर्य नहीं कि संयुक्त राष्ट्र एजेंसी ने कहा कि भारत ने रणनीतिक निवेश के माध्यम लाखों लोगों के जीवन को बचाने का काम किया है। आयुष्मान भारत योजना की उपयोगिता को देखकर ही हाल में 70 वर्ष की आयु के सभी बुजुर्गों को इस योजना के दायरे में लाया गया है। इसने दिखाया है कि राजनीतिक इच्छाशक्ति, साक्ष्य-आधारित रणनीतियों और निरंतर निवेश से शिशु मृत्यु दर में ही नहीं, बल्कि अन्य स्वास्थ्य चुनौतियों में पर्याप्त कमी लाई जा सकती है। संयुक्त राष्ट्र अंतर-एजेंसी समूह की बाल मृत्युदर आकलन रिपोर्ट में भारत, नेपाल, सेनेगल, घाना व बुरुंडी का उदाहरण दिया गया। वर्ष 2000 से भारत ने पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्युदर में 70 व नवजात शिशुओं की मृत्युदर में 61 प्रतिशत की कमी हासिल की है। स्वास्थ्य कवरेज बढ़ाने, सशक्त स्वास्थ्य नीतियों एवं योजनाओं से मौजूदा स्थिति को सुधारने के लिए किए गए उपायों के कारण ऐसा संभव हुआ है। रिपोर्ट में कहा गया है कि हर गर्भवती महिला मुफ्त प्रसव की हकदार है और शिशु देखभाल संस्थानों में मुफ्त परिवहन, दवाएं, निदान और आहार इसमें सहायता प्रदान करती है। भारत ने प्रसूति प्रतीक्षा गृहों, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य विंग, बीमार नवजात की देखभाल, मातृ देखभाल और जन्म दोष जांच के लिए बुनियादी ढांचे को मजबूत किया है। भारत ने मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए दाइयों व कुशल प्रसव सहायकों के प्रशिक्षण और तैनाती को भी प्राथमिकता दी है। दुनिया भर में लगभग एक अरब बच्चे पहले से ही उच्च जोखिम वाले जलवायु

खतरों का सामना कर रहे हैं और बच्चों के जलवायु जोखिम सूचकांक में भारत 26वें स्थान पर है। रिपोर्ट में पूर्वानुमान व्यक्त किया गया है कि जलवायु संकट बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा पर तथा पानी जैसे आवश्यक संसाधनों तक उनकी पहुंच पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। लेकिन भारत इन स्थितियों में स्वास्थ्य चुनौतियों को कम करने के लिये सशक्त योजनाओं एवं सोच के साथ तत्पर है।

मोदी सरकार की प्रभावी स्वास्थ्य योजनाओं के बावजूद अब भी स्वास्थ्य के मोर्चे पर बहुत कुछ किया जाना बाकी है। बड़ी हकीकत यह भी है कि एक बड़ी संख्या में लोग सरकारी अस्पतालों में मजबूरी में ही उपचार कराना पसंद करते हैं। छोटे शहरों और गांवों में न केवल डॉक्टरों, स्वास्थ्य कर्मियों की कमी है, बल्कि अस्पतालों और मेडिकल उपकरणों की भी। इसके चलते इन क्षेत्रों के लोग शहरों के बड़े अस्पतालों की ओर दौड़ लगाते हैं, जहां निजी क्षेत्र के अस्पतालों के मुकाबले सरकारी अस्पताल बहुत पीछे नजर आते हैं। यह सही है कि बीते कुछ वर्षों में अनेक नए मेडिकल कॉलेज खुले हैं, लेकिन सरकार के सामने बड़ी समस्या है कि इन मेडिकल कॉलेजों से निकले डॉक्टर ग्रामीण इलाकों में सेवाएं देने के लिए तैयार नहीं होते। सरकारी अस्पतालों को सशक्त एवं सर्वसुविधायुक्त किया गया है लेकिन समय के साथ उपचार महंगा होता जा रहा है। यदि किसी गंभीर बीमारी से ग्रस्त व्यक्ति को निजी अस्पताल में उपचार कराना पड़ता है तो वह कर्जे में डूब जाता है। इसका एक कारण यह भी है कि अपने यहां स्वास्थ्य बीमा का उतना चलन नहीं, जितना आवश्यक है। सरकारें इससे अनभिज्ञ नहीं हो सकतीं कि अधिक आयु के लोगों के लिए स्वास्थ्य बीमा महंगा होता जाता है और इसके बाद भी उसमें अच्छा-खासा जीएसटी लगता है। सरकार को अधिक प्रभावी स्वास्थ्य परिणामों के लिये स्वास्थ्य सेवाओं एवं दवाओं को जीएसटी से मुक्त करना चाहिए।

बच्चों की बढ़ती आबादी के साथ नित नई चुनौतियाँ भी बढ़ेंगी। इसलिए इन चुनौतियों से निपटने के लिए बच्चों और युवाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और कौशल विकास में अधिक निवेश करना बहुत जरूरी है। जलवायु परिवर्तन से जुड़े खतरों से बहुत अधिक गर्मी, बाढ़, जंगल में आग और चक्रवात जैसी घटनाओं में आठ गुना वृद्धि होने का अनुमान है और इनका सीधा असर बच्चों पर पड़ेगा। निश्चित ही मोदी सरकार इन चुनौतियों से लड़ने में सक्षम है। एक अच्छा लीडर किसी चीज का ब्लेम थोड़ा ज्यादा लेता है और क्रेडिट लेने के मामले में पीछे रहता है। दरअसल, दीर्घकालिक दृष्टिकोण के बिना कोई भी कार्रवाई स्थायी परिवर्तन लाने में विफल ही रहेगी। इतिहास अक्सर किसी आदमी से ऐसा काम करवा देता है, जिसकी उम्मीद नहीं होती। और जब राष्ट्र की आवश्यकता का प्रतीक कोई आदमी बनता है तब भले ही उसकी प्रशंसा क्यों न हो, उसका कद स्वत: बढ़ जाता है। मोदी ने इस युग को वह दिया जिसकी उसे जरूरत है, वह नहीं जिसकी कि वह प्रशंसा करे।

जीवन को परिभाषित करने तक ही प्रधानमंत्री मोदी उपदेश नहीं देते, अपितु उन्होंने भारत के जीवन को बदलने एवं जीवनस्तर को ऊंचा उठाने के कार्यक्रम दिये हैं जिनमें बूढ़े, बच्चे, महिलाएं, युवा सब होते हैं, वे उनसे सीधा सम्पर्क करते हैं एवं उन्हें दिशाबोध देते हैं। अब संयुक्त राष्ट्र ने मोदी के कार्यों एवं योजनाओं को अनुकरणीय एवं अनूठा माना है तो इससे देश का सीना तना है, गर्व से ऊंचा हुआ है। आपने 'साल' का वृक्ष देखा होगा- काफी ऊंचा! 'शील' का वृक्ष भी देखें- जो जितना ऊंचा है उससे ज्यादा गहरा है। आखिर इस गहराई को मापने वाले संयुक्त राष्ट्र का आभार। जो भी कोई मूल्य स्थापित करता है, जो भी कोई पात्रता पैदा करता है, जो भी कोई सृजन करता है, जो देश का गौरव बढ़ाता है, जो देश की ज्वलंत समस्याओं एवं त्रासदियों से मुक्ति दिलाता है, जो गीतों में गाया जाता है, उसे सलाम। मोदी के मजबूत इरादों एवं मनोबल को सलाम। ■

आखिर इस गहराई को मापने वाले संयुक्त राष्ट्र का आभार। जो भी कोई मूल्य स्थापित करता है, जो भी कोई पात्रता पैदा करता है, जो भी कोई सृजन करता है, जो देश का गौरव बढ़ाता है, जो देश की ज्वलंत समस्याओं एवं त्रासदियों से मुक्ति दिलाता है, जो गीतों में गाया जाता है, उसे सलाम। मोदी के मजबूत इरादों एवं मनोबल को सलाम।

चिंताजनक

भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की ओर दिया जा रहा है विशेष ध्यान

भारत में, नागरिकों की दिनचर्या में आ रही गिरावट एवं खानपान में आए बदलाव के चलते देश में कैंसर के मरीजों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है और इसका इलाज महंगा होने के कारण आम नागरिकों के लिए इस बीमारी का इलाज कराना बहुत मुश्किल कार्य होता जा रहा है।

प्रहलाद सबनानी

प्राचीनकाल में भारत के नागरिकों में स्वास्थ्य के प्रति चेतना का भाव जागृत रहता था। जागरूकता तो यहां तक थी कि किस प्रकार जीवन की दिनचर्या स्थापित हो कि परिवार में कोई बीमार ही नहीं हो, बीमारी का निदान तो आगे की प्रक्रिया रहती है। उस खंडकाल में प्रत्येक नागरिक इतना सजग रहता था कि प्रात:काल एवं सायंकाल में 5/10 किलोमीटर तक नियमित रूप से पैदल चलना एवं योगक्रिया तथा प्राणायाम आदि का अभ्यास नियमित रूप से करता था ताकि शरीर को किसी भी प्रकार का रोग ही नहीं लगे एवं शरीर स्वस्थ बना रहे। इसके साथ ही खानपान, सामान्य दिनचर्या, सूरज डूबने के पूर्व भोजन करना, रात्रि में जल्दी सोना और प्रात:काल में जल्दी उठना, दिन भर मेहनत के कार्य करना, जैसी प्रक्रिया सामान्यजन की हुआ करती थी। परंतु, आज परिस्थितियां बदली हुई सी दिखाई देती हैं। पश्चिमी सभ्यता की ओर बढ़ रहे रुझान के चलते युवाओं के खानपान में आमूलचूल परिवर्तन दिखाई देता है, दिनचर्या में परिवर्तन दिखाई देता है, रात्रि में बहुत देर से सोना और सूर्य नारायण के उदित होने के पश्चात दिन में बहुत देर से उठना आदि कारणों के चलते विभिन्न प्रकार की बीमारियां नागरिकों को घेरने लगी हैं। अत: केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों को नागरिकों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए अपने बजट में विशेष प्रावधान करने पड़ रहे हैं।

आज, केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा यह प्रयास किए जा रहे हैं कि समाज के हर वर्ग तक सस्ती, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं आसानी से पहुंचें और आज सरकार की यह प्राथमिकता बन गई है। देश में नागरिकों तक बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने के लिए केंद्र सरकार द्वारा 175,000 आयुष्मान आरोग्य मंदिर बनाए गए हैं। इन सभी प्रयासों के चलते आज भारत में मातृ मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर में भी व्यापक कमी दृष्टिगोचर हुई है और केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा किए जा रहे प्रयासों के चलते एवं अस्पताल, इलाज और दवा की व्यवस्था के कारण एक सामान्य परिवार में स्वास्थ्य पर होने वाला खर्च निरंतर कम हो रहा है।

भारत में, नागरिकों की दिनचर्या में आ रही गिरावट एवं खानपान में आए बदलाव के चलते देश में कैंसर के मरीजों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है और इसका इलाज महंगा होने के कारण आम नागरिकों के लिए इस बीमारी का इलाज कराना बहुत मुश्किल कार्य होता जा रहा है। अत: केंद्र सरकार ने कैंसर दवाओं के आयात पर कस्टम ड्यूटी को समाप्त कर दिया है। केंद्र सरकार द्वारा, अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वहन करते हुए, सर्वाइकल कैंसर के लिए अब तक लगभग नौ करोड़ महिलाओं की स्क्रीनिंग की जा चुकी है। देश में लगातार बढ़ रही कैंसर के मरीजों की संख्या को देखते हुए देश के समस्त जिलों में आगामी 3 वर्षों के दौरान डे केयर कैंसर सेंटर की स्थापना कर दी जाएगी। इस प्रकार, वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान 200 डे केयर कैंसर सेंटर की स्थापना की जा रही है। इसी प्रकार केंद्र सरकार द्वारा किए गए प्रयासों से दिमागी बुखार से लड़ने में देश को बहुत सफलता मिली है। इससे होने वाली मृत्यु दर अब घटकर छह प्रतिशत रह गयी है। केंद्र सरकार द्वारा चलाए जा रहे राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत टीबी के मरीजों की संख्या भी घटी है। भारत को टीबी मुक्त बनाए जाने का विशेष अभियान चलाया जा रहा है। गर्भवती महिलाओं और बच्चों के टीकाकरण कार्यक्रम की सही ट्रैकिंग रखने के लिए -WIN नामक पोर्टल लॉन्च किया गया है। इस पोर्टल पर अब तक लगभग तीस करोड़ वैक्सीन खुराक दर्ज हो चुकी है। टेली मेडिसिन के माध्यम से तीस करोड़ से अधिक ई-टेली-कन्सल्टेशन से नागरिकों को स्वास्थ्य लाभ मिला है। देश में यदि विभिन्न प्रकार की बीमारियां फैल रही हैं तो इन बीमारियों के पहचानने के लिए उचित संख्या में डॉक्टरों की उपलब्धता बनी रहे एवं विशेष रूप से गांवों में भी डॉक्टर उपलब्ध रहें इस हेतु केंद्र सरकार द्वारा देश में डॉक्टरों की संख्या को बढ़ाने के लिए पिछले 10 वर्षों के दौरान देश के विभिन्न मेडिकल कॉलेजों में 110,000 नई मेडिकल सीटों का सृजन, 130 प्रतिशत की वृद्धि दर के साथ, किया गया है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में 10,000 अतिरिक्त मेडिकल सीटों का सृजन भी किया जा रहा है ताकि आगामी पांच वर्षों के दौरान देश के मेडिकल कॉलेजों में 75,000 नई सीटों के सृजन के लक्ष्य को हासिल किया जा सके। साथ ही, केंद्र सरकार हेल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर और मेडिकल इक्विपमेंट मैन्युफैक्चरिंग को भी बढ़ावा दे रही है। देश में नए बल्क ड्रग और मेडिकल डिवाइसेस के पार्क भी बनाए जा रहे हैं। इनमें रोजगार के अनेक नए अवसर भी उपलब्ध हो रहे हैं। जल जनित बीमारियों के बचाव के उद्देश्य से, विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में स्वच्छ जल उपलब्ध कराने की दृष्टि से, ताकि दूषित जल पीने से होने वाली बीमारियों से नागरिकों की रक्षा की जा सके, केंद्र सरकार द्वारा वर्ष 2019 से जल जीवन मिशन चलाया जा रहा है और अभी तक 15 करोड़ परिवारों (भारत की 80 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या) को इस योजना के अंतर्गत नलों के माध्यम से शुद्ध जल उपलब्ध कराया जा चुका है। स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता की दृष्टि से भारत में निवासरत नागरिक एक तरह से स्वर्ग में निवास कर रहे हैं। अन्यथा, अन्य कई विकसित देशों में आज स्वास्थ्य सेवाएं न केवल अत्यधिक महंगी दरों पर उपलब्ध हो रही हैं बल्कि स्वास्थ्य सेवाओं का समय पर उपलब्ध होना भी बहुत मुश्किल हो रहा है। अमेरिका में किसी नागरिक को यदि किसी डॉक्टर से अपाइंटमेंट लेना हो तो कभी कभी तो एक माह तक इसका इंतजार करना होता है। इमर्जेन्सी की स्थिति में विशेष इमर्जेन्सी अस्पताल में दिखाना होता है, जहां अत्यधिक महंगी स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध होती है। यदि किसी नागरिक के पास स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध नहीं है तो सम्भव है कि पूरे जीवन भर की कमाई इन विशेष इमर्जेन्सी अस्पतालों में खर्च हो जाए। अत: स्वास्थ्य सेवाओं के मामले में अमेरिका में आज डॉक्टर को दिखाकर दवाई लेना अति मुश्किल काम है। इन विकसित देशों के विपरीत, भारत में तो किसी भी मोहल्ले में डॉक्टर को बहुत आसानी से दिखाया जा सकता है एवं तुरंत दवाई ली जा सकती है। आज अमेरिका में स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि वहां के नागरिक बीमार होने की स्थिति में, स्थानीय डॉक्टर से चूंकि तुरंत समय नहीं मिल पाता है अत:, ये बीमार नागरिक आस पास के देशों में जाकर अपना इलाज करा रहे हैं। अमेरिका सहित अन्य विकसित देशों में बिना मेडिकल बीमा के आप इन देशों में जिंदा नहीं रह सकते। अब आप कल्पना करें कि भारत में इलाज कराना कितना आसान है एवं वास्तव में ही इस दृष्टि से हम भारत में एक तरह से स्वर्ग में निवास कर रहे हैं। कुल मिलाकर, देश में उत्तम स्थिति तो यह होनी चाहिए कि देश के नागरिक बीमार ही नहीं पड़ें, यह तभी सम्भव है जब देश के नागरिक अपनी सनातन संस्कृति के संस्कारों का नियमित रूप से अनुपालन पुन: प्रारम्भ करें। यदि ऐसा नहीं हो पाता है तो केंद्र एवं राज्य सरकारों को नागरिकों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए इसी प्रकार अपने बजट में बहुत बड़ी राशि का प्रावधान करते रहना पड़ेगा।

कुल मिलाकर, देश में उत्तम स्थिति तो यह होनी चाहिए कि देश के नागरिक बीमार ही नहीं पड़ें, यह तभी सम्भव है जब देश के नागरिक अपनी सनातन संस्कृति के संस्कारों का नियमित रूप से अनुपालन पुनः प्रारम्भ करें। यदि ऐसा नहीं हो पाता है तो केंद्र एवं राज्य सरकारों को नागरिकों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए इसी प्रकार अपने बजट में बहुत बड़ी राशि का प्रावधान करते रहना पड़ेगा।

गौशाला और इत्र पार्क पर छिड़ी सियासी जंग

समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव ने हाल ही में गौशालाओं को लेकर एक विवादास्पद बयान दिया, जिसमें उन्होंने भारतीय जनता पार्टी पर निशाना साधते हुए कहा कि बीजेपी को दुर्गंध पसंद है, इसलिए वे गौशालाएं बना रहे हैं, जबकि समाजवादी पार्टी सुगंध पसंद करती है, इसलिए उन्होंने इत्र पार्क बनाए।

अजय कुमार

इस बयान के बाद राजनीतिक गलियारों में हलचल मच गई। बीजेपी ने इसे सनातन धर्म का अपमान बताया और कहा कि अखिलेश यादव की यह टिप्पणी हिन्दू परंपराओं का अपमान करने के बराबर है। बीजेपी प्रवक्ता संबित पात्रा ने कहा कि यह बयान न केवल गाय के सम्मान के खिलाफ है, बल्कि यह हिंदू संस्कृति और आस्था पर हमला भी है। उन्होंने यह भी कहा कि समाजवादी पार्टी अब पूरी तरह से वोट बैंक की राजनीति में उलझ चुकी है और इसी कारण इस तरह के बयान दिए जा रहे हैं। अखिलेश यादव का यह बयान ऐसे समय पर आया है जब उत्तर प्रदेश की राजनीति में 2027 के विधानसभा चुनावों की तैयारियां जोरों पर हैं। इस बयान ने उनकी पार्टी के भीतर भी विवाद खड़ा कर दिया है। समाजवादी पार्टी के कई नेता सार्वजनिक रूप से तो कुछ नहीं बोल रहे, लेकिन पार्टी के अंदरखाने में असंतोष की स्थिति उत्पन्न हो गई है। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता और सांसद अवधेश प्रसाद ने कहा कि गाय हमारी माता है और उनका सम्मान किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी का मूल आधार ही समाज के सभी वर्गों का सम्मान करना है और ऐसे बयानों से पार्टी की छवि प्रभावित होती है।

अखिलेश यादव पहले भी कई बार अपने बयानों के कारण विवादों में रह चुके हैं। हाल ही में उन्होंने राणा सांगा को लेकर भी एक विवादास्पद टिप्पणी की थी, जिससे उनकी पार्टी को आलोचनाओं का सामना करना पड़ा था। इसके अलावा, उन्होंने औरंगजेब को लेकर भी कुछ ऐसा कहा था जिससे हिंदू मतदाताओं में नाराजगी देखी गई। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि अखिलेश यादव अपनी राजनीति को बचाने के लिए मुस्लिम वोट बैंक को साधने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन उनकी यह रणनीति उनके परंपरागत यादव वोट बैंक को नुकसान पहुंचा सकती है। यादव समाज का गौ-सेवा से पुराना रिश्ता रहा है। महाभारत काल से लेकर आज तक यादव समुदाय में गाय को लेकर विशेष सम्मान देखा गया है। भगवान श्रीकृष्ण स्वयं यादव कुल में जन्मे थे और उनका जीवन गौ-सेवा में ही बीता। आज भी देश में यादव समुदाय गाय को लेकर अपनी भावनाएं प्रकट करता है और उसे अपनी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा मानता है। मुलायम सिंह यादव भी गौ-सेवा में विश्वास रखते थे और उन्होंने कई बार सार्वजनिक मंचों पर कहा था कि उनके पास जितनी गायें हैं उतनी किसी और नेता के पास नहीं होंगी। जब मुलायम सिंह यादव मुख्यमंत्री थे, तब उन्होंने गौशालाओं को लेकर कई योजनाएं भी बनाई थीं। अखिलेश यादव के इस बयान पर भाजपा ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इसे हिन्दू आस्था का अपमान बताते हुए कहा कि गाय भारतीय संस्कृति की आत्मा है और उसका अपमान सहन नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि अखिलेश यादव का बयान केवल राजनीति से प्रेरित है और यह समाज को बांटने की कोशिश है। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने भी इस बयान की आलोचना की और कहा कि अखिलेश यादव अब पूरी तरह से अपनी राजनीतिक दिशा भूल चुके हैं और सिर्फ वोट बैंक की राजनीति में उलझे हुए हैं। अखिलेश यादव का यह बयान इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि उत्तर प्रदेश में 2027 के विधानसभा चुनाव के लिए राजनीतिक दल अपनी रणनीति बना रहे हैं। बीजेपी अपनी हिंदुत्व की राजनीति को और मजबूत कर रही है और अखिलेश यादव के इस बयान ने बीजेपी को और आक्रामक बना दिया है। राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि अखिलेश यादव के इस बयान से उनका परंपरागत यादव वोट बैंक भी उनसे खिसक सकता है। गाय और गौशालाओं को लेकर अखिलेश यादव के इस बयान से समाज के कई वर्गों में नाराजगी देखी जा रही है। ग्रामीण इलाकों में आज भी गौ-सेवा को विशेष महत्व दिया जाता है और इसे सनातन धर्म का हिस्सा माना जाता है। गाय के गोबर और गौमूत्र का उपयोग आयुर्वेदिक दवाओं और खेती में किया जाता है। कई भारतीय घरों में आज भी गौ-सेवा की परंपरा कायम है। ऐसे में अखिलेश यादव का बयान न केवल राजनीतिक रूप से नुकसानदायक हो सकता है, बल्कि यह समाज के एक बड़े वर्ग की भावनाओं को भी ठेस पहुंचा सकता है।

बीजेपी पूरी तरह से हिंदुत्व की राजनीति को धार देने में लगी हुई है और ऐसे में अखिलेश यादव के इस तरह के बयान बीजेपी को ही फायदा पहुंचा सकते हैं। अंततः यह स्पष्ट है कि राजनीति में बयानबाजी करते समय नेताओं को सतर्क रहना चाहिए, ताकि उनके शब्द समाज में सकारात्मक संदेश पहुंचाएं और किसी की भावनाओं को ठेस न पहुंचे।

समाजवादी पार्टी के कुछ नेताओं ने अखिलेश यादव से अपील की है कि वे अपने बयान को स्पष्ट करें, ताकि इससे होने वाले संभावित नुकसान से बचा जा सके। यह भी संभव है कि आने वाले दिनों में अखिलेश यादव इस पर सफाई दें और कहें कि उनके बयान को तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया है। यह पहला मौका नहीं होगा जब अखिलेश यादव को अपने बयान पर सफाई देनी पड़ी हो। इससे पहले भी वे कई बार अपने बयानों से पलट चुके हैं। बीजेपी इस पूरे मुद्दे को भुनाने में लगी हुई है। बीजेपी के नेता इसे हिंदू आस्था से जोड़कर दिखा रहे हैं और अखिलेश यादव को हिंदू विरोधी साबित करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। उत्तर प्रदेश में पहले ही समाजवादी पार्टी को मुस्लिम तुष्टीकरण के लिए जाना जाता है और अब इस बयान के बाद बीजेपी को एक और मुद्दा मिल गया है। बीजेपी की आईटी सेल इस बयान को लेकर सोशल मीडिया पर जमकर प्रचार कर रही है और अखिलेश यादव की छवि को नुकसान पहुंचाने का हरसंभव प्रयास कर रही है। उत्तर प्रदेश की राजनीति में यादव वोट बैंक का विशेष महत्व है। बीजेपी लंबे समय से यादवों को अपनी ओर आकर्षित करने की कोशिश कर रही है। मध्य प्रदेश में यादव मुख्यमंत्री बनाकर बीजेपी ने यह संदेश दिया था कि वे यादवों को भी सत्ता में उचित प्रतिनिधित्व दे रहे हैं। इसके अलावा, केंद्र सरकार में भी यादव समुदाय से कई मंत्री बनाए गए हैं। इन सबके जरिए बीजेपी यह बताना चाहती है कि समाजवादी पार्टी की तरह ही बीजेपी भी यादवों की हितैषी है। ऐसे में यदि अखिलेश यादव इसी तरह विवादित बयान देते रहे, तो यादव वोट बैंक का एक बड़ा हिस्सा बीजेपी की ओर जा सकता है। उत्तर प्रदेश में राजनीति के जानकारों का मानना है कि अखिलेश यादव को अपने बयानों में सावधानी बरतनी चाहिए और ऐसे मुद्दों पर टिप्पणी करने से बचना चाहिए, जो समाज के एक बड़े वर्ग की भावनाओं को आहत कर सकते हैं। गाय भारतीय संस्कृति और परंपरा का महत्वपूर्ण हिस्सा रही है, और उसके प्रति सम्मान व्यक्त करना सभी नेताओं की जिम्मेदारी होनी चाहिए। राजनीति में धर्म और आस्था से जुड़े मुद्दों पर बयान देते समय विशेष सतर्कता बरतनी चाहिए, क्योंकि ऐसे मुद्दे लोगों की भावनाओं से सीधे जुड़े होते हैं। अखिलेश यादव के इस बयान के बाद अब यह देखना दिलचस्प होगा कि वे इस पर क्या स्पष्टीकरण देते हैं और समाजवादी पार्टी इस पूरे विवाद को कैसे संभालती है। क्या अखिलेश यादव इस बयान से पीछे हटेंगे, या फिर अपने बयान पर कायम रहेंगे, यह देखना बाकी है। फिलहाल बीजेपी इस मुद्दे को छोड़ने के मूड में नहीं दिख रही और आने वाले चुनावों में यह बयान सपा के खिलाफ एक बड़े हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। समाजवादी पार्टी के लिए यह समय राजनीतिक रूप से काफी महत्वपूर्ण है। अगर अखिलेश यादव सही रणनीति नहीं अपनाते हैं, तो आगामी चुनावों में उन्हें नुकसान उठाना पड़ सकता है। बीजेपी पूरी तरह से हिंदुत्व की राजनीति को धार देने में लगी हुई है और ऐसे में अखिलेश यादव के इस तरह के बयान बीजेपी को ही फायदा पहुंचा सकते हैं।अंततः यह स्पष्ट है कि राजनीति में बयानबाजी करते समय नेताओं को सतर्क रहना चाहिए, ताकि उनके शब्द समाज में सकारात्मक संदेश पहुंचाएं और किसी की भावनाओं को ठेस न पहुंचे। ■

अभिव्यक्ति की आजादी पर कभी सख्त तो कभी नरम सुप्रीम कोर्ट

संजय सक्सेना

कांग्रेस सांसद इमरान प्रतापगढ़ी को सुप्रीम कोर्ट से मिली अंतरिम राहत के बाद विभिन्न क्षेत्रों से मिश्रित प्रतिक्रियाएं सामने आई हैं। यह मामला अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सांप्रदायिक सौहार्द, और न्यायिक प्रक्रियाओं के बीच संतुलन को लेकर महत्वपूर्ण बहस का केंद्र बन गया है। बता दें कि 21 जनवरी 2025 को सुप्रीम कोर्ट ने इमरान प्रतापगढ़ी के खिलाफ गुजरात के जामनगर में दर्ज एफआईआर पर अंतरिम रोक लगा दी है। यह एफआईआर उनके द्वारा सोशल मीडिया पर पोस्ट की गई एक वीडियो क्लिप को लेकर दर्ज की गई थी, जिसमें बैकग्राउंड में 'ऐ खून के प्यासे बात सुनो' कविता चल रही थी। शिकायतकर्ता का आरोप था कि यह कविता भड़काऊ है और सांप्रदायिक तनाव बढ़ा सकती है।

कुछ विपक्षी नेताओं ने सुप्रीम कोर्ट के निर्णय की आलोचना यह तर्क देते हुए की कि न्यायपालिका को ऐसे मामलों में सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए जहां सांप्रदायिक सौहार्द प्रभावित हो सकता है। उन्होंने यह भी सवाल उठाया कि क्या यह निर्णय कानून के समक्ष सभी के लिए समानता के सिद्धांत के अनुरूप है। उधर, कानूनी विशेषज्ञों ने सुप्रीम कोर्ट के इस निर्णय को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना है। उन्होंने कहा कि यह मामला पुलिस और न्यायपालिका के लिए एक संकेत है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मामलों में संवेदनशीलता और समझ की आवश्यकता है। इसी तरह से कई सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इमरान प्रतापगढ़ी के समर्थन में आवाज उठाई, यह कहते हुए कि उनकी कविता का उद्देश्य अहिंसा और प्रेम का संदेश देना था, न कि सांप्रदायिक तनाव बढ़ाना। उन्होंने यह भी कहा कि कला और साहित्य को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के दायरे में सुरक्षित रखा जाना चाहिए।

बात सोशल मीडिया की कि जाये तो यहां पर जनता की प्रतिक्रियाएं मिश्रित रहीं। कुछ लोगों ने सुप्रीम कोर्ट के निर्णय का समर्थन किया, जबकि अन्य ने चिंता व्यक्त की कि इस तरह के निर्णय सांप्रदायिक सौहार्द को प्रभावित कर सकते हैं। दरअसल, भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19(1)(एं) प्रत्येक नागरिक को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार प्रदान करता है। हालांकि, यह अधिकार पूर्णत: असीमित नहीं है; अनुच्छेद 19(2) के तहत, राज्य को कुछ निश्चित परिस्थितियों में इस स्वतंत्रता पर उचित प्रतिबंध लगाने का अधिकार है, जैसे कि देश की संप्रभुता और अखंडता, राज्य की सुरक्षा, विदेशी राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध, सार्वजनिक व्यवस्था, शालीनता या नैतिकता, अदालत की अवमानना, मानहानि, या अपराध के लिए उकसाना। 2016 में, सुप्रीम कोर्ट ने भारतीय दंड संहिता की धारा 499 और 500 के तहत आपराधिक मानहानि कानून की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखा। न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा और न्यायमूर्ति प्रफुल्ल सी पंत की खंडपीठ ने निर्णय दिया कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार पूर्ण नहीं है और इसे दूसरों की प्रतिष्ठा के अधिकार के साथ संतुलित किया जाना चाहिए। अदालत ने कहा,'हमने माना है कि दंडात्मक प्रावधान संवैधानिक रूप से वैध हैं। अभिव्यक्ति की आजादी कोई असीम अधिकार नहीं है।' बहरहाल, यहां यह भी याद रखना चाहिए कि 2020 में इसी सुप्रीम कोर्ट ने वरिष्ठ वकील प्रशांत भूषण को उनके दो ट्वीट्स के लिए अदालत की अवमानना का दोषी ठहराया, जिनमें उन्होंने न्यायपालिका की आलोचना की थी। इस फैसले की व्यापक आलोचना हुई, जिसमें इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर खतरनाक प्रभाव डालने वाला बताया गया। ह्यूमन राइट्स वॉच ने इस निर्णय पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा था कि इससे न्यायपालिका की वैध आलोचना पर खौफनाक असर पड़ सकता है।

जनवरी 2023 में, सुप्रीम कोर्ट की पांच-न्यायाधीशों की संविधान पीठ ने निर्णय दिया कि किसी मंत्री द्वारा दिए गए बयान को सरकार का आधिकारिक बयान नहीं माना जा सकता। अदालत ने कहा कि मंत्रियों, सांसदों, विधायकों और उच्च पदों पर बैठे व्यक्तियों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर कोई अतिरिक्त पाबंदी की आवश्यकता नहीं है। यह मामला उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मंत्री आजम खान के एक बयान से संबंधित था, जिसमें उन्होंने एक आपराधिक घटना को राजनीतिक साजिश बताया था। लब्बोलुआब यह है कि सुप्रीम कोर्ट के विभिन्न निर्णयों से स्पष्ट होता है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता महत्वपूर्ण है, लेकिन यह पूर्ण नहीं है और इसे अन्य अधिकारों और समाज के हितों के साथ संतुलित किया जाना आवश्यक है। अदालत के फैसले इस संतुलन को स्थापित करने का प्रयास करते हैं, हालांकि इन निर्णयों पर विभिन्न दृष्टिकोणों से बहस और आलोचना होती रही है। इससे इतर सुप्रीम कोर्ट अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर कभी काफी सख्त को कभी बेहद नरम नजर आता है। कांग्रेस सांसद इमरान प्रतापगढ़ी को भले ही सुप्रीम कोर्ट से राहत मिल गई हो,लेकिन वह विवादित शेरों शायरी से सुर्खियां बटोरते रहते हैं। कभी वह माफिया अतीक अहमद की शान में कसीदे पढ़ने के चलते भी विवादों में रह चुके हैं। शायरी के जरिये सियासत की दुनिया में दाखिल होने वाले इमरान प्रतापगढ़ी ने कुछ वर्ष पूर्व प्रयागराज में एक कार्यक्रम के दौरान खतरनाक गुंडे अतीक अहमद की जमकर तारीफ की थी। इमरान प्रतापगढ़ी, अतीक अहमद की शान में कसीदे पढ़ते हुए कह रहे हैं कि,'इलाहाबाद वालों मेरी एक बात याद रखना, कई सालों तक कोई अतीक अहमद होगा। मुझे इस बात का अंदाजा है कि एक शख्स इस शहर में बैठा यही, जो सबकुछ संभाल लेगा।' प्रतापगढ़ी ऐसी ही शेरो शायरी माफिया मुख्तार अंसारी की शान में भी पढ़ चुके थे,जिसकी चंद लाइनों मे उन्होंने अपने को मुख्तार के रूप में पेश करते हुए कहा था,' एक पटाखा भी फोड़ा तो बम लिख दिया, जितनी मोहब्बत है इस मुल्क से,उससे कहीं ज्यादा मैं वफादार हूं। हाँ मैं मुख्तार हूँ, हाँ मैं मुख्तार हूँ।

ADVANCE GROUP OF GLASS INDUSTRIES

MANUFACTURERS AND EXPORTERS

*Handicraft Glass Art Wares *Lead Glass Tubing *Soda Lime Glass Tubing *Fancy Glass Tumblers & Giftware Items* Glass Lanterns Chimneys *Glass Inner For Vacuum Flasks *Table Wares * Glass Bangles *Liquor Bottles *Perfume Bottles *Biological Equipments *Thermo Ware Items *GLS Lamp Shells

With Best Compliments For

PRADEEP KUMAR GUPTA

CHAIRMAN

ASSOCIATE CONCERNS

* ADVANCE GLASS WORKS
* ORIENTAL GLASS WORKS
* OM GLASS WORKS PRIVATE LIMITED
* MODERN GLASS INDUSTRIES
* ADARSH KANCH UDHYOG PRIVATE LIMITED
* ADVANCE LAMP COMPONENT & TABLE WARES PRIVATE LIMITED
* GREEN ORCHID

HEAD OFFICE

105, Hanuman Ganj, Firozabad- 283203 (Uttar Pradesh) INDIA
TEL: +91 5612 221796, MOB: +91 9837 082 127, 9897 012 063
email: info@advanceglassworks.com
omglassworkspvtltd@gmail.com
website: www.advanceglass.in

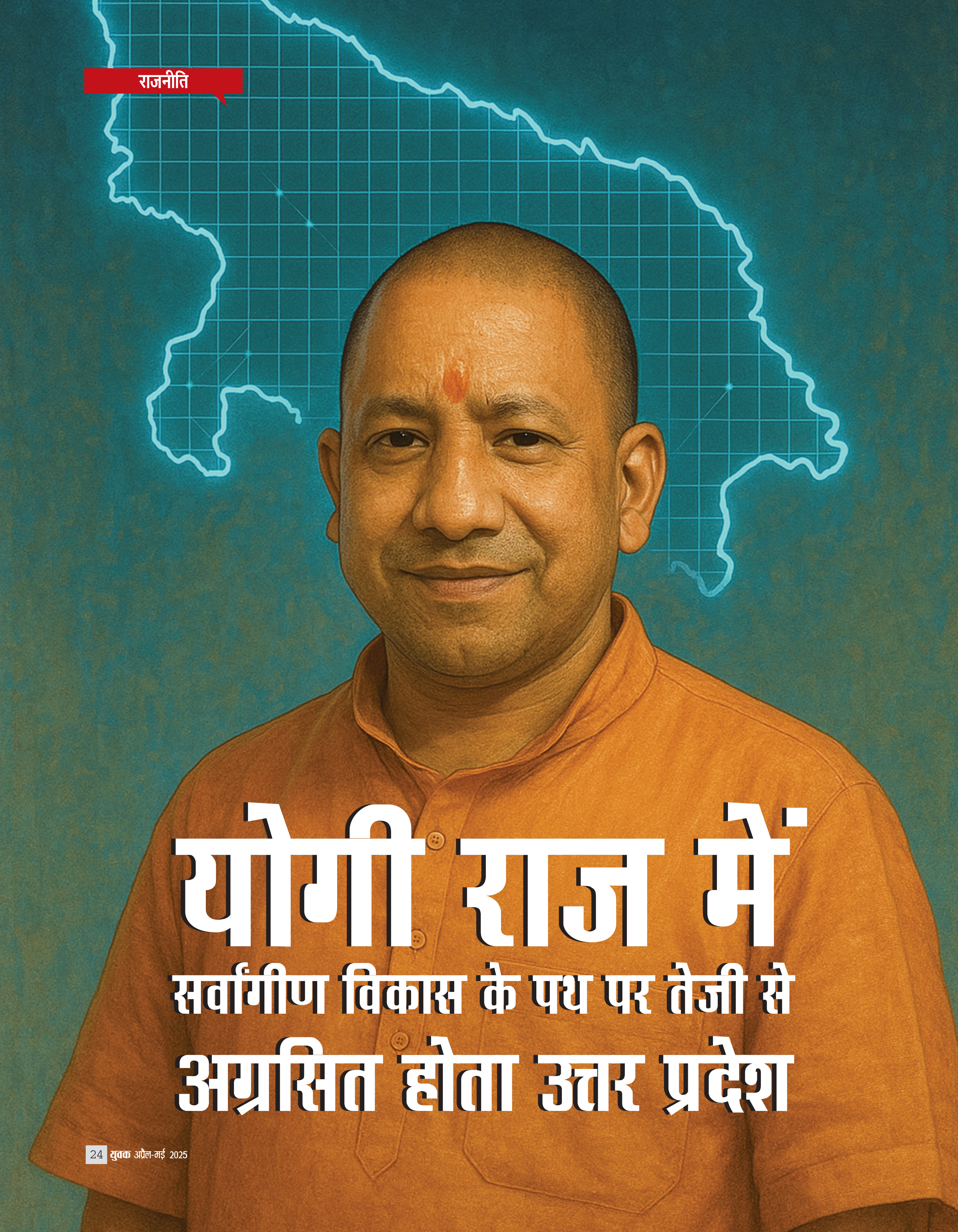

योगी राज में

सर्वांगीण विकास के पथ पर तेजी से अग्रसित होता उत्तर प्रदेश

शुभम त्यागी

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 25 मार्च 2025 को अपने दूसरे कार्यकाल के तीन वर्ष पूरे कर लिए हैं। वहीं योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में लगातार आठ वर्ष तक कार्य करने का एक नया कीर्तिमान बना दिया हैं। सख्त, ईमानदार व एक विजनरी प्रशासक वाली कार्यशैली के दम पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ प्रदेश व देश के साथ-साथ पार्टी में भी एक भरोसेमंद ब्रांड बनकर के स्थापित हो गये हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की लोकप्रियता का आलम यह हो गया है कि एक तरफ तो देश के हर राज्य के चुनावों में प्रचार के लिए योगी आदित्यनाथ की मांग निरंतर होती है, वहीं दूसरी तरफ अब योगी की कार्यशैली के देश ही नहीं बल्कि दुनिया में भी आये दिन चर्चाएं होती रहती हैं। वैसे भी जिस तरह से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पिछले आठ वर्षों के अपने शासन के दौरान उत्तर प्रदेश के शासन व पुलिस-प्रशासन की कार्यशैली में जबरदस्त ढंग से सुधार करते हुए, दशकों से सरकारी तंत्र की तरह-तरह के हस्तक्षेप, माफियागिरी, भ्रष्टाचार व राजनीतिक हस्तक्षेप के चलते कुंद हो चुकी धार को तेज करते हुए, उसे आम जनमानस व देश के हित में कार्य करने के लिए प्रेरित करने का कार्य बखूबी किया है, जोकि बेहद ही काबिले-तारीफ है और जिसका परिणाम अब स्पष्ट रूप से शासन व पुलिस-प्रशासन की कार्यशैली में आये सकारात्मक बदलाव के रूप में राज्य के आम जनमानस को नज़र आने लगा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली सरकार ने दमदार ढंग से सत्ता में आठ वर्ष का अपना लंबा कार्यकाल 25 मार्च 2025 को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। जोकि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले मुख्यमंत्री के रूप में योगी आदित्यनाथ के नाम पर एक बहुत बड़ी ऐतिहासिक उपलब्धि इतिहास में दर्ज हो गयी है। देश के हर कोने में योगी आदित्यनाथ की कार्यशैली के बड़ी संख्या में आम व खास लोग प्रसंशक होते जा रहे हैं। शानदार कार्यशैली के दम पर अपने प्रथम कार्यकाल में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ देश व दुनिया में बुलडोजर बाबा के नाम से मशहूर हो गए थे। उनके बुलडोजर ने उत्तर प्रदेश के बड़े से बड़े माफियाओं की सल्तनत को ध्वस्त करने का कार्य बेखौफ होकर के किया है, आज देश के अधिकांश राज्य अपराध व अपराधियों पर नकेल कसने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की कार्यशैली की नकल करने में लगे हुए हैं, जो उनकी एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। नियम-कायदे व कानून पसंद देशभक्त देशवासियों व उत्तर प्रदेश के निवासियों के लिए योगी आदित्यनाथ के प्रथम कार्यकाल की तरह ही दूसरे कार्यकाल से भी लोगों को बहुत ही ज्यादा उम्मीदें थीं। जिस पर जनता की अदालत में योगी आदित्यनाथ अपने दूसरे कार्यकाल में भी पूरी तरह से खरे उतरते

नजर आ रहे हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रयासों ने अब उत्तर प्रदेश को एक बीमारू राज्य की श्रेणी से निकल कर के देश में दूसरे पायदान पर लाकर के खड़ा कर दिया है, जो योगी आदित्यनाथ सरकार की बड़ी उपलब्धि है।

जो लोग यूपी की अर्थव्यवस्था को वन ट्रिलियन इकनॉमी करके देश में विकास की अग्रणी पंक्ति पर स्थापित होता देखना चाहते हैं, योगी आदित्यनाथ उन लोगों के सपने को जल्द से जल्द ही धरातल पर सरकार करने के लिए दिन-रात जुटे हुए हैं और वर्ष 2029 तक उन्होंने इस लक्ष्य को हासिल करने की समय सीमा भी तय कर रखी है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ यह भी अच्छे से जानते हैं कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जल्द से जल्द देश की अर्थव्यवस्था को फाईव ट्रिलियन इकनॉमी की बनते हुए देखने का जो सपना देखा हैं, इस सपने को पूरा करने का रास्ता उत्तर प्रदेश की गलियों से होकर ही गुजरता है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अच्छे से जानते हैं कि उत्तर प्रदेश में जितनी तेजी से सभी क्षेत्रों का बिना किसी भेदभाव के विकास होगा, उतनी ही तेजी के साथ ही देश की अर्थव्यवस्था के फाईव ट्रिलियन इकनॉमी बनने का भी रास्ता साफ होगा और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व देश के देशभक्त आम जनमानस का सपना भी धरातल पर साकार होता नजर आयेगा।

वैसे भौगोलिक रूप से देखा जाए तो उत्तर प्रदेश एक बहुत बड़े क्षेत्रीय विस्तार वाला राज्य है, जिसके चलते पूरे राज्य का सर्वांगीण विकास करना एक बहुत बड़ी चुनौती है। लेकिन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस चुनौती को स्वीकारते हुए उत्तर प्रदेश के सभी क्षेत्रों के विकास के लिए योजनाएं बना कर, उन्हें तेजी से धरातल पर अमलीजामा पहनाने का कार्य बखूबी किया है। धरातल पर जाकर के देखें तो उत्तर प्रदेश में सर्वांगीण विकास को तेज गति देने वाले आधारभूत ढांचे का निर्माण कार्य योगी राज में बहुत ही तेजी से जगह-जगह चल रहा है। प्रदेश के गांव, कस्बे व शहरों के निवासियों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए योगी सरकार धरातल पर निरंतर कार्य कर रही है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुरूप उत्तर प्रदेश की ताकत उसकी एकजुटता में है, जिसके चलते ही उत्तर प्रदेश के चारों हिस्से पूर्वांचल, बुंदेलखंड, अवध क्षेत्र व पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गांव, कस्बों व शहरों में बड़े पैमाने पर विकास का एक पूरा सशक्त आधारभूत ढांचा योगी राज में तैयार हो रहा है। उत्तर प्रदेश में अब योगी के प्रयासों से ही डबल इंजन की सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों के मार्ग, सड़क मार्ग, हाईवे, एक्सप्रेस-वे, रेल, मेट्रो, एयरपोर्ट, रेपिड रेल, जल मार्ग, डेडिकेटिड फ्रेट कॉरिडोर, डिफेंस कॉरिडोर, औधोगिक क्षेत्र, राज्य में दूर दराज के गांव तक भी इंटरनेट, अत्याधुनिक कोल्डस्टोरेज की सुविधा, वन डिस्ट्रिक्ट-वन प्रोडक्ट आदि के सपने को धरातल पर मूर्त रूप दिया है। वहीं योगी आदित्यनाथ ने देश व दुनिया में बसे करोड़ों सनातन धर्म के अनुयायियों के धार्मिक पर्यटन के उद्देश्य से राम मंदिर निर्माण, अयोध्या, काशी व मथुरा का विकास, प्रयागराज में महाकुंभ 2025 में विश्व स्तरीय अत्याधुनिक महाकुंभ नगरी का निर्माण करके लगभग 66 करोड़ से अधिक लोगों को संगम पर स्नान करा कर के, उत्तर प्रदेश व देश की अर्थव्यवस्था को तरक्की के पंख लगा कर के राज्य में विकास के नये आयाम स्थापित करने का कार्य किया है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राज्य में भयमुक्त माहौल बनाने के लिए पूरे प्रदेश में ही बेहद सख्त व प्रभावी कदम उठाए हैं। उनकी सख्ती के चलते ही उत्तर प्रदेश पुलिस ने योगी सरकार के पिछले आठ वर्षों के कार्यकाल में माफिया व अपराधियों की कमर तोड़ने का कार्य बखूबी से किया है। योगी सरकार ने राज्य में 222 दुर्दांत अपराधियों को मुठभेड़ में मार गिराने कार्य किया है। मुठभेड़ के दौरान 8,118 अपराधी घायल हुए हैं। वहीं आम जनमानस में खौफ पैदा करने वाले 79,984 खतरनाक अपराधियों के विरुद्ध गैंगस्टर एक्ट के तहत कार्रवाई की गई है। वहीं योगी आदित्यनाथ सरकार ने वर्ष 2017 से वर्ष दिसंबर 2024 तक चिन्हित 68 माफियाओं के लंबित मुकदमों में प्रभावी पैरवी करते हुए 73 अभियोगों में 31 माफियाओं और 74 सह अपराधियों को आजीवन कारावास व अर्थदंड की सजा दिलवाने का कार्य भी किया है और दो अपराधियों को सजा ए मौत फांसी भी सुनाई गई है, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की यह रणनीति उत्तर प्रदेश में भयमुक्त माहौल बनाने के सपने को धरातल पर साकार करने का कार्य करती है।

हालांकि उत्तर प्रदेश में निवास करने वाले लोगों को समय से रोटी, कपड़ा, मकान, रोजगार, शिक्षा व चिकित्सा आदि जैसी सभी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाना, किसी भी सरकार के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। क्योंकि उसको पूरा करने के लिए सरकार में बैठे लोगों के बेहतरीन विजन व राजकोष में अथाह धन की आवश्यकता होती है, जिस जिम्मेदारी को योगी सरकार ने बखूबी संभालने का कार्य किया है। उत्तर प्रदेश के निवासियों के लिए अच्छी बात यह है कि योगी राज में यूपी बीमारू राज्यों की श्रेणी से बाहर आ गया है। राज्य की पूर्ववर्ती सरकारों में व्याप्त भ्रष्टाचार व अपराध योगी राज में कम होने के चलते, यूपी फिर से देश व दुनिया के निवेशकों की पसंद बनने लगा है, योगी की नीतियों से यूपी सरकार की खाली झोली अब खजाने से भरने लगी है। योगी सरकार की नीतियों व सहयोगात्मक रवैये के चलते राज्य में अब बहुत बड़े पैमाने पर देश व दुनिया से निवेश आना शुरू हो गया है। राज्य में औधोगिक विकास एक बार फिर से तेज गति पकड़ने लगा है। कुछ सरकारी आंकड़ों की बात करें तो योगी आदित्यनाथ की कार्यशैली व नीतियों के चलते ही योगी सरकार के प्रथम कार्यकाल में ही उत्तर प्रदेश ईज ऑफ डूइंग बिजनेस की राष्ट्रीय रैंकिंग में 12 पायदान से ऊपर उठकर 2 नंबर पर आ गया था। राज्य सरकार ने निवेशकों की सुविधा के लिए निवेश मित्र पोर्टल की शुरुआत करने का कार्य किया है, प्रदेश के 43 विभागों की 487 से अधिक महत्वपूर्ण सेवाएं ऑनलाइन कर दी गयी हैं। योगी आदित्यनाथ की सरकार राज्य में निवेशकों को आकर्षित करने के लिए ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट का आयोजन करवा रही है। राज्य में अकेले एमएसएमई सेक्टर में ही 90 लाख से अधिक रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं, निर्यात का आंकड़ा 2 लाख करोड़ तक पहुंच गया है। जो स्थिति यूपी के सर्वांगीण विकास व औद्योगिक विकास की रफ्तार के दृष्टिकोण से एक बहुत ही अच्छा संकेत है। जिसके चलते ही योगी सरकार में 45 लाख करोड़ रुपए के निवेश के प्रस्ताव अभी तक आ चुके हैं, जिसमें से 15 लाख करोड़ रुपए का निवेश अभी तक धरातल पर मूर्त रूप ले चुका है, लगभग 60 लाख लोगों को रोजगार मिल चुका है, बहुत जल्द जीडीपी 30 लाख करोड़ के आंकड़े को पार करने वाली है, अर्थव्यवस्था की रफ्तार दोगुनी हो चुकी है।

योगी राज की शुरुआत से जिस तरह से राज्य में माफियाओं पर और शासन व पुलिस-प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने पर काम हुआ, वह सराहनीय है। जिसके चलते ही उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ के नाम पर लोगों ने भाजपा को दूसरी बार सत्ता सौंपने का कार्य किया था। क्योंकि उन्हे पूर्ण विश्वास था कि वह योगी सरकार में पूर्ण रूप से सुरक्षित रह सकते हैं, लोगों के इस सपने को साकार करने के लिए योगी ने अपराध मुक्त व जाति और धर्म के नाम पर होने वाली आये दिन की हिंसा पर सख्ती से अंकुश लगाते हुए, उत्तर प्रदेश की नकारात्मक छवि को सकारात्मक छवि में बदलते हुए आम जनमानस की उम्मीदों पर खरा उतरने का कार्य किया है, योगी की बुलडोजर नीति ने अपराधियो में जबरदस्त खौफ पैदा करने का कार्य किया है।

योगी सरकार ने उत्तर प्रदेश के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को हासिल करने के लिए किसानों के लिए विभिन्न योजना बनाकर के उनको धरातल पर अमलीजामा पहनाने का कार्य बखूबी किया है, किसानों की आय को बढ़ाने के लिए योगी सरकार निरंतर प्रयास कर रही है। योगी सरकार कृषि लागत को कम करते हुए, किसानों की उपज को बढ़ाने के लिए कार्य करते उनको फसलों का उचित मूल्य दिलवाने के लिए निरंतर कार्य कर रही है, कृषि का आधुनिकीकरण करने का कार्य कर रही है। योगी की सरकार में बच्चों, महिलाओं व बुजुर्गों की सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा गया है। शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र को बेहतर बनाने के लिए योगी आदित्यनाथ की सरकार निरंतर उसका आधुनिकरण करने का कार्य कर रही है। योगी सरकार की नीतियों से राज्य में धार्मिक पर्यटन को पंख लगें हैं, अकेले महाकुंभ 2025 में ही लगभग 3 से 3.5 लाख करोड़ रुपए का व्यापार हुआ है। योगी राज में युवाओं को सरकारी व निजी क्षेत्र में नौकरी के अवसर भी मिल रहे हैं, योगी आदित्यनाथ के राज में सरकारी तंत्र युवा उद्यमी तैयार करके स्टार्टअप को बढ़ावा देने का कार्य कर रहा है, जिसके दम पर ग्रामीण, कस्बे व शहरी क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़े हैं।

वैसे भी निष्पक्ष रूप से आंकलन करें तो बड़ी संख्या में उत्तर प्रदेश का आम जनमानस मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के अभी तक के कार्यकाल से बेहद संतुष्ट नजर आता हैं, वह योगी राज में अपने जान-माल को सुरक्षित समझता है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार ने जिस तरह से राज्य में धर्म संस्कृति व प्राचीन परंपराओं का सम्मान किया है, वह काबिले-तारीफ है। आम जनमानस के दिलो-दिमाग में योगी के कार्यकाल की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि जो उत्तर प्रदेश कभी अपराधियों व तरह-तरह के माफियाओं से थरथर कांपता हुआ नजर आता था, आज उस ही उत्तर प्रदेश में अपराधी व माफिया योगी राज की जीरो टॉलरेंस की नीतियों से थरथर कांपते हुए नज़र आते हैं। जिसके चलते ही अब देश व दुनिया के लोगों को लगने लगा हैं कि योगी आदित्यनाथ सरकार में उत्तर प्रदेश सर्वांगीण विकास के पथ पर बहुत ही तेजी के साथ अग्रसरित है। ■

हारे हुए विपक्षी नेता ने कहा

संतोष उत्सुक

हम सरकार बनाते ही इस अनुभवहीन सरकार के कामकाज को रिव्यू करेंगे। जब चुनी हुई सरकार के किसी नुमायंदे ने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया तो हारे हुए नेता ने ज्यादा सख्त बयान दिया। उन्होंने कह डाला, शासक पार्टी के बंदों का, कुछ दिनों बाद, सड़क पर चलना मुश्किल हो जाएगा। बहुत समझदार जनता ने लोकतांत्रिक तरीके से सरकार चुनी। घोड़ों का व्यापार बंद रहा। सरकारें अगर स्पष्ट बहुमत से चुनी जाती रही तो सचमुच पैसा उगाऊ व्यापार का क्या होगा। मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री भी बनाए गए ताकि सरकार की सफलता के लिए पारम्परिक क्षेत्रीय, जातीय, सभी पक्षीय संतुलन बना रहे। हारे हुए, सुविधाहीन नेता ने पहला बयान दिया, यह सरकार अपना ही बोझ नहीं सह पाएगी। कुछ दिन तो ऐसे लगा बहुत भारी बयान दिया है। अगला बयान आया, इस सरकार ने लालच देकर चुनाव जीता। रविवार को शांत रहकर सोमवार को दावा किया कि पांच वर्ष से पहले ही हमारी पार्टी सत्ता पर काबिज होगी। इस खतरनाक कथन से लगा, किसी से उनकी संजीदा बातचीत चल रही है। फिर एक दिन बाजार में मिले कुछ लोगों से कहा, इन्हें सरकार चलानी नहीं आती। सरकार बदले की भावना से कार्य कर रही है। हमारी पार्टी की सरकार ने आज तक, बदले की भावना से कार्य नहीं किया। भोली भाली जनता ठगा ठगा महसूस कर रही है। बिना चुनाव लडे खास लोगों को केबिनेट स्तर का रुतबा दिया है। हम सरकार बनाते ही इस अनुभवहीन सरकार के कामकाज को रिव्यू करेंगे। जब चुनी हुई सरकार के किसी नुमायंदे ने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया तो हारे हुए नेता ने ज्यादा सख्त बयान दिया। उन्होंने कह डाला, शासक पार्टी के बंदों का, कुछ दिनों बाद, सड़क पर चलना मुश्किल हो जाएगा। उन्होंने यह नहीं बताया कि अंदाजन कितने दिनों बाद ऐसा होने वाला है। उनसे रहा नहीं गया, कुछ दिन बाद बोले हमारी विचारधारा नहीं हारी है, सरकार की उलटी गिनती शुरू हो चुकी है। नेताजी ने हार का ठीकरा चुनाव आयोग, ईवीएम, दुर्भाग्य और ठण्ड वगैरा पर फोड़ते हुए कहा कि इनकी पार्टी ने धन, बल और शराब के माध्यम से चुनाव प्रभावित किया। नैतिकता की हत्या कर दी है। उन्होंने चुनाव हारकर भी, सहयोग के लिए सभी का धन्यवाद किया। कहा, अब हम विपक्ष की रचनात्मक भूमिका निभाएंगे। उन्होंने वोट न देने वालों को रोजाना मनपसंद गालियां देते हुए, भगवान से अनुरोध किया कि एक बार उनकी, एक बार हमारी सरकार बनने का आशीर्वाद दें। जनता ने विकास को अनदेखा कर, हमें धोखा देकर इस सरकार को बनाया है। भगवान कुछ ऐसी विकट परिस्थितियां पैदा करें कि सरकार ठीक से काम न कर सके, इनकी पार्टी में गतिरोध पैदा हो जाए, बीमारी फैल जाए और जनता दुखी हो जाए। जल्दी नहीं तो पांच साल बाद तो चुनाव हार ही जाएं और हमारी सरकार आ जाए। जब सरकार नौ महीने तक सुचारू चलती रही तो उन्हें एहसास हुआ कि यह सरकार तो पांच साल निकाल ही लेगी और वे सचमुच चुनाव हार गए हैं। अब नेताजी ने महात्मा बुद्ध के बताए मार्ग पर नंगे पांव चलना शुरू कर दिया है।

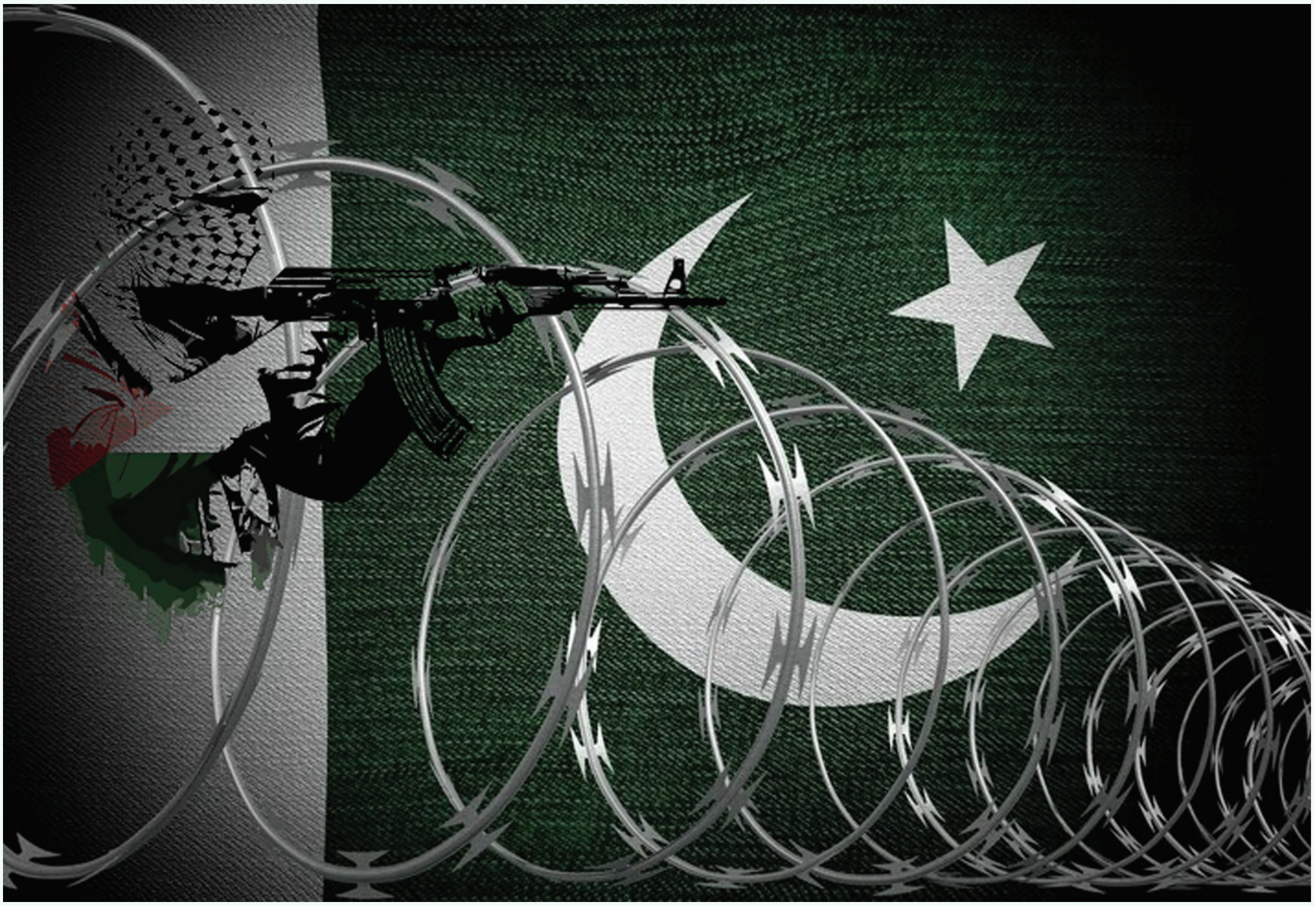

संकट में पाकिस्तान

अंदर-बाहर हर तरफ हाहाकार

पड़ोसी देश पाकिस्तान चौतरफा मुसीबतों से घिरता जा रहा है। चीन की दोस्ती उसे डूबों रही है तो भारत और अफगानिस्तान से दुश्मनी उसे भारी पड़ रही है। अमेरिका में भी ट्रम्प सरकार आने के बाद वहां से पाकिस्तान पर मेहरबानियों का सिलसिला थम गया है।

हरिश्चंद्र शर्मा

पाकिस्तान के अंदरूनी हालात भी कम खराब नहीं है। एक तरफ पाक अधिकृत कश्मीर यानी पीओके,सिंध प्रांत की जनता पाकिस्तान सरकार के खिलाफ जहर उगल रही है,वहीं ब्लूचिस्तान प्रांत की विद्रोही जनता तो पाकिस्तान की अखंडता के लिये ही खतरा बन गया है।यहां के लोग पाकिस्तान से अलग पूर्ण आजादी चाहते हैं। इसके चलते बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी और पाकिस्तान सेना के बीच लगातार संघर्ष होता रहता है। हद तो तब हो गई जब 11 मार्च 2025 को बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) ने क्वेटा से पेशावर जा रही जाफर एक्सप्रेस ट्रेन को ही हाईजैक कर लिया, जिसमें लगभग 440 यात्री सवार थे। इस हमले में बीएलए ने ट्रेन को रोककर यात्रियों को बंधक बना लिया और सुरक्षाबलों पर हमला किया, जिससे 21 यात्रियों और 4 अर्धसैनिक बलों के जवानों की मौत हो गई। पाकिस्तानी सेना ने जवाबी कार्रवाई में 33 आतंकवादियों को मार गिराया और बचे हुए यात्रियों को सुरक्षित छुड़ा लिया।

इस घटना के बाद, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने राष्ट्रीय एकता का आह्वान किया और आतंकवाद के खिलाफ सख्त कार्रवाई की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा समिति की बैठक बुलाई, जिसमें सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक में आतंकवाद के खिलाफ रणनीतिक राजनीतिक संकल्प और बेहतर शासन की आवश्यकता पर बल दिया गया। इसके अतिरिक्त, पाकिस्तानी सेना ने इस हमले के लिए भारत को दोषी ठहराया, हालांकि उन्होंने इसके समर्थन में कोई ठोस सबूत प्रस्तुत नहीं किया। भारत ने इन आरोपों को खारिज किया है। ट्रेन हाईजैक के बाद, बलूच विद्रोहियों ने बलूचिस्तान के नोशकी इलाके में पाकिस्तानी सेना के काफिले पर एक और बड़ा हमला किया, जिसमें कई सैनिक हताहत हुए। यह घटना बलूच विद्रोहियों की बढ़ती गतिविधियों को दर्शाती है, जो बलूचिस्तान में अधिक स्वायत्तता और संसाधनों पर नियंत्रण की मांग कर रहे हैं। इन घटनाओं के मद्देनजर, पाकिस्तानी सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर ने देश को सख्त राष्ट्र बनाने और आतंकवाद के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने बेहतर शासन और राजनीतिक संकल्प की आवश्यकता पर भी जोर दिया, ताकि आतंकवाद का प्रभावी ढंग से मुकाबला किया जा सके। पाकिस्तानी सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर ने 18 मार्च, 2025 को अपने एक बयान में पाकिस्तान को एक कठोर राज्य में बदलने की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि आतंकवाद के खिलाफ संघर्ष देश के अस्तित्व के लिए एक लड़ाई है। जनरल मुनीर ने यह टिप्पणी राष्ट्रीय सुरक्षा पर संसदीय समिति की एक उच्चस्तरीय बैठक में की, जो बलूच आतंकवादियों द्वारा एक यात्री ट्रेन का अपहरण करने के कुछ दिनों बाद बुलाई गई थी, जिसके परिणामस्वरूप 25 यात्रियों की मौत हो गई थी। मुनीर ने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ संघर्ष हमारे और हमारी भावी पीढ़ियों के अस्तित्व की लड़ाई है। उन्होंने बेहतर शासन और पाकिस्तान को एक कठोर राज्य बनाने का आह्वान किया और पूछा, हम कब तक एक नरम राज्य की शैली में अनगिनत लोगों की जान कुर्बान करते रहेंगे? जनरल मुनीर ने कहा, स्थायी विकास के लिए, राष्ट्रीय शक्ति के सभी तत्वों को सामंजस्य के साथ काम करना होगा। बात बलूचिस्तान, के भौगोलिक और राजनैतिक परिदृश्य की कि जाये तो यह पाकिस्तान का सबसे बड़ा प्रांत, लंबे समय से देश के लिए एक गंभीर सुरक्षा चुनौती बना हुआ है। यहां के अलगाववादी आंदोलन, प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण की मांग, और मानवाधिकार उल्लंघन के आरोप पाकिस्तान की स्थिरता के लिए खतरा बने हुए हैं। दरअसल, 1947 में भारत से अलग मुसलमानों के लिये पाकिस्तान देश बनने के बाद, बलूचिस्तान के कलात राज्य ने पाकिस्तान में विलय से इंकार कर दिया था। हालांकि, 1948 में पाकिस्तानी सेना ने इस पर कब्जा कर लिया, जिससे बलूच राष्ट्रवादियों में असंतोष बढ़ा। तब से, बलूचिस्तान में कई बार विद्रोह हुए हैं, जिनमें 1950, 1960, 1970 और 2000 के दशक शामिल हैं। पिछले कुछ वर्षों में, बलूच अलगाववादी समूहों की गतिविधियों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 2015 से 2024 के बीच, इन समूहों द्वारा किए गए हमलों की संख्या चार गुना बढ़कर 171 हो गई है। इन हमलों में लगभग 590 लोग मारे गए हैं, जिनमें पाकिस्तानी सेना के जवान भी शामिल हैं। गौरतलब हो बलूचिस्तान प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है, जिसमें गैस, सोना, और तांबा शामिल हैं। हालांकि, स्थानीय निवासियों का आरोप है कि इन संसाधनों का लाभ उन्हें नहीं मिलता, बल्कि पाकिस्तान के अन्य प्रांतों को मिलता है। यह आर्थिक असंतोष अलगाववादी भावनाओं को बढ़ावा देता है। ब्लूचिस्तान हमेशा से पाकिस्तान सेना की हैवानियत का भी शिकार होता रहा है। बलूच कार्यकर्ताओं और नागरिक समाज के सदस्यों के जबरन गायब होने की घटनाएं बलूचिस्तान में आम हैं। वॉयस फॉर बलूच मिसिंग पर्सन्स (वीबीएमपी) के अनुसार, बलूचिस्तान से 7,000 से ज्यादा लोग लापता हैं। हालांकि, सरकारी आंकड़े इससे कम हैं, लेकिन यह मुद्दा स्थानीय निवासियों में गहरा असंतोष पैदा करता है। बलूचिस्तान में यहां के निवासियों के भारी विरोध के बाद भी चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (सीपीईसी) और अन्य विदेशी निवेश परियोजनाएं चल रही हैं,जबकि अलगाववादी समूह इन परियोजनाओं को अपने संसाधनों के शोषण के रूप में देखते हैं और इन्हें निशाना बनाते हैं। अगस्त 2024 में बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) ने एक घातक हमला किया, जिसमें 50 से अधिक लोग मारे गए। फरवरी 2025 में कलात जिले में एक बड़े संघर्ष में 18 पाकिस्तानी अर्धसैनिक बलों और 23 विद्रोहियों मतलब बीएलए के सदस्यों की मौत हुई थी। बलूचिस्तान में जारी संघर्ष पाकिस्तान के लिए कई मोर्चों पर खतरा पैदा कर रहा है। लगातार हमलों से पाकिस्तान सुरक्षा बलों पर दबाव बढ़ता है और देश की आंतरिक स्थिरता खतरे में पड़ती है।सीपीसीई जैसी महत्वपूर्ण परियोजनाओं पर हमलों से विदेशी निवेशकों का विश्वास कम होता है, जिससे आर्थिक विकास प्रभावित होता है। वहीं मानवाधिकार उल्लंघन के आरोपों से पाकिस्तान की अंतरराष्ट्रीय छवि धूमिल होती है, जिससे कूटनीतिक संबंध प्रभावित होते हैं।

अफगानिस्तान-पाकिस्तान के बीच खींची तलवारें

अफगानिस्तान और पाकिस्तान में तनाव की वजह पर नजर दौड़ाई जाये तो दोनों देशों के बीच डुरंड रेखा विवाद का बड़ा कारण है। 1893 में ब्रिटिश शासन द्वारा खींची गई डुरंड रेखा को अफगानिस्तान ने कभी मान्यता नहीं दी है। यह सीमा विवाद दोनों देशों के बीच तनाव का एक ऐतिहासिक स्रोत है। उधर, पाकिस्तान का आरोप है कि तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान अफगानिस्तान की जमीन से संचालित होकर पाकिस्तान में आतंकी हमले कर रहा है। पाकिस्तान ने अफगान तालिबान से टीटीपी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है, लेकिन तालिबान ने इसे अस्वीकार कर दिया है। हाल ही में, तोरखम सीमा चौकी पर पाकिस्तानी और अफगान सुरक्षा बलों के बीच झड़पें हुई हैं, जिससे कम से कम एक व्यक्ति की मौत और कई घायल हुए हैं। यह संघर्ष सीमा पर एक नए चौकी के निर्माण को लेकर हुआ, जिससे तनाव और बढ़ गया है। दिसंबर 2024 में, पाकिस्तान ने अफगानिस्तान के पक्तिका प्रांत में टीटीपी के ठिकानों पर हवाई हमले किए, जिसमें कई नागरिकों की मौत हुई। अफगान रक्षा मंत्रालय ने इन हमलों की निंदा की और इसे अंतरराष्ट्रीय सिद्धांतों का उल्लंघन बताया।

चीन के चंगुल में फंसता पाकिस्तान

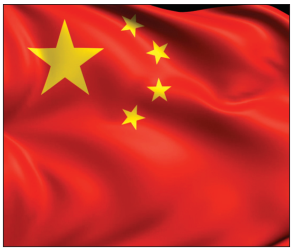

चीनी ने पाकिस्तान को लोन देकर अपने चंगुल में फंसा लिया है। पाकिस्तान ने चीन से सबसे अधिक लोन दिया है। यह लोन लगभग 28.6 बिलियन डॉलर है, जो उसके कुल कर्ज का 22 प्रतिशत है। विश्व बैंक के अनुसार, देश पर कुल मिलाकर लगभग 130 अरब डॉलर का कर्ज है। आज पाकिस्तान की हालत बेहद खस्ता है। यहां तक कि वहां पर आटे-दाल-चावल, सब्जियां और दूध तक आम आदमी की पहुंच से दूर जा चुके हैं। देश में बेरोजगारी चरम पर है। पाकिस्तान ने अपनी नाजुक वित्तीय स्थिति के चलते आईएमएफ से आपातकालीन फंड मांगता रहा है। हालांकि, चीन के लिए पाकिस्तान चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) का घर है। यह चीन के पश्चिमी प्रांतों को बलूचिस्तान के ग्वादर बंदरगाह से जोड़ने वाला लगभग 3,000 किलोमीटर लंबा गलियारा है। कहने का तात्पर्य यह है कि चीन पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान को कर्ज देकर वहां अपना आधिपत्य बनाता जा रहा है।

विवादित मुद्दा

कैसे रुक पायेगा राजनीति में बढ़ता अपराधीकरण

उक्त रिपोर्ट से पता चला कि 1861 विधायकों ने अपने खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज होने की घोषणा की है। इसमें 1205 पर हत्या, हत्या की कोशिश, अपहरण और महिलाओं के खिलाफ अपराध जैसे गंभीर आरोप हैं।

रमेश सर्राफ धमोरा

हमारे देश के राजनेताओं में दिन-प्रतिदिन नैतिकता कम होती जा रही है। कई बड़े नेता आए दिन विवादास्पद बयान देखकर चर्चाओं में बने रहते हैं। वहीं बहुत से निर्वाचित विधायकों, सांसदों, मंत्रियों सहित अन्य जनप्रतिनिधियों पर अपराधिक मामले दर्ज हो रहें हैं। जिससे राजनीति के क्षेत्र में काम करने वालों की छवि खराब होती जा रही है। देश की राजनीति में आज अपराध का इतना घालमेल हो गया है कि पता ही नहीं चलता कि कौन सा जनप्रतिनिधि अपराधी है और किसकी छवि स्वच्छ है। अपराधी प्रवृत्ति के लोगों के नेता बनने से जहां राजनीतिक दागदार हुई है। वहीं नेताओं की जनता की दूरी भी बढ़ने लगी है। मौजूदा समय में राजनीतिक व्यवसाय बन चुकी है। राजनीति में वही लोग सफल होते हैं जो या तो बड़े नेताओं के परिवार से है या फिर बहुत पैसे वाले हैं। राजनीति के क्षेत्र में अब सेवा, संगठन, वफादार कार्यकर्ताओं का कोई महत्व नहीं रह गया है। राजनीति पूरी तरह पैसों की चकाचौंध में लिप्त हो गई है। एक समय था जब धरातल पर काम करने वाला पार्टी कार्यकर्ता आगे चलकर जनप्रतिनिधि बनता था। जमीन से उठकर आगे आने वाला नेता आम जनता से जुड़ा रहता था और वह जनता के सुख-दुख से वाकिफ भी होता था। इसलिए वह आमजन के हित में काम करता था। मगर अब लोग पैसे के बल पर पैराशूट से उतरकर राजनीति करने लगे हैं। वह पैसे के बल पर ही चुनाव जीत जाते हैं।

इसलिए उन्हें आमजन की समस्याओं से कोई लेना-देना नहीं रहता है। ऐसे नेता पांच सितारा संस्कृति के वाहक होते हैं। ऐसे नेता राजनीति में आने के लिए पहले खूब पैसा खर्च करते हैं और जब किसी पद पर पहुंच जाते हैं तो जमकर भ्रष्टाचार कर पैसा कमाते हैं। ऐसे लोगों के कारण ही आज राजनीति समाज सेवा की बजाय व्यवसाय बन गई है।

1971 के लोकसभा चुनाव में झुंझुनू सीट पर देश के सबसे बड़े औद्योगिक घराने के कृष्ण कुमार बिड़ला को हराने वाले शिवनाथ सिंह गिल को मैंने 1998 से 2003 में विधायक के रूप में देखा है। वह अपने क्षेत्र से जयपुर जाते या अपने घर से विधानसभा जाते हमेशा सरकारी बस का ही उपयोग करते थे। कभी निजी गाड़ियों से नहीं घूमते थे। इसी के चलते उन्होंने राजनीति में 50 साल लंबी पारी खेली थी। वह ईमानदार थे इसीलिए ईमानदारी से रहते थे। आज हम देखते हैं कि राजनीतिक दलों के छोटे-छोटे कार्यकर्ता भी कई लाख रूपयों की महंगी गाड़ियों में घूमते हैं। पार्टी का कोई नेता उनसे यह नहीं पूछता है कि इतनी महंगी गाड़ियां खरीदने के लिए पैसे कहां से आता है। सबको पता है की राजनीति में आज छूट-भैया नेता भी सत्ता की दलाली में पैसा कमा रहे हैं। दलाली के पैसों में बड़े नेताओं का भी हिस्सा होता है। इसीलिए उनकी तरफ कोई अंगुली नहीं उठाता हैं। चुनाव सुधार पर काम करने वाली एक गैर सरकारी संगठन एसोसिएशन ऑफ डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स की एक रिपोर्ट में सामने आया है कि देश के 45 प्रतिशत विधायकों पर आपराधिक मामले दर्ज हैं। इस संगठन ने देश के 28 राज्यों और विधानसभा वाले तीन केंद्र शासित प्रदेशों के कुल 4123 विधायकों में से 4092 के चुनावी हलफनामे का विश्लेषण किया है। जिसमें आंध्र प्रदेश के सबसे ज्यादा 174 में से 138 यानी 79 प्रतिशत विधायकों ने जबकि सिक्किम में सबसे कम 32 में से सिर्फ एक विधायक 3 प्रतिशत ने अपने खिलाफ आपराधिक मामले घोषित किए हैं। तेलुगु देशम पार्टी के सबसे ज्यादा 134 विधायकों में से 115 यानि 86 प्रतिशत पर आपराधिक मामले दर्ज हैं।

उक्त रिपोर्ट से पता चला कि 1861 विधायकों ने अपने खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज होने की घोषणा की है। इसमें 1205 पर हत्या, हत्या की कोशिश, अपहरण और महिलाओं के खिलाफ अपराध जैसे गंभीर आरोप हैं। रिपोर्ट के अनुसार 54 विधायकों पर भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत हत्या के आरोप हैं। वहीं 226 पर धारा 307 और भारतीय न्याय संहिता की धारा 109 के तहत हत्या की कोशिश के आरोप हैं। इसके अलावा 127 विधायकों पर महिलाओं के खिलाफ अपराधों के मामले दर्ज हैं। इनमें 13 पर भारतीय न्याय संहिता की धारा 376 और 376 (2)(द) के तहत बलात्कार का आरोप है। धारा 376 (2)(द) एक ही पीड़ित के बार-बार यौन उत्पीड़न से संबंधित है। एसोसिएशन ऑफ डेमोक्रेटिक

रिफॉर्म्स की रिपोर्ट के अनुसार 543 लोकसभा सदस्यों में से 251 (46 प्रतिशत) के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज हैं। उनमें से 27 को दोषी ठहराया गया है। रिपोर्ट के अनुसार लोकसभा में चुने जाने वाले आपराधिक आरोपों का सामना कर रहे उम्मीदवारों की यह सबसे बड़ी संख्या है। कुल 233 सांसदों (43 प्रतिशत) ने अपने खिलाफ आपराधिक मामले घोषित किए थे। जबकि 2014 में 185 (34 प्रतिशत), 2009 में 162 (30 प्रतिशत) और 2004 में 125 (23 प्रतिशत) सांसदों के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज हैं। 2024 में लोकसभा के लिये चुने गये 251 उम्मीदवारों में से 170 (31 प्रतिशत) पर बलात्कार, हत्या, हत्या का प्रयास, अपहरण और महिलाओं के खिलाफ अपराध सहित गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं। विश्लेषण से पता चला कि यह 2019 में 159 (29 प्रतिशत) सांसदों, 2014 में 112 (21 प्रतिशत) सांसदों और 2009 में 76 (14 प्रतिशत) सांसदों की तुलना में भी वृद्धि है।

एडीआर के अनुसार 18वीं लोकसभा में सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी बीजेपी के 240 विजयी उम्मीदवारों में से 94 (39 प्रतिशत) ने आपराधिक मामले घोषित किए हैं। कांग्रेस के 99 विजयी उम्मीदवारों में से 49 (49 प्रतिशत) ने आपराधिक मामले घोषित किए हैं और समाजवादी पार्टी के 37 उम्मीदवारों में से 21 (45 प्रतिशत) पर आपराधिक आरोप हैं। विश्लेषण में पाया गया कि 63 (26 प्रतिशत) बीजेपी उम्मीदवार, 32 (32 प्रतिशत) कांग्रेस उम्मीदवार और 17 (46 प्रतिशत) समाजवादी पार्टी उम्मीदवारों ने गंभीर आपराधिक मामले घोषित किए हैं। इसमें कहा गया है कि सात (24 प्रतिशत) टीएमसी उम्मीदवार, छह (27 प्रतिशत) डीएमके उम्मीदवार, पांच (31 प्रतिशत) टीडीपी उम्मीदवार और चार (57 प्रतिशत) शिवसेना उम्मीदवार गंभीर आपराधिक मामलों का सामना कर रहे हैं।

रिपोर्ट के अनुसार केरल के 20 में से 19 (95 प्रतिशत) सांसदों पर आपराधिक मामले दर्ज हैं जिनमें से 11 गंभीर अपराधों से जुड़े हैं। तेलंगाना के 17 में से 14 (82 प्रतिशत), ओडिशा के 21 में से 16 (76 प्रतिशत), झारखंड के 14 में से 10 (71 प्रतिशत) और तमिलनाडु के 39 में से 26 (67 प्रतिशत) सांसदों के खिलाफ आपराधिक मुकदमे लंबित हैं। वहीं उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, बिहार, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में लगभग 50 प्रतिशत सांसदों पर आपराधिक मामले दर्ज हैं। दूसरी ओर हरियाणा 10 और छत्तीसगढ़ 11 सांसद में केवल एक-एक सांसद पर आपराधिक मामले दर्ज हैं। पंजाब के 13 में से 2, असम के 14 में से 3, दिल्ली के 7 में से 3, राजस्थान के 25 में से 4, गुजरात के 25 में से 5 और मध्य प्रदेश के 29 में से 9 सांसदों पर आपराधिक मामले लंबित हैं। एक जनवरी 2025 तक वर्तमान या पूर्व विधायकों के खिलाफ कुल 4,732 आपराधिक मामले लंबित थे। इनमें सबसे ज्यादा उत्तर प्रदेश में 1,171 मामले दर्ज हैं। ओडिशा (457), बिहार (448), महाराष्ट्र (442), मध्य प्रदेश (326), केरल (315), तेलंगाना (313), कर्नाटक (255), तमिलनाडु (220), झारखंड (133) और दिल्ली (124) मुकदमे लंबित हैं। उपरोक्त आंकड़ों को देखने से लगता है कि हमारे देश की राजनीति में आपराधियों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। यदि समय रहते इस पर लगाम नहीं लगाई गई तो यह देश के लिए एक बड़ा नासूर बन जाएगी। एक समय ऐसा होगा जब राजनीति का पूरी तरह अपराधीकरण हो जाएगा और स्वच्छ छवि के लोग राजनीति से दूर होते चले जाएंगे। ऐसी स्थिति देश के लिए अच्छी नहीं होगी। सरकार को भी इस दिशा में कड़े कदम उठाने होंगे तभी राजनीति में बढ़ती अपराधियों की संख्या पर लगाम लग पाएगी। ■

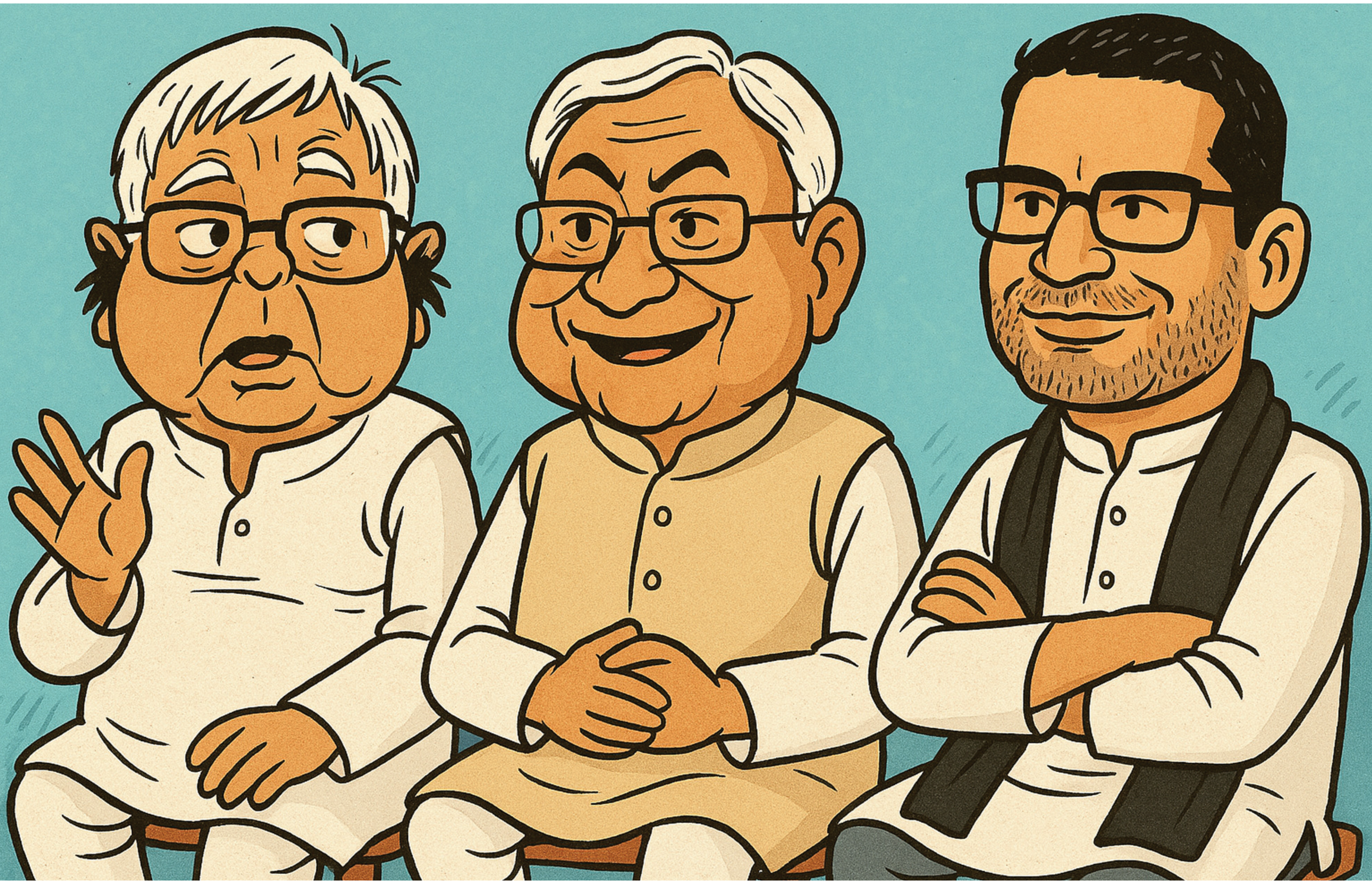

बिहार की राजनीति में छोटी-छोटी पार्टियां

ला सकती हैं बड़ा बदलाव

भारतीय राजनीति में बिहार को सियासी प्रयोगशाला समझा जाता है। यहां पर कई ऐसे दिग्गज राजनेता हुए, जिसे चुनावी मौसम विज्ञानी तक करार दिया गया। इनमें पूर्व केंद्रीय मंत्री स्व. रामविलास पासवान और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का नाम अग्रगण्य है। चूंकि बिहार विधानसभा 2025 के लिए अक्टूबर–नवम्बर में चुनावी होने हैं, इसलिए यह महत्वपूर्ण चुनावी साल भी है, जिसके दृष्टिगत सभी राजनीतिक दल अपने अपने समीकरण बनाने में जुट गए हैं।

यूँ तो राज्य में कुल 243 सीटें हैं और दो बड़े गठबंधन हैं। जिनमें भाजपा और जेडीयू आदि की भागीदारी वाला एनडीए अभी सत्ता में है और कांग्रेस व आरजेडी आदि की भागीदारी वाला महागठबंधन विपक्ष में है। वहीं, दोनों ही गठबंधन में कुल 10 महत्वपूर्ण राजनीतिक पार्टियां हैं, जो जाति-धर्म-क्षेत्र के आधार पर या फिर कहें कि खुद को सत्ता में बनाए रखने की संभावनाओं के आधार पर भारी उलटफेर करती रहती हैं, जिससे भाजपा और कांग्रेस जैसे बड़े दलों का सियासी कद भी उनके सहयोगियों की जिद्द के समक्ष बौना नजर आता है। यहां की राजनीति में जदयू सुप्रीमो व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गठबंधन में उलटफेर का ऐसा कीर्तिमान स्थापित किया है कि बिहार के कई सारे सियासी रिकॉर्ड को उन्हें ध्वस्त कर अपने नाम कर लिया है। वहीं, नीतीश कुमार और पूर्व मुख्यमंत्री व राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद की सियासी हनक से प्रेरणा लेते हुए कई ऐसे राजनीतिक दल अस्तित्व में आए हैं, जो अपने अपने इलाकों में अच्छे-खासे सक्रिय नजर आ रहे हैं और किसी भी प्रतिद्वंद्वी के सियासी भविष्य को मटियामेट करने लायक व्यापक प्रभाव रखते हैं। इनमें नवस्थापित जनसुराज पार्टी के सर्वेसर्वा प्रशांत किशोर के अलावा पुष्पम प्रिया, असदुद्दीन ओवैसी और आरसीपी सिंह आदि की पार्टी प्रमुख है, क्योंकि ये नेता ना तो लालू यादव-कांग्रेस के खेमे से जुड़े हैं और ना ही नीतीश कुमार-बीजेपी के खेमे में हैं।

इसलिए यह समझा जा सकता है कि 2025 के विधानसभा चुनाव में इन नेताओं की पार्टियां किसी तीसरे मोर्चे के रूप में उभर रही हैं, जो पारंपरिक गठबंधनों से अपनी अलग और अलहदा पहचान बनाने की कोशिश में जुटी हुई हैं। कहने का तातपर्य यह कि ये दल स्वतंत्र रूप से अपनी अपनी राजनीतिक गतिविधियों में लगे हुए हैं, जो यदि बिहार विधानसभा की 10-20 प्रतिशत सीटें भी जीतने में कामयाब हो गए तो नीतीश कुमार और लालू प्रसाद का रिमोट कंट्रोल अपने हाथ में रखने में सफल होंगे। भारतीय इतिहास में चंपारण आंदोलन के बाद महात्मा गांधी जिस तरह से पूरे देश में चमके और सम्पूर्ण क्रांति के बाद जयप्रकाश नारायण जिस तरह से समूचे राष्ट्र में लोकप्रिय हुए, उससे यहां की सियासी हवा को समझा जा सकता है। वैसे भी हिंदी पट्टी की राजनीति गैर कांग्रेस और गैर भाजपा राजनीति के लिए मुफीद समझी जाती है, जबकि लंबे समय तक कांग्रेस ने और फिर भाजपा ने इसे मनमाफिक हांका है। लालू प्रसाद और नीतीश कुमार इसी सियासी दांवपेंच की सफल पैदाइश समझे जाते हैं। हालांकि, बिहार की नई पीढ़ी अब इस तरह की घाती-प्रतिघाती राजनीति से ऊब चुकी है। इसलिए साल 2025 में वहां कुछ नया करिश्मा हो जाए तो कोई हैरत की बात नहीं होगी। आप मानें या न मानें, लेकिन बिहार की राजनीति को पड़ोसी प्रान्त उत्तरप्रदेश, झारखंड और पश्चिम बंगाल

> **भारतीय इतिहास में चंपारण आंदोलन के बाद महात्मा गांधी जिस तरह से पूरे देश में चमके और सम्पूर्ण क्रांति के बाद जयप्रकाश नारायण जिस तरह से समूचे राष्ट्र में लोकप्रिय हुए, उससे यहां की सियासी हवा को समझा जा सकता है।**

और पड़ोसी देश नेपाल व बंगलादेश की राजनीति भी प्रभावित करती है। पाकिस्तान और अरब देशों की सियासत का प्रभाव भी बैक डोर से यहां की राजनीति पर पड़ती है, इसलिए यहां की राजनीति को एकतरफा रूप से प्रभावित करने में कभी लालू प्रसाद सफल हुए तो कभी नीतीश कुमार। अब आगे की लड़ाई उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी (भाजपा), पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव (राजद), चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर (जनसुराज पार्टी) और युवा तुर्क नेता कन्हैया कुमार (कांग्रेस) के बीच यदि सिमट जाए तो किसी के लिए हैरत की बात नहीं होगी। वैसे भी सम्राट चौधरी का सियासी ग्राफ सबसे ऊपर चल रहा है, क्योंकि आरएसएस और भाजपा, दोनों को उनमें अपना सियासी भविष्य दिख रहा है। नीतीश कुमार के स्वाभाविक विकल्प के तौर पर वो उभरे हैं।

आपकी सियासी याद तरोताजा कर दें कि बिहार में 2020 के विधानसभा चुनाव में 212 पार्टियों ने हिस्सा लिया था, जबकि 2024 के लोकसभा चुनाव में 96 पार्टियां मैदान में उतरी थीं। यह बात अलग है कि 2020 के बिहार विधानसभा चुनाव में दर्जनों पार्टियां ऐसी थीं, जिन्होंने सिर्फ एक-एक सीट पर ही अपने उम्मीदवार उतारे थे। वहीं, कई पार्टियों ने 2, 3, 4, 5, 6 उम्मीदवारों को टिकट दिए थे। इससे राजद को परोक्ष लाभ मिला था, जिससे वह मजबूत तो हुई लेकिन सत्ता तक नहीं पहुंच पाई।

तब बिहार में एनडीए की सरकार बनी, ब्रेक के बाद अभी भी वहां पर एनडीए की ही सरकार है। क्योंकि 2020 के चुनाव में एनडीए ने 125 और महागठबंधन ने 110 सीटें जीती थीं। लेकिन कुशल सियासी रणनीति वश वर्तमान में एनडीए के खेमे में 129 विधायक हैं, जिनमें बीजेपी के 80, जेडीयू के 45 और जीतनराम मांझी की हम पार्टी के 4 विधायक हैं। वहीं, विपक्ष के पास 107 विधायक हैं, जिनमें आरजेडी के 77, कांग्रेस के 19 और सीपीआई (एमएल)/CPI (ML) के 11 विधायक हैं। यहां पर बहुमत के लिए 122 विधायक होना जरूरी है। ऐसे में 45 विधायकों वाले नीतीश कुमार का मुख्यमंत्री बनना अपने आप में एक सियासी करिश्मा नहीं तो क्या है?

बता दें कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) में भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी), जनता दल (यूनाइटेड), हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (हम), लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास), राष्ट्रीय लोक मोर्चा (आरएलएम) आदि के नाम प्रमुख हैं। वहीं, महागठबंधन में राष्ट्रीय जनता दल (राजद), भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अलावा वामपंथी दलों में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी), भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) लिबरेशन का नाम प्रमुख है। इसी गठबंधन में मुकेश सहनी की विकासशील इंसान पार्टी का नाम भी शामिल है। वहीं, कुछ ऐसी कद्दावर पार्टियां भी हैं जो देखने में भले ही किसी गठबंधन में नहीं हैं, लेकिन उनकी रिमोट कंट्रोल भी भाजपा या कांग्रेस से सहानुभूति रखने वाले किसी बड़े नेता या उनके मित्र उद्योगपति के पास है, जिनमें जनसुराज पार्टी, बहुजन समाज पाटी, आम आदमी पार्टी, ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन, प्लूरल्स पार्टी, आप सबकी आवाज, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) आदि का नाम प्रमुख है। ऐसे में समझा जा सकता है कि दोनों गठबंधनों का राजनीतिक भविष्य इन्हीं पार्टियों के कद्दावर उम्मीदवार तय करेंगे।

इसलिए सुलगता सवाल है कि तीसरे मोर्चे का आगामी चुनाव में क्या प्रभाव पड़ेगा। क्योंकि देश में भले ही भाजपा की लहर चल रही है, लेकिन वक्फ बोर्ड संशोधन बिल, औरंगजेब और राणा सांगा प्रकरण आदि का मिलाजुला असर भी यहां देखने को मिल सकता है। इस लिहाज से जन सुराज पार्टी के चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर ने सबसे पहले जिस जन सुराज अभियान की शुरुआत की और पूरे राज्य में पदयात्रा की, फिर 2 अक्टूबर 2024 को राजनीतिक दल का ऐलान किया, उसका सकारात्मक असर लोगों के दिलोदिमाग पर पड़ा है। चूंकि जनसुराज पार्टी ने अपना चुनावी पदार्पण नवंबर 2024 में बिहार की चार विधानसभा सीटों इमामगंज, बेलागंज, रामगढ़, और तरारी के उपचुनावों में किया, जिनमें भले ही पार्टी के सभी चारों उम्मीदवार हार गए और उसके तीन उम्मीदवारों की जमानत तक जब्त हो गई, लेकिन तीन सीटों पर पार्टी तीसरे स्थान पर रही, जबकि रामगढ़ में चौथे स्थान पर रही। इससे इसकी सियासी पैठ बनाने की संभावना यहां बरकरार है।

इन उपचुनावों में पार्टी को कुल मिलाकर लगभग 66,000 वोट मिले। पार्टी के प्रदर्शन पर प्रशांत किशोर ने ठीक ही कहा है कि हमारी नवगठित पार्टी ने चारों सीटों पर करीब 10% वोट हासिल किए। जबकि आगामी बिहार विधानसभा चुनावों के लिए उनके पास तैयारी के लिए पर्याप्त समय है।

यही वजह है कि पिछले 6 महीने से जन सुराज पार्टी भी अपने संगठनात्मक ढांचे को निरंतर मजबूत करने में जुटी हुई है और बिहार में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराने की कोशिश कर रही है। पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर ने बिहार के विभिन्न जिलों का दौरा किया है और संगठन को खड़ा करने के लिए ताकत झोंकी है। उन्हें भले ही सवर्ण नेता कहकर बदनाम किया जा रहा है, लेकिन बिहार की पिछड़ा बहुल राजनीति में, उनकी सियासी पार्टी के एक मजबूत राजनीतिक विकल्प के रूप में सामने आने की कोशिश से यह साफ है कि लालू प्रसाद, नीतीश कुमार, स्व. रामविलास पासवान आदि की गलतियों से सबक लेकर वह मजबूती से उभरेंगे और सवर्णों के कद्दावर नेता बनेंगे अपने व्यक्तिगत अनुभव व नेटवर्क के बल पर। बिहार की सवर्ण विरोधी राजनीति की यही डिमांड भी है। जहां तक एआईएमआईएम की बात है तो साल 2020 के चुनाव में इसका प्रदर्शन सीमांचल में काफी मजबूत रहा, लेकिन विधायकों के राजद से दल-बदल के कारण पार्टी की विधानसभा में उपस्थिति कमजोर हो गई। बता दें कि बिहार में इस पार्टी को मुख्य रूप से मुस्लिम मतदाताओं का समर्थन हासिल होता है, लेकिन सीमांचल से बाहर इसकी पकड़ बहुत कमजोर है। ऐसे में 2025 चुनावों में इस अल्पसंख्यक बहुल पार्टी की क्या रणनीति होगी, यह देखने योग्य होगा। इसके उम्मीदवार राजद, जदयू और कांग्रेस आदि के उम्मीदवार की राजनीतिक किस्मत बदलने का माद्दा रखेंगे। इससे भाजपा को परोक्ष लाभ मिलेगा। उल्लेखनीय है कि 2020 के विधानसभा चुनाव में ओवैसी की पार्टी ने 20 सीटों पर उम्मीदवार उतारे, जिसमें से 5 सीटों पर जीत मिली और 4 सीटों पर पार्टी के उम्मीदवार तीसरे नंबर पर आए। जिन सीटों पर जीत मिली, उनमें अमौर से अख्तरुल इमान, जोकीहाट से शाहनवाज आलम, बहादुरगंज से अनजार नईमी, कोचाधामन से मुश्ताक आलम और बैसी से अब्दुल सुब्हान का नाम शामिल हैं।

इस प्रकार 2020 में AIMIM ने कुल 5,23,279 वोट हासिल किए थे। यानी 1.3 फीसदी वोट शेयर रहा। सभी सीटें सीमांचल क्षेत्र (कटिहार, किशनगंज, अररिया और पूर्णिया) में थीं, जहां मुस्लिम आबादी ज्यादा है। हालांकि, जून 2022 में ओवैसी की पार्टी को झटका लगा और चार विधायक आरजेडी में शामिल हो गए। अभी पूर्णिया जिले की आमौर सीट से अख्तरुल इमान ही पार्टी के एकमात्र विधायक बचे हैं, जो पार्टी के बिहार प्रदेश अध्यक्ष हैं। इनकी मजबूती भाजपा को सियासी ऑक्सीजन देने के लिए जरूरी है।

जहां तक प्लूरल्स पार्टी की बात है तो इस पार्टी की स्थापना 2020 में पुष्पम प्रिया चौधरी ने की। बता दें कि पुष्पम प्रिया लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन में स्नातकोत्तर हैं। उनकी पार्टी ने 2020 के विधानसभा चुनावों में हिस्सा लिया, जिसमें पुष्पम प्रिया स्वयं बांकीपुर सीट से उम्मीदवार थीं। हालांकि, उन्हें सियासी सफलता नहीं मिली। वहीं 2024 में पुष्पम प्रिया ने राज्य में सत्ता परिवर्तन के लिए मुहिम चलाई और बोधगया से महायान यात्रा शुरू की। पुष्पम प्रिया सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर अच्छी खासी एक्टिव देखी जाती हैं जो उन्हें हवा हवाई नेता से ज्यादा कुछ नहीं बना सकता। इसलिए उन्हें हकीकत की सियासी जमीन पर उतरना होगा। गौरतलब है कि 2020 के चुनाव में पुष्पम प्रिया की पार्टी ने 102 सीटों पर उम्मीदवार उतारे, जिनमें से सिर्फ तीन सीटों पर ही यह पार्टी तीसरे स्थान पर आई। वहीं, उनकी पार्टी को पूरे राज्य में मात्र 1,22,997 वोट मिले, यानी 0.3त्न वोट शेयर रहा। खुद बांकीपुर से पुष्पम प्रिया को 5,189 वोट मिले, जबकि बीजेपी के नितिन नबीन को 83,068 वोट मिले। दूसरे नंबर पर कांग्रेस के लव सिन्हा को 44,032 वोट मिले थे। वहीं, प्लूरस पार्टी को बेतिया सीट पर 1,559 और मुजफ्फरपुर सीट पर 3522 वोट मिले थे। इससे स्पष्ट है कि बिहार की राजनीति को प्रभावित करने के लिए उन्हें भी कुछ ठोस कदम उठाने होंगे। जहां तक आप सबकी आवाज नामक पार्टी की बात है तो यह भी बिहार की राजनीति में एक नवगठित पार्टी है, जिनकी स्थापना पूर्व केंद्रीय मंत्री रामचंद्र प्रसाद सिंह ने 31 अक्टूबर 2024 को की। इस समय बिहार की राजनीति में आरसीपी सिंह एक प्रमुख चेहरे माने जाते हैं, क्योंकि एक समय वे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के करीबी सहयोगी के तौर पर गिने जाते थे और जनता दल (यूनाइटेड) के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रहे हैं। इससे पहले वह मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव भी रह चुके हैं, क्योंकि एक मशहूर आईएएस अधिकारी थे। बता दें कि आरसीपी ओबीसी समुदाय की कुर्मी जाति से आते हैं, जिसको वहां की सियासत में काफी प्रभावशाली माना जाता है। आरसीपी को भी कुर्मी मतदाताओं के बीच समर्थन हासिल है। वे नालंदा जिले से ही आते हैं। उनका जन्म वहां मुस्तफापुर गांव में हुआ। यह जिला मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का गृह क्षेत्र भी है। नालंदा में उनकी मजबूत पकड़ और प्रभाव माना जाता है। आरसीपी सिंह 2010 में भारतीय प्रशासनिक सेवा से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर जद(यू) में शामिल हुए। उन्होंने पार्टी संगठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और 2020 में राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। फिर आरसीपी सिंह केंद्रीय इस्पात मंत्री के रूप में भी कार्यरत रहे हैं। हालांकि, 2022 में राज्यसभा का कार्यकाल समाप्त होने के बाद उन्हें दोबारा पार्टी ने मौका नहीं दिया, जिससे उन्हें मंत्री पद छोड़ना पड़ा। वहीं, पार्टी से मतभेदों के चलते उन्होंने अगस्त 2022 में जद(यू) से इस्तीफा दे दिया था। उसके बाद मई 2023 में वे बीजेपी में शामिल हो गए। हालांकि, बाद में जब जेडीयू ने महागठबंधन छोड़ा और एनडीए में वापसी की तो आरसीपी की बीजेपी से दूरियां बढ़ने लगीं। यही वजह है कि अक्टूबर 2024 में उन्होंने एक नई पार्टी की स्थापना की और उसे आप सबकी आवाज नाम दिया।

ये पार्टी राष्ट्रीय, राज्य, जिला, प्रखंड और पंचायत स्तर तक संगठनात्मक रूप से मजबूत होने में लगी है। वर्तमान में पार्टी बूथ स्तर पर कमेटियां गठित कर रही है और मतदाता जागरूकता अभियान चला रही है। पार्टी ने 2025 के विधानसभा चुनाव में 140 सीटों पर चुनाव लड़ने की घोषणा की है। चूंकि यह पार्टी अभी हाल ही में स्थापित हुई है, इसलिए अभी तक इसका कोई चुनावी प्रदर्शन नहीं रहा है। हालांकि आगामी चुनावों में पार्टी का प्रदर्शन और बिहार की राजनीति में उसकी भूमिका भविष्य में स्पष्ट होगी। इससे स्पष्ट है कि पीके, पुष्पम प्रिया, ओवैसी, आरसीपी सिंह आदि राजनेतागण, जो न तो लालू-कांग्रेस के साथ हैं और न ही नीतीश-बीजेपी के खेमे में हैं, वे लोग आपसी सहमति से इनकी नकेल अपने हाथ में रखने में सफल होंगे, यदि सटीक रणनीति पूर्वक आगे बढ़े तो। क्योंकि बिहार में तीसरे मोर्चे की सियासत के लिए हमेशा एक संभावना बनी रहती है। ■

साइबर ठगों का बढ़ता हौसला

तीन साल में ही ठगी में बीस गुणा बढ़ोत्तरी

ब्रजेश शर्मा

ऐसा नहीं है कि साइबर या इससे जुड़ी ठगी हमारे यहां ही होती है अपितु देखा जाए तो यह आयातित ठगी का तरीका है। साइबर या यों कहें कि इस तरह की ठगी के मामलों में रशिया पहले पायदान पर है तो यूक्रेन दूसरे पायदान पर बना हुआ है। मोबाइल पर नंबर मिलाते ही आजकल साइबर ठगी, डिजिटल अरेस्ट, ऑनलाइन या ब्लेक मेलिंग से सतर्क रहने का संदेश सुनने को मिलता है। इस सबके बावजूद भारत सरकार द्वारा ठगी के जारी आंकड़ें ना केवल चेताने वाले हैं अपितु लगता है जैसे ज्यों ज्यों दवा की मर्ज बढ़ता ही गया वाले हालात बनते जा रहे हैं। मजे की बात यह है कि साइबर ठगी के इन रुपों से सबसे अधिक शिकार पढ़े लिखे और समझदार लोग ही हो रहे हैं। लाख समझाने के बावजूद एक ओर ठगों के हौसले बुलंद है तो ठगी के शिकार होने वाले लोगों की संख्या और राशि में मल्टीपल बढ़ोतरी हो रही है। भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा जारी हालिया आंकड़ों को देखे तो पिछले तीन साल में ही ठगी के नए अवतार से ठगी की राशि 20 गुणा बढ़ गई है। इस साल की शुरुआत के दो महीनों में ही 17718 से अधिक मामलें दर्ज हो चुके हैं और 210 करोड़ 21 लाख रु. से अधिक की ठगी हो चुकी है। यह तो साल की शुरुआत के हाल है। पिछले तीन साल के आंकड़ों पर नजर डालें तो हालात की गंभीरता को आसानी से समझा जा सकता है। साल 2022 में साइबर ठगी, डिजिटल अरेस्ट या इस तरह की ब्लेक मेलिंग, ऑनलाइन ठगी आदि के 39925 मामलों में 91 करोड़ 14 लाख की ठगी हुई थी जो एक साल बाद ही 2023 में बढ़कर 60676 हो गई और इसमें 339 करोड़ रु. की राशि की ठगी हो गई। मजे की बात यह है कि लाख प्रयासों के बावजूद 2024 की बढ़ोतरी तो और भी चिंतनीय रही है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार ही 2024 में एक लाख 23 हजार 672 मामलें दर्ज हुए और 1935 करोड़ 51 लाख रु. की ठगी हो गई। यह तो वे मामलें हैं जो पुलिस में दर्ज हुए हैं जबकि हजारों मामलें ऐसे भी होंगे जिनमें मामलें दर्ज कराए ही नहीं गए होंगे। खास बात यह है कि ठगी के केन्द्र व ठगी के तरीके से वाकिफ होने के बावजूद यह होता जा रहा है। हांलाकि झारखण्ड के जमातड़ा से ठगों के तंत्र को तोड़ दिया गया पर देश में एक दो नहीं अपितु 74 जिलों में इस तरह की ठगी करने वालों के हॉटस्पॉट विकसित हो गए। झारखण्ड, राजस्थान, हरियाणा और बिहार के केन्द्र पहले पांच प्रमुख सेंटर विकसित हो गए। ऐसा नहीं है कि साइबर या इससे जुड़ी ठगी हमारे यहां ही होती है अपितु देखा जाए तो यह आयातित ठगी का तरीका है। साइबर या यों कहें कि इस तरह की ठगी के मामलों में रशिया पहले पायदान पर है तो यूक्रेन दूसरे पायदान पर बना हुआ है। इनके बार चीन, अमेरिका, नाइजेरिया और रोमानिया का नंबर आता है। इससे एक बात तो साफ हो जाती है साइबर ठगों के सारी दुनिया में हौसले बुलंद है। लोगों की गाढ़ी कमाई को हजम करने में इन्हें विशेषज्ञता हासिल है। लोगों की कमजोरी को यह समझते हैं और उसी कमजोरी के चलते पढ़े लिखे और होशियार लोगों को भी आसानी से ठगी का शिकार बना लेते हैं। जाल ऐसा की यह समझते हुए कि ऐसा आसानी से होता नहीं है फिर भी चक्कर में फंस ही जाते हैं और ठगों के आगे सरेण्डर होकर लुट जाते हैं। जहां तक हमारे देश की बात करें तो साइबर ठग या तो किसी तरह का लालच देकर लिंक भेजकर ठगी करते हैं तो दूसरी और डरा धमकाकर आसानी से ठगी का शिकार बना लेते हैं। सरकार प्रचार के सभी माध्यमों से बार बार व लगातार आगाह कर रही है कि ठगों द्वारा डराने वाले तरीके वास्तविक नहीं है। बैंक कभी भी बैंक डिटेल या ओटीपी ऑनलाइन नहीं मांगते पर पता नहीं कैसे ठगों के जाल में फंसकर अपनी मेहनत की कमाई लुटा बैठते हैं। ओटीपी देदेते हैं तो लिंक खोलने के लिए लाख मना करने के बावजूद लिंक खोलकर लुट जाते हैं। पुलिस अधिकारी बन कर जिस तरह से डिजिटल अरेस्ट कर ठगी का रास्ता अपनाया जा रहा है उस संबंध में अवेयरनेस अभियान के बावजूद ठगी का शिकार होने वालों की संख्या या राशि में कमी नहीं हो रही है। डिजिटल अरेस्ट में डॉक्टर, रिटायर्ड जज, प्रोफेसर, प्रशासनिक अधिकारी सहित संभ्रात वर्ग के लोगों को आसानी से जाल में फंसाकर ठगी हो रही हैं वह भी करोड़ों तक की ठगी के उदाहरण मिल रहे हैं।

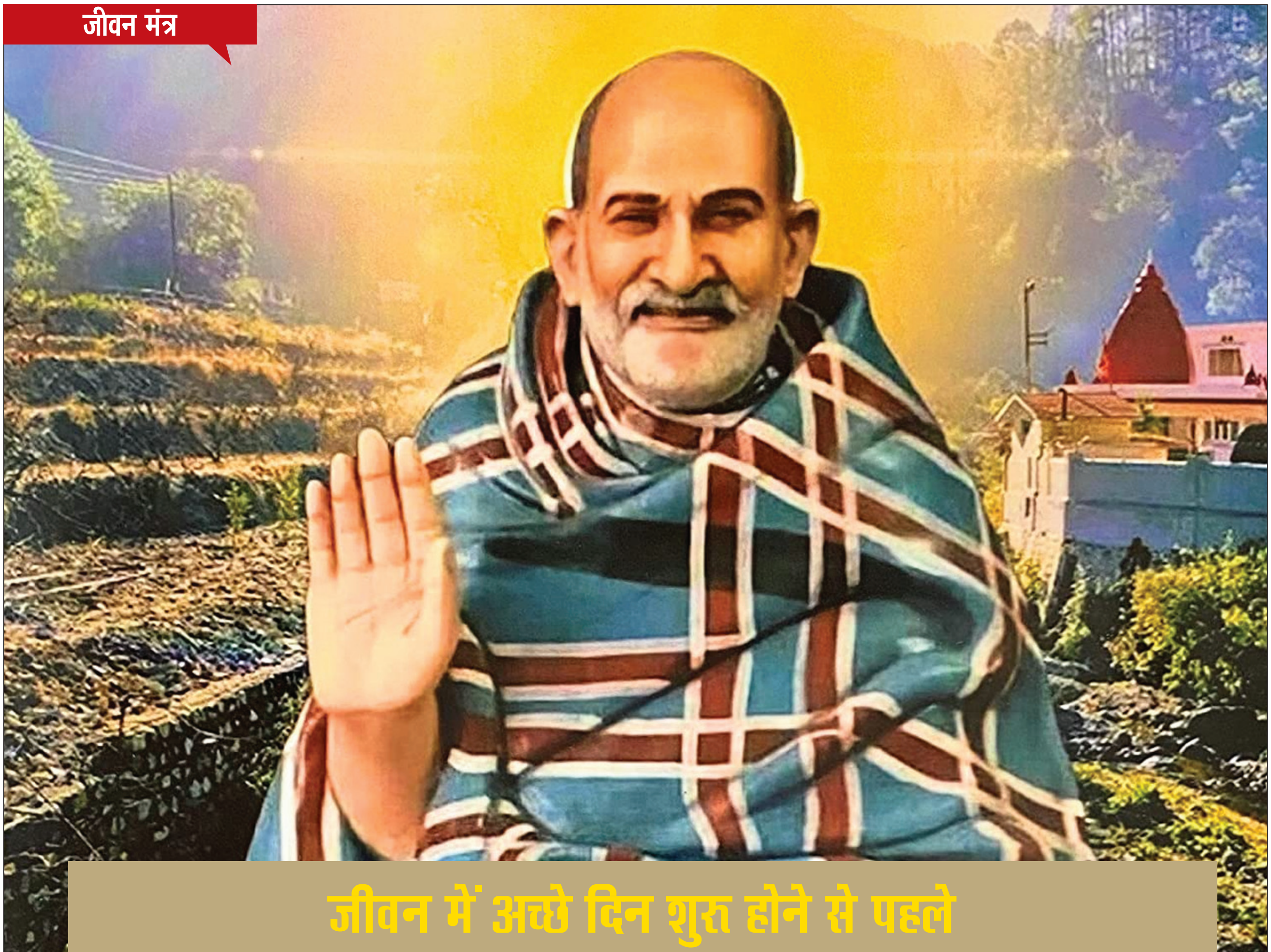

जीवन में अच्छे दिन शुरू होने से पहले

मिलने लगते हैं ये संकेत

जानिए क्या कहते हैं बाबा नीम करोली

राम नरेश शर्मा

बाबा नीम करोली का आश्रम उत्तराखंड के नैनीताल जिले में स्थित है। बता दें कि बाबा नीम करोली ने कई ऐसे शुभ संकेतों के बारे में बताया है, जो व्यक्ति को अच्छे दिनों के आने का संकेत देती हैं। बाबा के भक्तों में आम लोगों से लेकर राजनेता आदि तक शामिल हैं। नीम करोली बाबा एक ऐसे संत थे, जिनके सिर्फ भारतीय भक्त ही नहीं बल्कि विदेशी भक्त भी हैं। बाबा के दर पर आम लोगों से लेकर राजनेता और तमाम बड़ी हस्तियां माथा टेकने के लिए आती हैं। उनके भक्त बाबा नीम करोली को हनुमान जी का अवतार मानते हैं और उनकी चमत्कार की कहानियां हर जगह फैली हैं। बाबा नीम करोली का आश्रम उत्तराखंड के नैनीताल जिले में स्थित है। बता दें कि बाबा नीम करोली ने कई ऐसे शुभ संकेतों के बारे में बताया है, जो व्यक्ति को अच्छे दिनों के आने का संकेत देती हैं।

साधु-संत के दर्शन

अगर आपको अचानक से साधु या संतों के दर्शन या मुलाकात हो जाती है, तो समझिए आपकी किस्मत पलटने वाली है। साधु-संतों के दर्शन करना काफी शुभ संकेत माना जाता है।

पितरों के दर्शन

नीम करौली बाबा के अनुसार, पितरों का आपके सपने में आना एक शुभ संकेत माना जाता है। खासतौर पर अगर सपने में पूर्वज आशीर्वाद दे रहे हैं, तो यह इस बात का संकेत है कि जीवन में कृपा बरसने वाली है। पितृ का आशीर्वाद जिनके जीवन पर रहता है, तो उसको कभी किसी चीज की कमी नहीं रहती है।

पूजा के दौरान रोना

अगर पूजा के समय आपकी आंखों से आंसू आने लगते हैं या आप भावुक हो रहे हैं। यह भी एक शुभ संकेत होता है। पूजा के दौरान रोना या भावुक होने का मतलब है कि आपके घर परिवार पर भगवान की कृपा बरसने वाली है। नीम करोली बाबा के अनुसार, अगर आपके मन में कई बातों को लेकर उलझन चल रही है और अचानक ही आपको उसका सही मार्ग मिलने लगा है तो यह एक ईश्वरीय संकेत माना जाता है। इससे आपके घर पर दैवीय शक्तियों की कृपा बनी रहेगी। घर परिवार में सुख-समृद्धि और खुशहाली बनी रहेगी। ■

चिलचिलाती गर्मी से बचने के लिए भारत की इन ठंडी जगहों पर

घूमने का बनाएं प्लान

सपना शर्मा

अगर आपको चिलचिलाती गर्मी पसंद नहीं हैं, तो फिर ठंडी हवाओं का लुत्फ उठाने के लिए भारत की इन शानदार जगहों पर जाने का प्लान बनाएं। अगर आप भी गर्मी से बचना चाहते हैं तो किसी सुंदर और ठंडी जगह पर छुट्टियां बिताने जा सकते हैं। पहाड़ियों को सुंदर नजारा और सुकून के पल बिताने के लिए ये जगहें सबसे बेस्ट हैं। अभी से दमघटुने वाली गर्मी पड़ने लगी है। अगर आप अप्रैल के महीने में घूमने का प्लान बना रहे हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। गर्मी से बचने के लिए लोग तरह-तरह के उपाय करते हैं। कोई बीच पर समुद्र में डुबकी लगाने पहुंचता है, तो कोई ठंडी जगहों पर घूमने का प्लान बनाते हैं। अगर आप भी गर्मी से बचना चाहते हैं तो किसी सुंदर और ठंडी जगह पर छुट्टियां बिताने जा सकते हैं। चलिए हम आपको भारत की कुछ ऐसी जगहों के बारे में बताने जा रहें, जहां आप अपने दोस्त, परिवार और पार्टनर के साथ हसीन पल को एन्जॉय कर सकते हैं।

डलहौजी: पहाड़ियों को सुंदर नजारा और सुकून के पल बिताने के लिए डलहौजी सबसे बेस्ट जगह है। समुद्र तल से करीब 2 हजार मीटर की ऊंचाई पर मौजूद डलहौजी भारत का सबसे खूबसूरत और मनमोहक हिल स्टेशन माना जाता है। यहां पर ऊंचे-ऊंचे पहाड़, घने जंगल, झील-झरने और देवदार के पेड़ इस हिल स्टेशन की खूबसूरती में चार चांद लगाने का काम करते हैं। अप्रैल के महीने में चिलचिलाती गर्मी में भी डलहौजी का तापमान 10 डिग्री सेल्सियस से 25 डिग्री सेल्सियस के बीच रहता है। इसलिए यहां आप अप्रैल से लेकर जुलाई तक भारी संख्या में देशी और विदेशी पर्यटक घूमने के लिए पहुंचते हैं।

हर्षिल वैली: उत्तराखंड की हसीन वादियों में मौजूद हर्षिल वैली किसी स्वर्ग से कम नहीं है। यह एक ऐसी वैली है, जिसे एक्सप्लोर करने का सबका सपना होता है। यहां पर लगभग हर देशी और विदेशी पर्यटक देखा है। समुद्र तल से करीब 9 हजार से भी अधिक फीट की ऊंचाई पर मौजूद हर्षिल वैली का तापमान अप्रैल के महीने में 9 डिग्री सेल्सियस से 12 डिग्री सेल्सियस के बीच रहता है। यहां पर आप ट्रेकिंग से लेकर यादगार फोटोग्राफी भी कर सकते हैं।

पहलगाम: अप्रैल की गर्मी से बचने के लिए ठंडी हवाओं का लुत्फ उठाने के लिए आप जम्मू कश्मीर के पहलगान एक ऐसी जगह है, जहां किसी भी मौसम में घूमने का अलग ही मजा है। यहां पर 5 डिग्री सेल्सियस से 7 डिग्री सेल्सियस के बीच तपमान रहता है। ठंडी हवाओं का मजा लेने के लिए देश के हर कोने से पर्यटक आते हैं। पहलगाम में आप तुलियन झील, शेषनाग झील, बीटा घाटी और मार्सर झील जैसी जगहों को एक्सप्लोर कर सकते हैं।

गंगटोक: अप्रैल की भयानक गर्मी से बचने के लिए आप नॉर्थ ईस्ट इंडिया की किसी शानदार जगह को एक्सप्लोर कर सकते हैं। आप गंगटोक की हसीन वादियों में घूमने के लिए पहुंच जाना चाहिए। हिमालय की गोद में मौजूद इसे नॉर्थ ईस्ट इंडियां का सबसे ठंडा प्रदेश भी माना जाता है।

मनाली: गर्मियों में ठंडी का मजा लेने के लिए मनाली घूमने जाना सबसे बेस्ट ऑप्शन है। हिमालय की गोद में मौजूद मानली अप्रैल से लेकर जुलाई की भयानक गर्मी से बचने के लिए सबसे बेस्ट जगह मानी जाती है।

सूखी या बलगमी खांसी ?

मुलेठी है रामबाण इलाज

अगर आपको सूखी खांसी, गले में खराश और गले में जलन की शिकायत है तो ऐसे में आप मुलेठी की चाय पी सकते हैं। इसके लिए आप एक चम्मच मुलेठी का चूर्ण लें या मुलेठी की जड़ का एक छोटा टुकड़ा पीस लें। इसे 1 कप पानी में 5-10 मिनट तक उबालें।

डॉ. हेमा सिंह भगौर

खांसी एक बेहद ही आम समस्या है, लेकिन यह आपको काफी परेशान कर सकती है। अगर आपको भी जिद्दी खांसी ने परेशान कर दिया है तो ऐसे में आप सदियों से इस्तेमाल किया जाने वाला एक प्राकृतिक उपचार आजमा सकते हैं और वह है मुलेठी। यह साधारण जड़ी-बूटी गले की जलन को शांत करने, खांसी को कम करने और बलगम को साफ करने में बहुत कारगर है। चाहे आपको सूखी खांसी हो जो ठीक नहीं होती या गीली खांसी हो और कफ जमा हो, मुलेठी आपकी मदद कर सकती है। दरअसल, इसमें सूजन-रोधी, जीवाणुरोधी और कफ निस्सारक गुण होते हैं जो इसे खांसी को दूर करने में कारगर बनाते हैं। खांसी की छुट्टी करने के लिए आप मुलेठी का इस्तेमाल कई अलग-अलग तरीकों से कर सकते हैं। मसलन, आप इसे चाय की तरह पी सकते हैं, चबा सकते हैं, शहद के साथ मिला सकते हैं या सोने से पहले गर्म दूध के साथ भी ले सकते हैं। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको खांसी को दूर करने के लिए मुलेठी का सेवन करने के कई अलग-अलग तरीकों के बारे में बता रहे हैं-

मुलेठी की चाय

अगर आपको सूखी खांसी, गले में खराश और गले में जलन की शिकायत है तो ऐसे में आप मुलेठी की चाय पी सकते हैं। इसके लिए आप एक चम्मच मुलेठी का चूर्ण लें या मुलेठी की जड़ का एक छोटा टुकड़ा पीस लें। इसे 1 कप पानी में 5-10 मिनट तक उबालें। अब इसे छान लें और गर्म-गर्म पिएं। आप चाहें तो इसमें शहद और नींबू मिला सकते हैं।

मुलेठी काढ़ा

यह एक हर्बल काढ़ा है, जो बलगम वाली गीली खांसी को दूर करने में सहायक है। काढ़ा बनाने के लिए आप मुलेठी, तुलसी के पत्ते, काली मिर्च और अदरक को पानी में उबालें। इसे तब तक उबालें, जब तक कि यह आधा ना रह जाए। अब आप इसे छान लें और थोड़ा शहद डालकर गर्मागर्म पिएं।

मुलेठी और गर्म दूध

अगर आपको सूखी खांसी की शिकायत है और इसलिए रात में अच्छी नींद नहीं आती है तो ऐसे में मुलेठी और गर्म दूध का सेवन करें। इसके लिए आप आधा चम्मच मुलेठी पाउडर को एक गिलास गर्म दूध में मिलाएं। रात में खांसी से राहत के लिए सोने से पहले पिएं। अगर आपको लगातार खांसी हो रही है और गले में इंफेक्शन की शिकायत है तो ऐसे में आप मुलेठी व शहद को मिक्स करें। इसके लिए आप आधा चम्मच मुलेठी पाउडर को एक चम्मच शहद के साथ मिलाएं। आप इस मिश्रण को दिन में दो बार ले सकते हैं। ■

डिस्क्लेमर: इस लेख के सुझाव सामान्य जानकारी के लिए हैं। इन सुझावों और जानकारी को किसी डॉक्टर या मेडिकल प्रोफेशनल की सलाह के तौर पर न लें। किसी भी बीमारी के लक्षणों की स्थिति में डॉक्टर की सलाह जरूर लें।

ऐसे बनाएं नरम और लजीज गार्लिक नान

स्नेहलता शर्मा

परफेक्ट गार्लिक नान बनाने के लिए यह बेहद जरूरी है कि आप आटा सही तरह से गूंथे। अक्सर लोग इस पर बहुत अधिक ध्यान नहीं देते। अगर आप नान के लिए आटा गूंथ रहे हैं तो इसके लिए दही का इस्तेमाल करना काफी अच्छा रहता है। दाल मखनी या चिकन बटर मसाला के साथ अगर नान मिल जाए तो स्वाद कई गुना बढ़ जाता है। इसमें भी अगर आपको लहसुन खाना अच्छा लगता है तो गार्लिक नान से बेहतर शायद ही कोई दूसरा ऑप्शन हो। अमूमन हम सभी बाजार में जाकर गार्लिक नान का लुत्फ उठाना पसंद करते हैं, क्योंकि घर पर उस परफेक्ट नान की बनावट बनाना मुश्किल लग सकता है। लेकिन चिंता न करें, अगर आपको कुछ आसान टिप्स के बारे में पता है तो आप इसे बेहद आसानी से बना सकते हैं। अमूमन यह देखने में आता है कि जब लोग घर में गार्लिक नान बनाते हैं तो वे या तो बहुत अधिक सूखे होते हैं या फिर उनमें रेस्टोरेंट स्टाइल की तीखापन नहीं होता। जिसकी वजह से उन्हें वह टेस्ट अच्छा नहीं लगता है। तो चलिए आज इस लेख में हम आपके साथ कुछ ऐसे ही टिप्स शेयर कर रहे हैं जो आपको परफेक्ट गार्लिक नान बनाने में मदद करेंगे-

सही से गूंथे आटा

परफेक्ट गार्लिक नान बनाने के लिए यह बेहद जरूरी है कि आप आटा सही तरह से गूंथे। अक्सर लोग इस पर बहुत अधिक ध्यान नहीं देते। अगर आप नान के लिए आटा गूंथ रहे हैं तो इसके लिए दही का इस्तेमाल करना काफी अच्छा रहता है। यह आटे को बहुत नरम बनाता है, लेकिन इससे फूला हुआ नान बनता है। साथ ही साथ, आटे को कम से कम 1-2 घंटे के लिए आराम दें। इससे ग्लूटेन आराम कर जाता है, जिससे इसे रोल करना आसान हो जाता है और एक नरम व मुलायम नान बनता है।

तवे पर नान चिपकाने की ट्रिक

अक्सर यह देखने में आता है कि नान को पलटने पर वह तवे पर ठीक से चिपकता नहीं है। नान को तवे पर रखने से पहले उसके पीछे पानी लगाएं। इससे नान ठीक से चिपकता है, इसलिए जब आप तवा को उल्टा करते हैं, तो वह अपनी जगह पर रहता है। कभी भी नान बनाते समय नॉन-स्टिक पैन का इस्तेमाल न करें। कास्ट आयरन या स्टील का तवा सबसे अच्छा काम करता है, क्योंकि यह गर्मी को अच्छी तरह से बनाए रखता है और इससे आपको सही क्रस्ट भी मिलता है।

लहसुन के स्वाद पर करें फोकस

गार्लिक नान में लहसुन का स्वाद काफी मायने रखता है, नान बनाते समय लहसुन पाउडर नहीं, बल्कि ताजा लहसुन इस्तेमाल करें। ताजा कटा हुआ या कसा हुआ लहसुन सबसे अच्छा स्वाद देता है। लहसुन पाउडर उतना स्वाद नहीं देगा। साथ ही, लहसुन को मक्खन या घी के साथ मिलाएं। इससे लहसुन का स्वाद नान पर समान रूप से फैल जाता है, न कि सिर्फ ऊपर। खाना पकाने से पहले लहसुन न डालें। कुछ लोग खाना पकाने से पहले आटे पर कच्चा लहसुन दबाते हैं, लेकिन इससे वह जल्दी जल सकता है। ■

कहानी

मकान को घर बनाने वाली का कोना कौन सा?

सोनम के कहने पर उसके पति नवीन ने जब अपने पापा से गार्डन वाली जगह पर कार पार्किंग की बनाने की बात की तो वे चिंतित हो गए। जब उन्होंने अपना फैसला बताया तो नवीन के पैर क्यों उखड़ गए?

सुमिता शर्मा

क्या सोनम, आजकल तुम बहुत देर करने लगी हो सोने में? नवीन ने चिढ़ते हुए कहा। सोनम बोली, मैं फिल्म देख रही थी, लाइव शूटिंग, बगीचे में हीरो-हीरोइन बैठे रोमांस कर रहे हैं... उम्र हमारी है। मजे ये ले रहे हैं, हा...हा...हा...क...क...क...क्या मतलब है तुम्हारा? किस की बात कर रही हो? नवीन किसी पड़ोसी को समझ कर हंसते हुए बोला। और कौन...? तुम्हारे मम्मीपापा आजकल सींग कटा कर बछड़ों में शामिल हो रहे हैं, सोनम ने हंसी उड़ाते हुए कहा। आओ... चुपचाप चलो मेरे साथ गैलरी में, दबे पांव देखना। हद कर दी है, उम्र पचपन की दिल बचपन का, सोनम बोली। अरे यार, उनको छोड़ो, अपनी बात करो। वे दोनों तो सठिया गए हैं बुढ़ापे में, लैला-मजनू बन रहे हैं, नवीन ने उखड़े स्वर में कहा। फिर ऑफिस बैग से एक बॉक्स निकाल कर पूछा, इस नेकलेस की डिजाइन कैसी लग रही है? लवली, सोनम अदा से बोली। नवीन ने उसके गले में पहना कर हीरो राजकुमार के अंदाज में कहा, आप के पैर बहुत खूबसूरत हैं, इन्हें जमीन पर मत रखिएगा, और धीरे से उसके गालों पर एक जोरदार किस दे दिया। तब तक अशोकजी ने नवीन को फोन लगाया। हुंह बजने दो, सोनम मुंह बिचका कर बोली, स्विच ऑफ कर दो। अब इन लोगों के पैर बिना गाड़ी नहीं चलते, जब से घर में रहने लगे हैं, न किटी हो पाती है इधर और न ही कोई आता है। कहीं आओजाओ तो भी देर लगने का हिसाब दो... सोनम उसके और करीब बैठ गई और दीवार पर लगी शादी की तस्वीर को ध्यान से देखने लगी। सोनम बोली, नवीन, कौन कहेगा हमारे 2 बच्चे हैं। अब भी तुम पहले जैसे ही रोमांटिक हो... नवीन मुसकराते हुए बोला, क्यों न हो, जिस की पत्नी इतनी सुंदर हो, और नवीन ने एक बार फिर उसे अपनी बांहों के घेरे में ले लिया। सोनम प्यार से देखते हुए बोली, नवीन, यह नेकलेस काफी महंगा लग रहा है...? नवीन हंसते हुए बोला, होने दो। तुम ने ये डिजाइन पसंद की थी, तो लाता कैसे न...?

लेकिन, पापाजी ने कल घर के खर्च में सहयोग करने को कहा था, तो तुम ने तनख्वाह न मिलने का बहाना किया था... पर, अब क्या कहोगे, अगर इस हार के बारे में पूछा तो? उसने उलझन में पड़ते हुए कहा। तो... अब पापा रिटायर हैं। इतनी पैंशन है, कहां खर्च करेंगे इतनी रकम...? यार, हम लोगों पर ही खर्च होगी। जैसे पहले चल रहा था, सब वैसे ही चलने दो... क्या चलने दूं, जब से पापा रिटायर हुए हैं, तब से मम्मी ने घर के काम मे इंट्रैस्ट लेना कम कर दिया है... पहले मैं कितना घूम लेती थी, लेकिन अब तो रोज उनको साथ लेकर कहीं न कहीं घूमने चले जाते हैं, वरना दिनभर बगीचे में झूले पर बैठे रहेंगे। चलो, मूड मत खराब करो। सो जाओ, और जब अगले दिन उन की आंख खुली, तो कमरे के दरवाजे पर कोई तेज दस्तक दे रहा था... सुबह के साढ़े 8 बजे हैं... अब तक तो पीहू के स्कूल का टाइम हो जाता है... सोनम ने बौखलाहट से कहा। अरे यार, मम्मीपापा को सुख लेने दो दादादादी बनने का, नवीन चिढ़ कर बोला। मगर, जब दस्तक बढ़ती गई, तो नवीन को दरवाजा खोलना ही पड़ा, सामने उसकी बेटी पीहू खड़ी थी... उसने चौंक कर पूछा। अरे, पापा की जान आज स्कूल नहीं गई... नो पापा, आज दादी के पैर में चोट लग गई है, दादू उनको दवा लगा रहे हैं, गार्डन में... उन्हें गाड़ी की चाभी चाहिए... नवीन हड़बड़ाहट में चाभी देने बाहर निकला, तो उस ने देखा कि उस के पिता अशोकजी बगीचे में लगे हुए झूले में बैठे हैं और अपनी पत्नी प्रभा के पैरों में दवा लगा रहे हैं...

वे बड़ी अदा से कह रहे थे, आप के पांव देखे, बहुत खूबसूरत हैं जमीन पर मत रखिएगा। और वे शरमाई जा रही थीं... उन दोनों को एकसाथ बैठे देख कर नवीन थोड़ा कुढ़ते हुए बोला, पापा, आज पीहू स्कूल क्यों नहीं गई? अशोकजी ने उत्तर दिया, क्योंकि वह तुम्हारी और बहू की जिम्मेदारी है, रातभर हम दोनों को कुशल (नवीन के बेटे) ने सोने नहीं दिया... कल गाड़ी की चाभी भी नहीं दी। फोन किया तो उठाया नहीं... बरखुरदार, अब तुम दोनों सिर्फ पतिपत्नी ही नहीं, मांबाप भी हो... नवीन उलटे पैर पटकते हुए अपने कमरे में गया और बोला, सोनम, तुम सच कह रही थी... पापामम्मी हद किए रहते हैं आजकल... चाय लाओ... सोनम रसोईघर में गई तो देखा, वहां कुछ भी नहीं बना हुआ था। उस का मूड और खराब हो गया। वह अपने कमरे में लौट गई...तभी सोनम की मां का फोन आ गया। वह बिफर कर बोली, क्या बताऊं मम्मी, आजकल तो बासी कढ़ी में भी उबाल आया हुआ है। जब से पापाजी रिटायर हुए हैं, दोनों लोग फिल्मी हीरो-हीरोइन की तरह दिनभर अपने बगीचे में ही झूले पर विराजमान रहते हैं... न अपने बालों की सफेदी का लिहाज है, न बहू-बेटे का। इस उम्र में दोनों मेरी और नवीन की बराबरी कर रहे हैं... तब तक हाथों में चाय की केतली लिए हुए चाय पीने के लिए सोनम को पूछने आई प्रभाजी उसके कमरे की तरफ बढ़ीं, पर उदास मन से रसोई में दाखिल हुईं। उन्होंने सुन सब लिया था, पर नजरअंदाज करते हुए खामोशी से 2 कप में चाय ले गईं और सोनम को भी उसी के कमरे में दे दी। उन्हें अशोकजी के लिए चाय ले जाते देख उन की बहू सोनम के चेहरे पर फिर से व्यंग्यात्मक मुसकान तैर गई। पर, वह नजरअंदाज कर सिर झुकाए निकल गईं। पति के रिटायर होने के बाद कुछ दिन से उनकी यही दिनचर्या हो गई थी... अशोकजी की इच्छानुसार अच्छे से तैयार होकर अपने घर के सब से खूबसूरत हिस्से अपने पेड़पौधों के साथ बैठना, क्योंकि सारी उम्र तो उन की बच्चों के लिए जीने में निकल गई थी। उन का कहना था कि बच्चों को उन की जिम्मेदारी उठाने दो, बस वाजिब सहयोग करिए... पांडेय विला... दोमंजिला कोठीनुमा घर अशोक और प्रभा का जीवनभर का सपना था, बड़ा खूबसूरत लगता देखने में, उस पर वातावरण भी बेहद सुरम्य... 20 बाई 20 गज की कच्ची जगह भी थी उस घर में बाहर, जहां था प्रभा के सपनों का बगीचा... बेला के पौधे, हरसिंगार का घनेरा पेड़, अंगारों सा दहकता गुड़हल का पेड़ और छोटा सा टैंक, जिस में कमल के फूल खिले रहते...

जाड़े में तो रंगबिरंगे फूल डहेलिया, गुलाब, पैंजी और तमाम किचन गार्डन की सब्जियां चार चांद लगा देतीं देखने वाले की आंखों में और रसोईघर में भी। ताजा धनिया, पोदीना, मेथी की बहार रहती... हर मौसम में घर खुशबू और सकारात्मक ऊर्जा से सराबोर रहता। उस पर वहां पड़ा झूला। जो भी वहां बैठ जाता तो उठने की इच्छा ही न होती उस की...जाड़ों में वहीं तसले में आग जलती और भुने आलू, शकरकंद के मजे लिए जाते तो बरसात में सुलगते कोयलों पर सिंकते भुट्टे स्वर्ग के आनंद की अनुभूति करवाते... अशोकजी ने वह जगह छुड़वाई तो प्रभा और अपने लिए कमरे के लिए थी, लेकिन संयोग ऐसा बना कि जिम्मेदारी ने उन्हें उस जगह का इस्तेमाल ही न करने दिया... ऐसे में प्रभा ने अपने खाली समय और उस खाली जगह का इस्तेमाल इस बुद्धिमत्ता से किया कि वह कोना घर की जान बन गया... उन का पूरा खाली समय वहीं बीत जाता। अब उन्हें उस जगह उन का कमरा न बन पाने का मलाल भी न था... पर प्रभा का अरमान था कि घर में झूला हो तो अशोकजी ने उसे वहां जरूर लगवा दिया... पेड़ों से लगाव कुछ ऐसा हो गया कि फिर दोनों में से किसी की इच्छा उन के स्थान पर कमरा बनवाने की हुई ही नहीं... पर वह और अशोक कभी एकसाथ उस जगह कम ही बैठ पाते, कभी प्रभा अनमनी होतीं तो अशोक बड़े जिंदादिल शब्दों में कहते, पार्टनर रिटायरमेंट के बाद दोनों इसी झूले पर साथ बैठेंगे और खाना भी साथ में ही खाएंगे... हर शिकायत दूर कर देंगे। फिलहाल तो हमें बच्चों के लिए जीना है... बच्चों के कैरियर पर सबकुछ बलिदान हो गया। अब बेटा भी अच्छी नौकरी में था और बेटी भी अपने घर की हो चुकी थी... रिटायरमेंट के बाद घर में थोड़ी रौनक रहने लगी थी। अशोकजी को भी घर में रहना अच्छा लग रहा था। वे बड़े पद पर थे, तो कभी उन के कदम घर में टिके ही नहीं...गांव से आ कर शहर में बसेरा बनाना आसान न था, लेकिन किसी तरह 400 गज जमीन कर ली। सहधर्मिणी प्रभा भी सहयोगी महिला थीं, तो मंजिल और आसान हो गई... अब दोनों पतिपत्नी आराम के इन पलों को संजो लेना चाहते थे... उन के घर में जरूरी सब सुविधाएं भी थीं, फिर भी बहू सोनम को न जाने क्यों वह कोना सब से ज्यादा खटकता था... अशोकजी जब से घर में रहने लगे थे, प्रभाजी को उन के काम करने पड़ जाते थे...।

सोनम को भी अब अपने हिस्से के बहुत सारे वो काम करने पड़ जाते थे, जिन्हें प्रभाजी कर देती थीं, क्योंकि कोई भी बंधन न होने पर भी अशोकजी के घर में रहने से उसे घर का काम बढ़ा महसूस होता, क्योंकि बेटी बनने की आड़ में उस ने अपनी बेटी और बेटे का काम भी सास पर डाल दिया था। दिनभर उसके साथ लगी रहने वाली प्रभा का अब थोड़ा समय अपने पति को देना उसे अखरने लगा था... अकसर वह नवीन को उसके माता-पिता के लिए ताने देने का कोई मौका न छोड़ती... ऊपर से सुविधाभोगी आदत पड़ गई थी तो उसे अशोकजी का उनकी ही कार ले जाना खटका करता... उसने उस कोने से छुटकारा पाने के लिए नवीन को बांहों के घेरे में लेते हुए एक रास्ता सुझाते हुए कहा, क्यों न हम बड़ी कार खरीद लें... नवीन। वह कार तो लव बर्ड्स की ही हो गई है, टैक्सी महंगी पड़ती है... आइडिया तो अच्छा है, पर रखेंगे कहां। एक कार रखने की ही तो जगह है घर में, नवीन थोड़ा चिंतित स्वर में बोला। जगह तो है न, वह गार्डन तुम्हारा।। जहां आजकल दोनों लव बर्ड्स बैठते हैं, सोनम थोड़े तीखे स्वर में बोली। तब तक दूर से आते हुए अशोकजी को देख कर उस ने पैंतरा बदला। थोड़ा तमीज से बात करो, नवीन क्रोध से बोला जरूर, पर उसने भी अशोकजी से बात करने का मन बना लिया था। अगले दिन वह कुछ कार की तसवीरों के साथ शाम को अपने पिता के पास गया और बोला, पापा, मैं और सोनम एक बड़ी गाड़ी खरीदना चाहते हैं... पर बेटा, बड़ी गाड़ी तो घर में पहले से ही है, फिर उसे रखेंगे कहां? अशोकजी ने प्रश्न किया। यह जो बगीचा है, यहीं गैराज बनवा लेंगे। वैसे भी सोनम से तो इनकी देखभाल होने से रही और मम्मी कब तक करेंगी? इन पेड़ों को कटवाना ही ठीक रहेगा। वैसे भी ये सब जड़ें मजबूत कर घर की दीवारें कमजोर कर रहे हैं... प्रभा तो वहीं कुरसी पर सीना पकड़ कर बैठ गईं। अशोकजी ने क्रोध को काबू में करते हुए कहा, मुझे तुम्हारी मां से भी बात करके थोड़ा सोचने का मौका दो। क्या पापा... मम्मी से क्या पूछना। वैसे भी इस जगह का इस्तेमाल भी क्या है? नवीन थोड़ा गुस्सा होते हुए बोला। आप दोनों दिनभर इस जगह बगैर कुछ सोचेसमझे, चार लोगों का लिहाज किए बगैर साथ बैठे रहते हैं... कोई बच्चे तो हैं नहीं आप दोनों के। और अब घर में सोनम भी है, छोटे बच्चे भी हैं... पर, आप दोनों ने दिनभर झूले पर साथ बैठे रहने का रिवाज बना लिया है। और ये भी नहीं सोचते कि चार लोग क्या कहेंगे... इस उम्र में मम्मी के साथ बैठने के बजाय अपनी उम्र के लोगों में उठाबैठे करेंगे, तो वह ज्यादा अच्छा लगेगा, न कि यह सब, कह कर वह दनदनाते हुए अंदर चला गया। अंदर सोनम की बड़बड़ाहट भी जारी थी। अशोकजी भी एहसास कर रहे थे प्रभा के साथ अपनी ज्यादती का... जब कभी पत्नी ने अपने मन की कही तो उन्होंने उन्हें ही सामंजस्य बिठाने की सीख दी... पर, आज की बात से तो उन के साथ प्रभाजी भी सन्न रह गईं, अपने बेटे के मुंह से ऐसी बातें सुन कर... रिटायरमेंट को अभी कुछ ही समय हुआ था उनके, जिंदगी तो भागमभाग में ही निकल गई थी बच्चों के लिए सुखसाधन जुटाने में... नवीन और सोनम ने उस शाम आदत के अनुसार खाना बाहर से ऑर्डर कर दिया। पर, प्रभा से न खाना खाया गया और न उन्हें नींद आई... नींद तो अशोकजी को भी नहीं आ रही थी और वो प्रभा की मनोस्थिति भी समझ रहे थे... किसी ट्रैफिक सिगनल पर खड़े सिपाही जैसी, जिससे हर रिश्ता बस अपनी ही तवज्जुह चाह रहा था। पर सोचते-सोचते सुबह, कुछ सोच कर उनके होंठों पर मुसकान तैर गई... अगले दिन जब सोकर वह उठे तो देखा प्रभाजी सो रही थीं, पर बेचैनी चेहरे पर दिख रही थी... वह रसोई में गए और खुद चाय बनाई। कमरे में आकर पहला कप प्रभा को उठा कर पकड़ाया और दूसरा खुद पीने लगे... आपने क्या सोचा? प्रभा ने रोआंसी आवाज में पूछा। मैं सब ठीक कर दूंगा। बस, तुम धीरज रखो, अशोक बोले। पर हद से ज्यादा निराश प्रभा उस दिन पौधों में पानी देने भी न निकलीं और न ही किसी से कोई बात की। दिनभर सब सामान्य रहा, लेकिन शाम को अपने घर के बाहर 'टूलेट' यानी किराए के लिए का बोर्ड टंगा देख नवीन ने भौंचक्के स्वर में अशोकजी से प्रश्न किया, पापा, माना कि घर बड़ा है, पर ये 'टूलेट' का बोर्ड किसलिए? अगले महीने मेरे स्टाफ के मिस्टर गुप्ता रिटायर हो रहे हैं, तो अब वे इसी घर में रहेंगे, उन्होंने शांत लहजे में उत्तर दिया। हैरान-परेशान नवीन बोला, पर कहां...? तुम्हारे पोर्शन में, अशोकजी ने सामान्य स्वर में उत्तर दिया। नवीन का स्वर अब हकलाने लगा था, और हम लोग...? तुम्हे इस लायक बना दिया है। 2-3 महीने में कोई फ्लैट देख लेना या कंपनी के फ्लैट में रह लेना, अपनी उम्र के लोगों के साथ, वरना मुझे कानून का सहारा लेना पड़ेगा, अशोकजी एक-एक शब्द चबाते हुए बोले। हम दोनों भी अपनी उम्र के लोगों में उठेंगे-बैठेंगे, सारी उम्र तुम्हारी मां की सबका लिहाज करने में निकल गई। कभी बुजुर्ग, तो कभी बच्चे। अब लिहाज की सीख तुम सबसे लेना बाकी रह गया था। पापा, मेरा वह मतलब नहीं था, नवीन सिर झुका कर बोला। नहीं बेटा, तुम्हारी पीढ़ी ने हमें भी प्रैक्टिकल बनने का सबक दे दिया। जब हम तुम दोनों को साथ देखकर खुश हो सकते हैं, तो तुम लोगों को हम लोगों से दिक्कत क्यों है...? नवीन समझ गया कि उन दोनों की बातें उनके कानों में पड़ चुकी हैं। इस मकान को घर तुम्हारी मां ने बनाया, ये पेड़ और इनके फूल तुम्हारे लिए मांगी गई न जाने कितनी मनौतियों के साक्षी हैं, तो उस का कोना मैं किसी को छीनने का अधिकार नहीं दूंगा... पापा, आप तो सीरियस हो गए, नवीन का स्वर अब नरम हो चला था। न बेटा... तुम्हारी मां ने जाने कितने कष्ट सह कर, कितने त्याग कर के मेरा साथ दिया। आज इसी के सहयोग से मेरे सिर पर कोई कर्ज नहीं है... इसलिए सिर्फ ये कोना ही नहीं पूरा घर तुम्हारी मां का ऋणी है...घर तुम दोनों से पहले उस का है, क्योंकि जीभ पहले आती है, न कि दांत... औलाद होने का हमसे लाभ उठाओ, पर तुम्हें मांबाप साथ में बुरे क्यों लगते हैं? जिंदगी हमें भी तो एक ही बार मिली है... हम तुम्हें प्यार से रहते देख खुश होते हैं, तो तुम्हें हम क्यों खटकते हैं... तकलीफ मुझे बहू से ज्यादा तुम से हुई। तुम्हें भी मेरी तरह अपनी पत्नी की ख्वाहिशों को पूरा करना चाहिए, कह कर अशोकजी प्रभा के पास जाकर खड़े हो गए।

अशोकजी के इस कठोर फैसले ने सोनम और नवीन दोनों के होश उड़ा दिए। वह मुंह लटका कर अंदर गया और सोनम को पापा के फैसले से अवगत कराया। उनके इस फैसले ने सोनम की नींद उड़ा दी। उसने सब से पहले अपने मायके फोन कर के वस्तुस्थिति की जानकारी दी। सोनम रोते हुए बोली, हैलो मम्मी, पापाजी ने हमें घर खाली करने को कह दिया है। ऐं, ऐसे कैसे... बेटा, समझाओ-बुझाओ, इतनी जल्दी तो हम भी कुछ नहीं कर सकते, यहां अपने घर का हाल तुम जानती तो हो... यहां तुम्हारी भाभी हमें ही परेशान किए हुए है, उस की मम्मी ने कहा। उधर नवीन ने भी तनावग्रस्त होकर माथा पकड़ लिया। सोनम बोली, नवीन, क्यों न अपनी बुआ और चाचा को सब हाल बताकर उन्हें पापा को समझाने के लिए मनाओ न...अभी तो एकाउंट खाली है। इतनी जल्दी सब कैसे होगा? नवीन ने उसके इस सुझाव पर उसे गले लगा लिया। अगले ही दिन उसने छुट्टी लेकर अपनी बुआ और चाचा दोनों से मिलने का समय ले लिया। अरे नवीन, आज चाचा की याद कैसे आ गई? विवेक ने अनुभवी नजरों से परखते हुए सवाल दाग दिया। नवीन सिर झुकाए बोला, चाचाजी, पापा ने घर खाली करने को कहा है। बताइए अच्छा लगता है कि घर होते हुए अपना ही बेटा उसी शहर में किराए पर रहे...? देखो बेटा, यह परिवार का मामला है। किराए पर रहने के लिए कहा है भैया ने, तो सोचसमझ कर ही कहा होगा, विवेक ने कहा, मैं भैया के फैसले के खिलाफ नहीं जा सकता और न ही तुम्हें अपने घर में रहने को कह सकता हूं। यहां भी सीमित जगह है, विवेक ने अपना पक्ष साफ कर दिया। अब नवीन का एकमात्र सहारा थीं उसकी बुआ। उसने कहा, बुआ, पापा ने 3 महीने का अल्टीमेटम दे दिया है... आप समझाओ न उन्हें। वे तपाक से बोलीं, सही कर रहे हैं भैया। तुमने और तुम्हारी पत्नी ने कौन सी कसर छोड़ दी थी, जो हम तुम्हारी तरफ से उन से बात करें..। हमारे घर में भी तुम्हें रखने की जगह नहीं है, 2-4 दिन के लिए रहना अलग बात है और रोज के लिए रखना अलग। तुम अपने दोस्तों से बात क्यों नहीं करते? मैं मायके से रिश्ता क्यों बिगाड़ लूं? नवीन ने अपने दोस्तों अमन और पवन से इस आकस्मिक मुसीबत से निबटने का रास्ता मांगा, तो अमन भी घबरा कर बोला, यार, पैसा तेरे पास होता तो तू आराम से कहीं भी रह लेता... पवन यह भी बोला, फिर हमारे घर में जगह भी नहीं है और कहीं हमारे मम्मीपापा को अंकल के इस निर्णय के बारे में पता चला, तो हम लोगों के साथ भी यही कहानी न दोहरा दी जाए... भाई, तू थोड़े दिन दूर ही रह। ■

With Best Compliments from

ECONOMIC TRANSPORT Co.

C/o Superstar Leasing Financing Ltd.

Gandhi market, Fazal ganj, Kanpur

(Fleet Owner & Transport Contractor)

Branches

Kanpur, Noida, Delhi, Gurgaon

रील्स की मायावी दुनिया व साहित्य

इन दिनों रील्स और उसके कंटेंट की अच्छे और बुरे कारणों से खूब चर्चा होती रहती है। आजकल रील्स देखना बहुत ही लोकप्रिय होता जा रहा है। चकित करने वाली बात यह है कि रील्स के विषयों का फलक इतना व्यापक है कि वो किसी को भी घंटों तक रोके रख सकता है। अब तो स्थिति यह हो गई है कि रील्स में दिखाई गई बातों को सत्य माना जाने लगा है।

विजय गर्ग

रील्स की दुनिया में भविष्यवक्ताओं की बाढ़ आई हुई है। कोई आपके नाम के आधार पर तो कोई आपके नाम में प्रयुक्त अक्षरों की संख्या को जोड़कर आपका भविष्य बता रहा है। कई महिलाएं भी भविष्य के बारे में बात करती नजर आएंगी। वो भी बता रही हैं। कि शुक्रवार को पति के साथ किस प्रकार का व्यवहार करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं। कोई महिला यह बताती है कि पत्नी को हर दिन पति के पाँव दबाने चाहिए, क्योंकि लक्ष्मी जी भी विष्णु जी के पांव दबाती हैं। कोई महिला यह बताती है। कि अमुक अंक लिखकर अपने घर की तिजोरी में रख दो या अमुक नंबर के नोट अगर आपने अपने घर में पैसे रखने के स्थान पर रख दिया तो आपके पास धन की कोई कमी नहीं होगी। इसके अलावा, स्वास्थ्य विषय पर भी इनके बहुत सारे रील्स हैं कि यह खाना चाहिए या फिर यह नहीं खाना चाहिए।

इतना ही नहीं, रील्स की दुनिया में बिजनेस करने के तौर तरीकों और और जमाधन को दोगुना और तिगुना तक करने के नुस्खे भी बताए जाने लगे हैं। ये सब इतने रोचक अंदाज में बताया जाता है कि देखनेवाला मोबाइल से चिपका रहता है। आमतौर पर यह देखा जाता है कि अगर रील्स देखना आरंभ कर दें तो घंटे दो घंटे तो ऐसे ही निकल जाते हैं। कहना न होगा कि रील्स की दुनिया एक ऐसी मनोरंजक दुनिया है जो लोगों को बेहतर भविष्य का सपना भी दिखाती है। लोगों को पैसे कमाने से लेकर घर परिवार की सुख समृद्धि के नुस्खे बताती है। ये नुस्खे कितने सफल होते हैं यह पता नहीं, क्योंकि इस तरह का कोई रील देखने में नहीं आता है कि फलां नुरखे से उनका लाभ हुआ या इस तरह की कोई केस स्टडी भी अभी तक समने नहीं आई हैं कि फलां नंबर के नोट तिजोरी में रखने से उसकी आमदनी निरंतर बढ़ती चली गई। परंतु हां, इतना अवश्य है कि रील्स एक ऐसी काल्पनिक दुनिया में ले जाता है, जहां सबकुछ मोहक और मायावी लगता है। रील्स की दुनिया को हल्के-फुल्के मनोरंजन के तौर पर लिया जाना चाहिए। लिया जा भी रहा है। लेकिन इन दिनों साहित्य, कला और कविता से जुड़े कुछ ऐसे रोल्स देखने को मिले जो चिंतित करते हैं। हाल के दिनों में कई ऐसे रील्स देखने को मिले जिनमें सेलिब्रिटी कविता पढ़ते नजर आ रहे हैं। वो कविता किसी और की पढ़ते हैं और रील्स के डिस्क्रिप्शन में कवि का नाम लिख देते हैं। रोल में कहीं कवि का नाम नहीं होता है। सेलिब्रिटी की टीम उसको इंटरनेट मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म पर पोस्ट कर देती है और अश्वत्थामा हतौ नरौ.... वाली ईमानदारी के साथ वीडियो के डिस्क्रिप्शन में कवि का नाम लिख देती है। होता यह है कि सेलिब्रिटी की पढ़ी गई कविताओं का वीडियो इन प्लेटफार्म्स से डाउनलोड करके उनके प्रशंसक उसको फिर से उन्हीं प्लेटफार्म्स पर साझा करना आरंभ कर देते हैं। प्रशंसक अश्वत्थामा वाली ईमानदारी को समझ नहीं पाते और वो सेलिब्रिटी की कविता के नाम से ही उसे साझा करना आरंभ कर देते हैं। दिनकर जी जैसे श्रेष्ठ कवियों की कविताएं तो लोगों को पता है तो उसमें यह खेल नहीं हो पाता है, लेकिन कई नवोदित कवि की कविताएं सेलिब्रिटी के नाम से चलने लगती हैं। कवि को पता भी नहीं चलता और वह कविता सेलिब्रिटी के नाम हो जाती है। रील्स की दुनिया में इस बेईमानी से कई साहित्यिक प्रतिभा कुंद हो जा रही हैं। इसका निदान कहीं न कहीं बौद्धिक जगत को ढूंढना ही चाहिए। इंटरनेट मीडिया पर बाढ़ की तरह संचालित इन रील्स का एक और नुकसान जो साहित्य का हो रहा है, वह यह कि पौराणिक ग्रंथों से बगैर संदर्भ के किस्सों को उठाकर प्रामाणिक तरीके से पेश कर दिया जा रहा है। पिछले दिनों जब इलाहाबादिया का मामला सामने आया था तो उसके कुछ दिनों बाद एक रील मेरी नजर से गुजरा। एक बेहद लोकप्रिय व्यक्ति उसमें एक किस्सा सुना रहे थे। किस्से में वह बता रहे थे कि कालिदास अपना ग्रंथ कुमारसंभव पूरा क्यों नहीं कर पाए? उनके हिसाब से कालिदास जब कुमारसंभव में पार्वती और शंकर जी की रतिक्रिया के बारे में लिखने जा रहे थे, तब पार्वती जी को पता चल गया। उन्होंने सरस्वती जी को बुलाया और कहा कि यह कौन सा कवि है और क्या लिखने जा रहा है। इसे रोकना होगा। फिर किस्सागोई के अंदाज में यह प्रसंग आगे बढ़ता है। आगे वह बताते हैं कि सरस्वती जी ने क्रोधित होकर उनको श्राप दे दिया और वो बीमार हो गए। इस कारण से कुमारसंभव पूरा नहीं हो पाया।

यहां हमें यह समझना चाहिए कि कालिदास बीमार अवश्य हुए थे। उन्हें पक्षाघात हो गया और वह भी सरस्वती के श्राप के कारण, परंतु इसे कहां से उद्धृत किया गया था, यह तथ्य भी सामने आना चाहिए। इस पूरे प्रसंग में शब्द कुछ अलग हो सकते हैं, परंतु उनका भाव यही था। इस तरह के प्रकरणों में चिंता की बात यह है कि यह पूरा प्रसंग जैसे सुनाया गया, वह विश्वसनीय सा लगता है। इसे सुनकर नई पीढ़ी के लोगों में से कई सच मान सकते हैं, विशेषकर वे जो उनके प्रशंसक हैं। इससे तो एक अलग तरह का इतिहास बनता है। बौद्धिक समाज को इस तरह के प्रसंगों पर विचार करते हुए इस पर विमर्श को बढ़ावा देना चाहिए। चिंता तब और अधिक होती है, जब इस तरह के रील बनानेवाले लोग लोकप्रिय होते हैं। रील्स की दुनिया से पहले फेसबुक ने साहित्य का बहुत नुकसान किया, विशेषकर कविता का फेसबुक के लाइक्स और कमेंट ने कवियों और रचनाकारों के दिमाग में यह बैठा दिया कि अब उनको आलोचकों की आवश्यकता ही नहीं है। वो सीधे पाठक तक पहुंच रहे हैं। ऐसे लोग यह मानते थे कि आलोचक पाठकों तक पहुंचने का एक जरिया है। जबकि आलोचकों की भूमिका उससे कहीं अलग होती है। आलोचक रचना के अंदर प्रवेश करके उसकी गांठों को खोलकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है। रचनाओं में अंतर्निहित भावों को आसान शब्दों में पाठकों को समझाने का प्रयत्न करता है। इससे रचनाकार और पाठक के बीच एक ऐसा संबंध बनता था जो फेसबुक के कमेंट से नहीं बन सकता है। फेसबुक पर जिस तरह के कमेंट आते हैं, उनमें से अधिकतर तो प्रशंसा के ही होते हैं जो रचना का न तो आकलन कर पाते हैं और न ही रचना के भीतर प्रवेश करके उसकी परतों को पाठकों के लिए खोलते हैं। कुल मिलाकर जो परिस्थितियाँ बन रही हैं उनमें प्रमाणिक स्रोतों के आधार पर तथ्यों को प्रस्तुत करने के लिए साहित्यकारों को आगे आना होगा। प्रो. जगदीश्वर चतुर्वेदी वर्षों से आह्वान कर रहे हैं कि साहित्यकारों को इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म्स पर लिखना चाहिए। उनके नहीं लिखने से अनर्गल लिखनेवालों का बोलबाला होता जा रहा है। तकनीक को साहित्यकारों को अपनाना चाहिए और उसके नए माध्यमों को पाठकों तक पहुंचने का औजार बनाना चाहिए।

कुल मिलाकर जो परिस्थितियाँ बन रही हैं उनमें प्रमाणिक स्रोतों के आधार पर तथ्यों को प्रस्तुत करने के लिए साहित्यकारों को आगे आना होगा। प्रो. जगदीश्वर चतुर्वेदी वर्षों से आह्वान कर रहे हैं कि साहित्यकारों को इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म्स पर लिखना चाहिए। उनके नहीं लिखने से अनर्गल लिखनेवालों का बोलबाला होता जा रहा है। तकनीक को साहित्यकारों को अपनाना चाहिए और उसके नए माध्यमों को पाठकों तक पहुंचने का औजार बनाना चाहिए।

हनुमान जयंती विशेष

महावीर श्री हनुमान

आस्था, बल और बुद्धि के संगम

गिरीश्वर मिश्र

संस्कृति के लोक का कलेवर अत्यन्त विशाल, व्यापक और आमजन को सामर्थ्यवान बनाने वाला होता है। उसके अंतर्गत परिकल्पित परिवेश के पात्र अक्सर देश- काल की सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए विचार, प्रतिमा, प्रथाओं और विभिन्न अनुष्ठानों की सहायता से सबके लिए उपलब्ध रहते हैं। उनके साथ कथाएँ और किंवदंतियाँ भी जुड़ती रहती हैं क्योंकि उनसे लोगों को जीवन जीने के लिए जरूरी समर्थन, प्रेरणा और शक्ति मिलती है। राम-भक्ति के सिरमौर पवनसुत श्री हनुमान शारीरिक बल और उत्तम कोटि की मेधा या बुद्धि में श्रेष्ठ ऐसे ही विरल भारतीय व्यक्तित्व की सर्जना हैं। हनुमान जी कई अर्थों में विलक्षण हैं। वे कई तरह के परस्पर विरोध दिखाने वाली विशेषताएँ भी रखते हैं। मानवेतर होने पर भी गूढ़ राम-रसायन का तत्व उन्हीं के पास है। वे श्रीराम के निकट परिवार के सदस्य न होकर भी राम पंचायतन के प्रमुख और स्थायी सदस्य हैं। मंदिरों और चित्रों में सर्वत्र श्रीराम का स्मरण श्री हनुमान के बिना पूरा नहीं होता है। भगवान श्रीराम अपने प्रिय भक्त हनुमान को भरत की ही तरह सगा छोटा भाई मानते हैं। भरतजी भक्त-शिरोमणि कहलाते हैं। उन्हीं की तरह महावीर श्री हनुमान भी निर्विवाद रूप से श्रीराम के परम भक्त हैं। गोस्वामी जी उनको कपीश्वर कहते और कवीश्वर वाल्मीकि के साथ याद करते हैं। ये दोनों सीताराम के गुणों के पुण्य जंगल में विचरण करते रहते हैं-सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिनौ कवीश्वरकपीश्वरौ। श्रीराम की कथा हनुमान जी को अत्यंत प्रिय है और यदि वे उसके रसिया हैं तो श्रीराम और सीताजी को भी हनुमान जी अत्यंत प्रिय हैं और उनके मन में बसे रहते हैं। श्री हनुमान की लौकिक उपस्थिति और अलौकिक कार्य-शैली सबको चकित करने वाली है। यही कारण है कि उनकी लोकप्रियता असाधारण रूप से बढ़ती रही है। बचपन से ही श्री हनुमान के स्मरण के साथ बल, तेज और निर्भीकता की भावनाएँ जुड़ जाती हैं। श्री हनुमान के कई मंदिरों की सिद्ध स्थानों के रूप में प्रसिद्धि है और बड़ी आस्था के साथ भक्त और दुखियारे सभी वहाँ पहुँचते हैं। रामकथा के ब्यौरे में जाएँ तो पता चलता है कि जब जटिल प्रसंग आते हैं, जब कठिन समस्या का कोई समाधान नहीं मिलता तो हनुमान का स्मरण किया जाता है। वे रामदूत और एक संवादी के रूप में जगत प्रसिद्ध हैं। जैसा कि हम सब जानते हैं, श्रीराम द्वारा लंका विजय की मानुष अवतार वाली रामकथा में कई जटिल अवसरों पर बजरंग बली के बिना उलझनों का समाधान ही नहीं मिलता और कथा आगे ही नहीं बढ़ती। हनुमान जी सभी सिद्धियों के आगार और गुणों में निष्णात तो हैं ही उनके पास सभी निधियाँ भी हैं। यह सब होने के बावजूद अतुलित बलशाली हनुमान जी बड़े सरल स्वभाव के हैं। सभी तरह की संपदा होने के बावजूद उन्हें अहंकार का लेश मात्र नहीं है। उनका अहं भाव विगलित हो चुका है और वे इस मायावी जाल से परे हैं। श्रीराम और उनके भक्तों के साथ उनका व्यापक तादात्मीकरण है। इस तरह के अद्वैत के साथ वह प्रभु श्रीराम के साथ निर्विकल्प रूप से जुड़े हुए हैं। रामकाज करना ही उनका प्रथम और अंतिम ध्येय है। विमल यश वाले हनुमानजी मित्रता, शौर्य, साहस, धैर्य, चातुर्य और बुद्धिमत्ता आदि गुणों में अतुलनीय मानक सदृश हैं। वे दुर्मति को हटा कर सुमति को प्रतिष्ठित कर भक्तों का क्लेश दूर करते हैं। वस्तुत: श्रीराम तक की यात्रा बिना हनुमानजी की सहायता के संभव नहीं है और उन जैसे नि:स्पृह स्वभाव वाले को निश्छल प्रेम के सिवा कुछ भी नहीं चाहिए। इसलिए हनुमान जी सर्वजनसुलभ हैं। आज देश के कोने-कोने में गाँव और शहर सर्वत्र उनकी पूजा-अर्चना के लिए लोग तत्पर रहते हैं और अनेकानेक भव्य मंदिर उनको समर्पित हैं। लोग अपनी मनोकामना की साध लिए बड़े भरोसे के साथ हनुमानजी की शरण में आते हैं। हनुमानजी को रिझाने के लिए मंदिरों में मंगलवार को भीड़ टूट पड़ती है। पर हमें यह भी जरूर याद रखना चाहिए कि सच्ची भक्ति तो भक्त और भगवान के बीच किसी तरह का हिसाब-किताब नहीं करती। वह निर्मल मन से समर्पण और अखंड प्रीति चाहती है। हनुमानजी की भक्ति हमें अपने जीवन में अभय, परदुखकातरता, निष्कपट मित्रता, सदाचार और ईश्वर के प्रति समर्पण जैसे मूल्यों को उतारने के लिए प्रेरित करती है। ■

मूवी रिव्यूः सिकंदर

अविनाश वर्मा

एक लंबे अरसे से ईद रिलीज पर सलमान खान का वर्चस्व रहा है। हर साल वह ईद के मौके पर अपने फैंस के लिए ईदी के रूप में अपनी फिल्म लेकर आते हैं। इस बार उन्होंने साउथ के मशहूर डायरेक्टर एआर मुरुगादॉस के साथ जुगलबंदी की है। निर्देशक एआर मुरुगादॉस 2008 में जब आमिर खान की **गजनी** लेकर आए थे, तब फिल्म ने हंगामा मचा दिया था और हिंदी के दर्शकों में निर्देशक को अच्छी-खासी पहचान मिली थी। अक्षय कुमार स्टारर **हॉलिडे** में भी उनके निर्देशन को पसंद किया गया, मगर इस बार एआर मुरुगादॉस का जलवा कायम नहीं रह पाता। उन्होंने अपनी फिल्म में तमाम मसाले डाले हैं, मगर उसकी मिकदार में मार खा गए हैं। यही वजह है कि सलमान खान का स्वैग, एक्शन, इमोशन सब जाया हो जाता है।

सिकंदर की कहानी

कहानी है राजकोट की जनता के दिलों में राज करने वाले संजय (सलमान खान) की, जो राजकोट का राजा है और अपनी जनता की भलाई के लिए सब कुछ कुर्बान कर देने का जज्बा रखने वाले संजय को लोग फरिश्ता मानते हैं। उसे सिकंदर और राजा साहब के नामों से भी जाना जाता है। साईश्री (रश्मिका मंदाना) संजय की पतिव्रता पत्नी है, जो हर समय संजय की सलामती की चिंता करती है। कहानी की शुरुआत होती है मिनिस्टर प्रधान (सत्यराज) के बेटे अर्जुन प्रधान की बेहूदगी से, जहां वह फ्लाइट में एक महिला को मॉलेस्ट करने की कोशिश कर रहा होता है, मगर तभी उस महिला को संजय आकर बचाता है और अर्जुन को उस महिला के पैरों में गिर कर माफी मांगने पर मजबूर कर देता है। अर्जुन और मिनिस्टर प्रधान संजय से इस बेइज्जती का बदला लेने के लिए उसके पीछे पड़ जाते हैं, मगर अर्जुन की जिंदगी में उस वक्त तूफान आ जाता है, जब साईश्री प्रतिशोध की इस आग में कुर्बान हो जाती है। साईश्री के जाने के बाद संजय को पता चलता है कि उसकी पत्नी गर्भवती थी। वह गहरे शोक में डूब जाता है, पर उसे ये बात सहारा देती है कि उसकी पत्नी ने अपने ऑर्गन डोनेट कर दिए थे और इस तरह से तीन अलग-अलग लोगों के अंगों के जरिए साईश्री जीवित रहेगी। मिनिस्टर प्रधान षड्यंत्र रच कर संजय को पंजाब में हुए ब्लास्ट का दोषी साबित करना चाहता है। उसकी बदले की लड़ाई उस वक्त और ज्यादा विभत्स रूप ले लेती है, जब वह अपने बेटे अर्जुन को खो देता है। अब मिनिस्टर प्रधान का एक ही लक्ष्य है कि किसी भी तरह से उन तीन लोगों को खोज कर खत्म करना, जिन्हें साईश्री ने अंगदान किया है। इधर राजकोट से मुंबई आ चुके संजय के जीवन का भी एक ही मकसद है, उन तीनों की जान बचाना, जिनके जरिए उसकी पत्नी जिंदा है। क्या संजय उन तीनों की जान बचा पाता है या मिनिस्टर के षड्यंत्र का शिकार होकर जेल की सलाखों के पीछे पहुंच जाता है? सलमान खान की मौजूदगी में हीरो का ओवर द टॉप होना स्वाभाविक है, मगर समस्या तब होती है, जब निर्देशक एआर मुरुगादॉस की कहानी में नयेपन का अभाव नजर आता है। मुरुगादॉस अपनी फिल्म के किरदारों को गढ़ने में कमतर साबित होते हैं। कहानी में कई चरित्र ऐसे हैं, जिनका समुचित विकास नहीं किया गया है। कमजोर कहानी और ढीले-वाले स्क्रीनप्ले के चलते फिल्म प्रभाव नहीं जमा पाती। वन लाइनर के लिए मशहूर रही सलमान की फिल्मों की तरह इस बार भाई के वो डायलॉग भी नहीं मिलते, हां, एक्शन फिल्मों के लिए जाने जाने वाले एआर मुरुगादॉस का एक्शन धमाकेदार है। एक्शन दृश्यों को बहुत ही कमाल तरीके से कोरियोग्राफ किया गया है। तिररू की सिनेमैटोग्राफी में दम है। टॉप एंगल से लिए गए भीड़ के दृश्य ग्रेंजर एड करते है। निर्देशक ने एक्शन के साथ इमोशन जोड़ने की कोशिश की है, मगर वह भी दर्शकों को टुकड़ों में मिलता है। फिल्म के कई दृश्य अतार्किक लगते हैं। कहानी में तारतम्यता की कमी है। फिल्म का रन टाइम 2 घंटे 35 मिनट का है, जो लंबा लगता है। संतोष नारायण का बीजीएम विषय के मुताबिक है। संगीत की बात की जाए तो प्रीतम के दो गाने **जोहरा जबीं** और **बम बम** बोले ठीक ठाक बन पड़े हैं।

क्यों देखें: आप अगर सलमान खान के फैंस हैं, तो ये फिल्म देख सकते हैं। ■

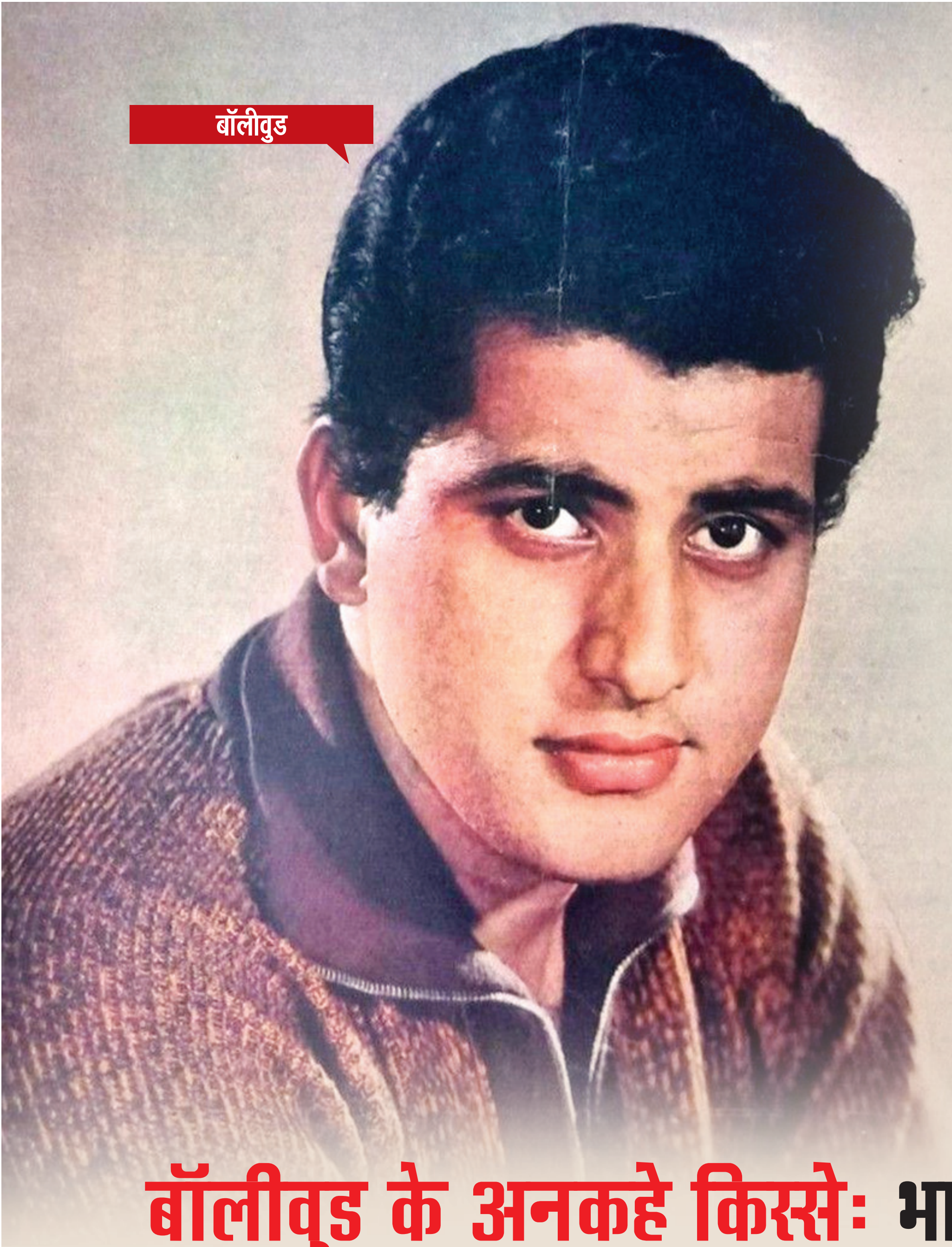

प्रख्यात अभिनेता और निर्माता निर्देशक मनोज कुमार 4 अप्रैल 2025 को हमारे बीच नहीं रहे। अपनी देशभक्ति की फिल्मों और उनमें अपने नाम भारत के कारण उन्हें लोग भारत कुमार के नाम से ही बुलाने लगे थे। लेकिन मनोज कुमार को केवल भारत कुमार की दृष्टि से ही देखा जाना, उनकी अन्य दूसरी खासियतों को नजर अंदाज करना है। इसमें कोई दो राय नहीं कि वह देशभक्त थे, लेकिन उनकी देशभक्ति आजकल के प्रचलित देशभक्ति के पैमानों से अलग थी। उनकी देशभक्ति में भारत की वह उदार और परंपरागत छवि थी, जिसे उसके महापुरुषों ने लंबे त्याग और बलिदान से हासिल किया था। देशभक्ति का यही स्वरूप शायद आम जनता को भी पसंद है, तभी देशभक्ति की उनकी सभी फिल्मों को दर्शकों का भी भरपूर प्यार मिला।

बॉलीवुड के अनकहे किस्से: भारत कुमार उर्फ़ मनोज कुमार का जाना

अजय कुमार शर्मा

उनकी देशभक्ति की सभी फिल्में चाहें उपकार हो, पूरब और पश्चिम हो या क्रांति हो, उसमें देश के लिए बलिदान देने के लिए हिंदू, मुस्लिम, सिख और ईसाई सभी शामिल हैं। इस देशभक्ति में किसी खास तबके या धर्म का एकाधिकार नहीं था। इन फिल्मों की पृष्ठभूमि में किसी खास देश का विरोध भी नहीं है, बल्कि वह इसके लिए भारतीय समाज के सांस्कृतिक पतन को जिम्मेदार ठहराते हैं। उनकी संतुलित देशभक्ति का एक कारण शायद यह भी है कि वह एटमाबाद में जन्मे थे और दिल्ली एक शरणार्थी के रूप में पहुंचकर दो साल रिफ्यूजी कैंप में ही रहे थे। अब अगर उनकी अन्य प्रतिभाओं की बात करें तो देशभक्ति की सफल फिल्मों के निर्माण -निर्देशन से पहले उनका लंबा कैरियर एक सफल अभिनेता के रूप में भी है, जिसमें वह लगभग 40 फिल्में करते हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उन्होंने अपनी एक खास पहचान तब हासिल की, जब उस समय की प्रसिद्ध स्टार तिकड़ी दिलीप कुमार, राजकपूर और देवानंद लोगों के दिलों में राज करती थी, लेकिन उन्होंने खुद संघर्ष करके अपनी एक अलग छवि और पहचान बनवाई।

फिल्मों में उनका कोई नहीं था न ही वह किसी समृद्ध घराने के थे, हां उनके चाचा-चाची जरूर बंबई में रहते थे और निर्माता लेखराज भाखरी, मुल्कराज भाखरी उनके दूर के रिश्तेदार थे, लेकिन सिनेमा और दर्शकों के मन की गहरी समझ के सहारे उन्होंने अपने समय में कुछ ऐसी फिल्में चुनीं, जिन्हें दर्शकों का भरपूर प्यार मिला। कांच की गुड़िया और हरियाली और रास्ता के बाद वह अपनी राह खुद बनाते चले गए। नायक के रूप में उनका व्यक्तित्व दिलीप कुमार और राज कपूर का मिलता-जुलता स्वरूप था, यानी सीधा-साधा नायक जो प्यार में धोखा खाता है या फिर उसे पा नहीं पाता है। राज घोसला ने उन्हें अपनी जासूसी फिल्म, वो कौन थी से एक नई छवि दी, जिसे गुमनाम और अनीता में भी दोहराया गया। अपने अभिनय के सर्वोच्च समय में वे नायक के रूप में ऐसी ही फिल्में करते हैं, जिनमें वह अपनी सभ्यता या संस्कृति से कोई समझौता करते नजर नहीं आते हैं, बल्कि इसके लिए अपने प्यार को भी छोड़ने के लिए तैयार रहते हैं। पहचान, यादगार, दो बदन, नीलकमल, आदमी, बनारस का ठग, डॉ. विद्या अनेक ऐसी फिल्में हैं। एक समय में उन्होंने बाजार की जरूरत को देखते हुए बेईमान, दस नंबरी और संन्यासी जैसी सफल फिल्में कीं, लेकिन यहां पर भी वे देश या समाज में फैले भ्रष्टाचार और आडंबरों से लड़ते हुए नजर आते हैं। एक सजग और सफल निर्देशक के रूप में उनकी पारी वैसे तो 1965 में प्रदर्शित हुई फिल्म शहीद से ही शुरू हो जाती है। शहीद भगत सिंह के जीवन पर बनी इस फिल्म के लिए उन्होंने सारा शोध करके पटकथा तो लिखी ही, बल्कि इसके निर्माण में अपने मित्र केवल कश्यप का पूरा साथ दिया। वह इस फिल्म के लिए हर उस व्यक्ति से मिले जो उस समय जिंदा था और किसी भी रूप में भगत सिंह के संपर्क में आया था। उनकी मां और भाई से भी वे मिले। इस फिल्म को उन्होंने पूरी शिद्दत से बनाया और भगत सिंह पर पहले आई असफल फिल्मों के बावजूद यह फिल्म बेहद सफल रही। इसका एक-एक गीत अमर हो गया। हालांकि, इसमें निर्देशक के रूप में एस. शर्मा का नाम गया था, लेकिन सब जानते हैं कि यह फिल्म उनके द्वारा ही निर्देशित थी। इसी फिल्म को देखकर लालबहादुर शास्त्री ने अपने नारे जय जवान, जय किसान को लेकर फिल्म बनाने को कहा। तब हमारे सामने उपकार जैसी बेहद सफल फिल्म सामने आई और मनोज कुमार भारत कुमार के रूप में पहचाने जाने लगे, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इसके बाद 1971 में वे शोर जैसी मार्मिक फिल्म बनाते हैं जो पिता पुत्र के प्यार की अनोखी कहानी है। अपने गूंगे बच्चे को आवाज देने के लिए एक पिता इतना संघर्ष करता है कि जिस दिन उसके बच्चे की आवाज वापस आती है, वह अपनी श्रवण शक्ति ही खो बैठता है। इस फिल्म का गीत, संगीत, कास्टिंग सब अद्भुत है। उनके संघर्ष में सब अड़ोसी- पड़ोसी यानी हर धर्म और तबके के लोग शामिल हैं। रोटी कपड़ा और मकान में भी उस समय की महंगाई, भ्रष्टाचार, मिलावट, बेरोजगारी, राजनीति पर तीखे तंज हैं। क्रांति जैसी सफल फिल्म के बाद वे कलयुग और रामायण में रामायण को आदर्श मानने वाले लोगों के कलयुग में किए जाने वाले छद्म आदर्शों पर तीखा कटाक्ष करते हैं। इस कारण उनका विरोध भी हुआ था। उनकी फिल्म क्लर्क भी अलग तरह की फिल्म हैं और तत्कालीन भारतीय राजनीतिक और सरकारी दफ्तरों में फैले भ्रष्टाचार पर तीखी टिप्पणी करती है। क्लर्क में वह पहली बार पाकिस्तानी कलाकारों मोहम्मद अली और जेबा को लेते हैं जो बाद में एक ट्रेंड बनता है। वह अपनी फिल्मों के गीतों द्वारा भी आम जनता तक अपने संदेश व्यापक तरीके से पहुंचाने में सिद्धहस्त थे। उनके गीत देशभक्ति के अलावा महंगाई और राजनीति के वर्तमान स्वरूप पर साफ-साफ बात करते हैं। गीत-संगीत की गहरी समझ उन्हें कई बार राजकपूर से ऊपर खड़ा करती है। एक बात और कि वह राज कपूर की तरह अपनी विचारधारा में कोई समझौता नहीं करते और न ही देवानंद की तरह अपने आप को लगातार दोहराते हैं। वह जब समझ जाते हैं कि अब उनकी बात लोगों तक नहीं पहुंच रही है, तो वह अपने को समेट लेते हैं। अत: हमें उन्हें भारत कुमार के साथ ही ऐसे श्रेष्ठ अभिनेता और निर्माता निर्देशक के रूप में याद रखना चाहिए जिन्होंने आम जनता को स्वस्थ मनोरंजन के साथ ही सामाजिक संदेशों से भी रूबरू कराया।

मां को इलाज नहीं मिला तो 10 साल की उम्र में डॉक्टरों की पिटाई की

मनोज कुमार का असली नाम हरिकृष्ण गोस्वामी था। 24 जुलाई 1937 को एबटाबाद, ब्रिटिश इंडिया (अब खैबर पख्तूनख्वा, पाकिस्तान) में उनका जन्म हुआ। एबटाबाद वही जगह है, जहां 2 मई 2011 को अमेरिका ने ओसामा बिन लादेन को मारा था। मनोज कुमार जब 10 साल के थे तब 1947 में उनके छोटे भाई कुक्कू का जन्म हुआ। तबीयत बिगड़ने पर 2 माह के भाई और मां को अस्पताल में भर्ती करवाया गया था कि तभी दंगे भड़क गए। हर तरफ अफरा-तफरी मची और अस्पताल का स्टाफ जान बचाकर भागने लगा। जैसे ही सायरन बजता था तो जो डॉक्टर और नर्स बचे हुए थे वो अंडरग्राउंड हो जाया करते थे। ऐसे में सही इलाज ना मिल पाने के चलते मनोज कुमार के 2 माह के भाई ने अस्पताल में ही दम तोड़ दिया। मां की हालत भी उस समय गंभीर थी। वो तकलीफ में चिल्लाती रहती थीं, लेकिन कोई डॉक्टर या नर्स उनका इलाज नहीं करता था। एक दिन ये सब देखकर मनोज इस कदर नाराज हुए कि उन्होंने लाठी उठाई और अंडरग्राउंड जाकर डॉक्टर्स और नर्स को पीटना शुरू कर दिया। मनोज तब सिर्फ 10 साल के थे, लेकिन उनसे मां की तकलीफ देखी नहीं जा रही थी। पिता ने उन पर काबू पाया और परिवार ने जान बचाने के लिए पाकिस्तान छोड़ने का फैसला कर लिया। उनका परिवार जंडियाला शेर खान से पलायन कर दिल्ली पहुंचा। यहां उन्होंने 2 महीने रिफ्यूजी कैंप में बिताए। समय बीता और दंगे कम होने लगे। पूरा परिवार जैसे-तैसे दिल्ली में बस गया, जहां मनोज की पढ़ाई हो सकी। उन्होंने स्कूल के बाद हिंदू कॉलेज से ग्रेजुएशन पूरा किया और नौकरी की तलाश शुरू कर दी।

लाइट टेस्टिंग के लिए कैमरे के सामने खड़े किए गए, यहीं से रोल मिला

एक दिन मनोज कुमार काम की तलाश में फिल्म स्टूडियो में टहल रहे थे कि उन्हें एक व्यक्ति दिखा। मनोज ने बताया कि वो काम की तलाश कर रहे हैं, तो वो आदमी उन्हें साथ ले गया। उन्हें लाइट और फिल्म शूटिंग में लगने वाले दूसरे सामानों को ढोने का काम मिला। धीरे-धीरे मनोज के काम से खुश होकर उन्हें फिल्मों में सहायक के रूप में काम दिया जाने लगा। फिल्मों के सेट पर बड़े-बड़े कलाकार अपना शॉट शुरू होने से बस चंद मिनट पहले पहुंचते थे। ऐसे में सेट में हीरो पर पड़ने वाली लाइट चेक करने के लिए मनोज कुमार को हीरो की जगह खड़ा कर दिया जाता था। एक दिन जब लाइट टेस्टिंग के लिए मनोज कुमार हीरो की जगह खड़े हुए थे। लाइट पड़ने पर उनका चेहरा कैमरे में इतना आकर्षक लग रहा था कि एक डायरेक्टर ने उन्हें 1957 में आई फिल्म फैशन में एक छोटा सा रोल दे दिया। रोल छोटा जरूर था, लेकिन मनोज कुछ मिनट की एक्टिंग में अपनी छाप छोड़ने में कामयाब रहे। उसी रोल की बदौलत मनोज कुमार को फिल्म कांच की गुड़िया (1960) में लीड रोल दिया गया। पहली कामयाब फिल्म देने के बाद मनोज ने बैक-टु-बैक रेशमी रुमाल, चांद, बनारसी ठग, गृहस्थी, अपने हुए पराए, वो कौन थी जैसी कई फिल्में दीं।

फिल्म ने मनोज कुमार को दिया भारत कुमार नाम

उपकार 1967 की सबसे बड़ी फिल्म थी। फिल्म का गाना मेरे देश की धरती सोना उगले.. आज भी सबसे बेहतरीन देशभक्ति गानों में गिना जाता है। फिल्म में मनोज कुमार का नाम भारत था। फिल्म के गाने की पॉपुलैरिटी देखते हुए मनोज कुमार को मीडिया ने भारत कहना शुरू कर दिया और फिर उन्हें भारत कुमार कहा जाने लगा। मनोज कुमार ने अपने निर्देशन में बनी फिल्म क्रांति (1981) में दिलीप कुमार को डायरेक्ट किया था। चलते-चलते मनोज कुमार एक अच्छे अभिनेता, निर्देशक के साथ ही लेखक, संपादक तो थे ही कैमरे से भी अनेक प्रयोग करते रहे। शोर में कई जगह उन्होंने फ्रीज़ शॉट्स का अदभुत प्रयोग किया है। अपने गीतों में शीशे से लेकर बैकग्राउंड तक के अनेक प्रयोगों की व्यापक चर्चा हुई। अपने सहयोगियों के काम आने के मामले में भी वे बहुत लोकप्रिय रहे। उन्होंने अपने बचपन के मित्र केवल कश्यप का जीवन भर सहयोग किया और बाद में अपने सचिव के रूप में भी उनकी सेवाएं लीं। उस जमाने के अपने सभी निर्माता निर्देशकों की आर्थिक सहायता की।

कल का आदिमानव...

कल का आदिमानव आज सभ्य हो गया,
मगर सभ्यता जाने कहाँ खो गया।
कच्ची पगडंडी को पक्की सड़क तक ले गया,
मगर रास्ता जाने कहाँ खो गया।
बैलगाड़ी से मोटर गाड़ी में गया,
मगर सफर जाने कहाँ खो गया है।
टी वी ब्लैक एण्ड व्हाईट से रंगीन हो गया,
मगर मनोरंजन जाने कहाँ खो गया।
घास का बिछौना मखमली बिस्तर में बदल गया,
मगर आराम जाने कहाँ खो गया।
मिट्टी का कच्चा झोंपड़ा बहुमंजिली इमारत में बदल गया,
मगर मेरा वो घर संसार जाने कहाँ खो गया।
मकान आज सुख सुविधाओं से सज गया,
मगर सुविधाहीन उस खुशी को जाने कहाँ खो गया।
कहते हैं मानव विकसित हो गया,
मगर वो मानवता को जाने कहाँ खो गया।

– तुमुल

With Best Compliments from

Jai Kumar Agarwal
Managing Director
+91-9918700801

Gyan

GYAN DAIRY

jai@agarwal@gyandairy.com

Dream of Healthy India
NOVA®
DAIRY PRODUCTS
Serving since 1991
घी, दूध, दही, छाछ,
पनीर और डेयरी व्हाईटनर
STERLING AGRO INDUSTRIES LTD.
E-mail: sterling@steragro.com, sterling@steragro.biz ★ Website: www.steragro.com
Works : Village - Bhitauna, Soron Road, Kasganj-207123 (UP)
For Distributorship, Please Contact Mr. Adarsh Sharma, Mob.: 9319554050